वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL

दिसंबर 2019
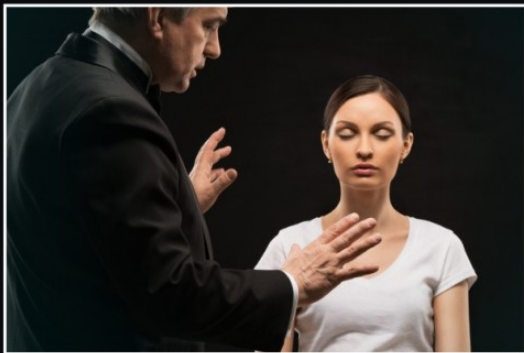
सम्मोहन (16)
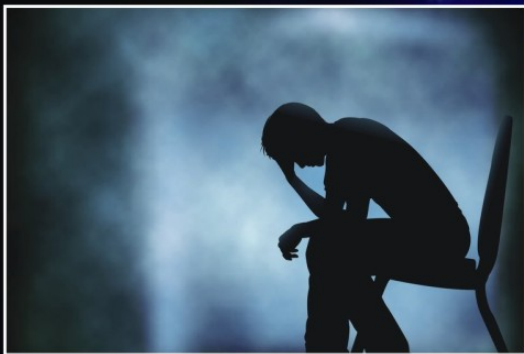
मानसिक थकान (22)

भविष्यवाणी (39)

₹20

धर्म का जूला जो मनुष्य पर भार डाले रखता है वह असल में समाज से आर्थिक जूले का ही अक्स है। ...लेनिन

तय करो किस ओर हो

बल्ली सिंह चीमा

तय करो किस ओर हो तुम, तय करो किस ओर हो ।
आदमी के पक्ष में हो या कि आदमखोर हो ।।

खुद को पसीने में भिगोना ही नहीं है जिन्दगी,
रेंग कर मर-मर कर जीना ही नहीं है जिन्दगी,
कुछ करो कि जिन्दगी की डोर न कमज़ोर हो ।
तय करो किस ओर हो तुम, तय करो किस ओर हो ।।

खोलो आँखें फँस न जाना तुम सुनहरे जाल में,
भेड़िए भी घूमते हैं आदमी की खाल में,
जिन्दगी का गीत हो या मौत का कोई शोर हो ।
तय करो किस ओर हो तुम तय करो किस ओर हो ।।

सूट और लंगोटियों के बीच युद्ध होगा जरूर,
झोपड़ों और कोठियों के बीच युद्ध होगा जरूर,
इससे पहले युद्ध शुरू हो, तय करो किस ओर हो ।
तय करो किस ओर हो तुम, तय करो किस ओर हो ।।

तय करो किस ओर हो तुम तय करो किस ओर हो ।
आदमी के पक्ष में हो या कि आदमखोर हो ।।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क Paytm के माध्यम से मोबाईल नम्बर 9416036203 पर या कोड को स्कैन करके भी भेजा जा सकता है। शुल्क भेजने के बाद इसी मोबाइल नम्बर पर अपना पता SMS या WhatsApp करें।

Reg.No.HARHIN/2014/60580

संपादक : बलवन्त सिंह - 94163-24802

संपादक सहयोग :-

गुरमीत अम्बाला - 94160-36203

बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028

हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

द्विवार्षिक : 200/- रू.

विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला

Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पताः

बलवन्त सिंह (प्रा.)

म.नं. 1062, आदर्श नगर,

नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।

जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)

Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

http://tarksheelblog.wordpress.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:

www.tarksheel.org

Tarksheel on Whatsapp : 9416036203

Tarksheel Mobile App :

Readwhere.com

Tarksheel on Twitter:

@gurmeeteditor

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969

Email: baldevmehrok@gmail.com

संकेतिका

मीटिंग की सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक मीटिंग, दिनांक **19 जनवरी, 2020** को दिन रविवार, य में प्रातः 10.00 से 3.00 बजे तक सफीदों में होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

सम्पर्क सूत्रः

ईश्वर सफीदोंः 94161 95075

चन्द्र सैणी : 94160 79505

जसबीर मानव : 9896054735

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

पर्यावरण संरक्षण पर गंभीर चिन्तन

एकाएक पर्यावरण संरक्षण को लेकर विश्व भर की पूंजीवादी शक्तियों को ताड़ना करने वाला ग्रेटा थनबेर्ग का वक्तव्य पूरे विश्व में गूंज उठा। उनकी चिंताएं मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति के कारण बढ़ते जा रहे पर्यावरण असंतुलन को लेकर इतनी मुखर थीं कि उनकी बातों ने विश्व के तथा पर्यावरण पर दिखावा करने वाले तथाकथित नेताओं की बोलती बंद कर दी।

आज सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण से उत्पन्न गंभीर संकट से गुजर रहा है और बढ़ते जा रहे कार्बन का स्तर आने वाली जनसंख्या के लिए एक संकट खड़ा होने की चेतावनी दे रहा है। दिखावे के लिए पूंजीवादी शक्तियों के अग्रणी इस विषय पर घड़ियाली आंसू बहाते हैं परंतु वास्तव में धरातल पर परिणाम नगण्य दिखाई दे रहे हैं।

विश्व में बहुत से देशों जैसे आस्ट्रेलिया, कनाडा में यह उनके चुनावी माहौल में एक बड़ा मुद्दा बना और वहां पर्यावरण संरक्षण को लेकर विपक्ष में तथा जन साधारण में बेहद आवाज उठी और उनके चुनावों को प्रभावित किया।

भारत इस मामले में अनूठा है। यहां सभी राजनीतिक पार्टियां गैर-जरूरी मुद्दों पर जनता से उलझती रहीं हैं, मगर पर्यावरण संरक्षण को लेकर कोई भी चुनावी पार्टी कभी मुखर नहीं रही। दिखावे के लिए बहुत कुछ किया जाता है, परंतु धरातल पर उसके परिणाम बहुत कम दिखते हैं। भारत के त्यौहारों पर जिस तरह शोर व वायु प्रदूषण में वृद्धि होती है, वह पर्यावरण संरक्षण का खुल्लम-खुल्ला उल्लंघन होता है, लेकिन धर्म की आड़ में सब कुछ जायज़ मान लिया जाता है। कोई इस विषय पर अगर टिप्पणी कर भी दे तो धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाला माना जाता है, या फिर कह दिया जाता है कि अमुक धर्म के लोग भी तो प्रदूषण फैलाते हैं।

जैसा विश्व के अन्य देशों में देखने को मिल रहा है, लोग चुनावी माहौल में पर्यावरण संरक्षण को एक मुद्दा बनाते हैं एवं अपनी राय व्यक्त करने लगते हैं, उसी तरह भारत में भी इस संबंध में जागरूकता की बेहद जरूरत है।

आइए, इस दिशा में अपना अमूल्य योगदान देकर आने वाली नस्लों के लिए सुरक्षित वातावरण बनाने की तरफ बढ़ें।

मानवाधिकार दिवस पर विशेष

हिरासत और जेलों में घुटता भारतीय जीवन

-तुहिन देब
मो. 94255-60952, 93405-37659

मानवाधिकार का परिप्रेक्ष्य

मानवाधिकार प्रत्येक मानव का जन्मसिद्ध अधिकार है। यह अनिवार्य रूप से एक राजनीतिक अवधारणा है जिसका बीजारोपण फ्रांसीसी क्रांति के दौरान हुआ था। फ्रांसीसी क्रांति से स्वतंत्रता, समता, भ्रातृत्व का नारा बुलंद हुआ। कालान्तर में यूरोप में हुए नवजागरण से नागरिक स्वतंत्रता व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की परिभाषाएं गढ़ी गईं। राजतंत्र, सैन्यतंत्र, कुलीनतंत्र, निरंकुषता व स्वैच्छाचारिता के खिलाफ जनतंत्र की धारणा बलवती होती गई। उपनिवेशवाद को प्रसारित करने के चलते दो विश्वयुद्ध इस धरती पर हुए। दोनों विश्वयुद्ध से मानवता खतरे में पड़ी तथा इसका सर्वाधिक खामियाजा आमजन, महिलाएं एवं बच्चों को भरना पड़ा। 1945 में ुसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद उपनिवेशवाद से मुक्ति, साम्राज्यवाद से आजादी, शांति, समानता व समाजवाद के पक्ष में दुनिया की अधिकांश जनता इकट्ठे होने लगी। ऐसी ही परिस्थिति में मानव के मौलिक अधिकारों के संरक्षण के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ (युएनओ) की अगुवाई में 10 दिसंबर 1948 को अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार घोषणापत्र अस्तित्व में आया।

भारतीय स्थितिः

अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार घोषणापत्र को जारी हुए 70 वर्ष हो चुके हैं। मानवाधिकारों के प्रति बढ़ती जागृति के बावजूद तस्वीर का बदरंग पहलू है मानवाधिकारों का घोर उल्लंघन। विशेषकर पुलिस व सशस्त्र बलों द्वारा मानवाधिकारों का उल्लंघन किया जाना एक चिंतनीय पहलू है। मानवाधिकारों के लिए काम करने वाली संस्था "एशियन सेंटर फॉर ह्यूमन राइट्स (एसएचआर)" ने दावा किया है कि देश में पिछले आठ सालों में 1184 लोगों को पुलिस हिरासत में यातनाएं देने से मौत हो गई। इनमें महाराष्ट्र में सर्वाधिक 192 मामले उजागर हुए हैं। गृह मंत्रालय को राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग द्वारा भेजे गए आंकड़ों में भी इन बातों का खुलासा हुआ है। आयोग के अनुसार, एक गंभीर तथ्य यह भी कि हिरासती मौतों को लेकर मानवाधिकार आयोग द्वारा जारी किए गए निर्देशों का पुलिस और राज्य सरकारों ने समुचित पालन नहीं किया है। पिछले दो सालों में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और गुजरात समेत अन्य राज्यों में इस तरह की मौत के 306 मामले आए हैं। वर्ष 2006-07 में देश भर में 118 हिरासती मौतें हुई थी जबकि 2007-08 में यह संख्या बढ़कर 188 पर पहुंच गई। वर्ष 2008 में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की जारी रिपोर्ट के अनुसार मानवाधिकार हनन को रोकने के मामले में छत्तीसगढ़ 13 राज्यों से पीछे है। रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2007 में राज्य में मानवाधिकार उल्लंघन के 491 मामले दर्ज किए गए थे। मानवाधिकार उल्लंघन के मामले में पूरे देश में उत्तर प्रदेश अव्वल है। अभी देश में उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार 2,54,857 कुल विचारधीन कैदियों की संख्या है। जिनमें से 53,638 विचारधीन कैदी, मुस्लिम समुदाय से हैं। उत्तर प्रदेश में 14,207 मुस्लिम विचारधीन कैदी हैं।

जो समाज में कमजोर है वह इसांफ पाने में भी कमजोरः

लोकसभा और राज्य सभा में सदस्यों द्वारा पूछे गए प्रश्न के लिखित जवाब में केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री किरेन रिजिजु ने बताया कि 2013 में, आंकड़ों के मुताबिक देश के 35 राज्यों और केन्द्र

शासित प्रदेशों में 12 हजार 889 कैदी ऐसे हैं जो तीन साल से भी ज्यादा समय से विचाराधीन बंदी के रूप में बंद हैं। इसके अलावा चौकाने वाले आंकड़ें ये हैं कि भारत की जेलों में बंद लोगों मे ंमुस्लिम, दलित और आदिवासी कैदियों की आबादी 53 फीसदी है। जबकि देश की आबादी में उनका अनुपात 39 फीसदी है। एक प्रजातांत्रिक देश में अपनी आबादी से सवा गुना से अधिक कैदी अगर इन तबकों से हैं तथा अधिकांश कैदी आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के हैं तो यह बात कई सवाल खड़े करती है। वर्ष 2009 में सुप्रीम कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण निर्देश में कहा था कि किसी भी व्यक्ति को सबूत के बगैर एहतियात के तौर पर हिरासत में रखना गलत है और ऐसा करना संविधान द्वारा प्रदत्त व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार का हनन होगा। 2010 में अपने एक फैसले में सर्वोच्च न्यायालय का कहना था कि 'आपराधिक कृत्य करने वाले पुलिसकर्मियों को दूसरे लोगों के मुकाबले और भी कड़ी सजा दी जानी चाहिए, क्योंकि उनका कर्त्तव्य लोगों की सुरक्षा करना है न कि खुद ही कानून तोड़ना।' यह फैसला उस मामले में आया था जिसमें हिरासत के दौरान एक व्यक्ति का जननांग काटने के दोषी एक कांस्टेबल को अदालत ने पांच साल कैद की सजा सुनाई थी। पुलिस की मानसिकता की निंदा करते हुए अदालत ने कहा था कि इस लोकतांत्रिक देश के कानून में थर्ड डिग्री जैसे गैरकानूनी तरीकों के इस्तेमाल की कोई जगह नहीं है। संयुक्त राष्ट्रसंघ में लोगों या कैदियों को यातनाएं दिए जाने के विरोध में बहुत से प्रस्ताव और कानून पारित होने के बावजूद आज भी दुनिया भर में विशेषकर भारत में यातना देने के क्रूर से क्रूर तरीकों का धड़ल्ले से इस्तेमाल हो रहा है। जस्टिस वर्मा आयोग तथा तमाम महिला व जन संगठनों की आपत्तियों को दरकिनार कर समूचे उत्तर पूर्व भारत तथा जम्मू कश्मीर में सशस्त्र बल विशेष अधिकार कानून (आफस्पा) लागू है। मणिपुर में लौह मानवी इरोम चारू शर्मिला, 15 वर्षों से आफस्पा के खिलाफ तथा मानव अधिकारों की बहाली के लिए संघर्षरत थीं। इस मामले में अमरीका और भारत दोनों देशों के हुक्मरानों में बहुत समानता है। अमरीका और भारत दोनों देशों की सरकारों ने संयुक्त राष्ट्र के यातना विरोधी संधि पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं। अमरीका के कब्जे वाली इराक की अबू गरबे जेल हो या फिर ग्वांतानामो बे जे जेल, दुनिया भर की ऐसी तमाम जगह कैदियों को प्रताड़ित किए जाने के लिए कुख्यात रही हैं। जहां अमरीका में विरोधी मत और आम जनता की आवाज को कुचलने के लिए पैट्रियट एक्ट का सहारा लिया जाता है वहीं भारत में टाडा, पोटा, यूए पीए, छ.ग. विशेष जन सुरक्षा कानून और आफस्पा जैसे काले कानूनों का इस्तेमाल होता है।

ब्रिटिश पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता मेरी टायलर ने 'भारतीय जेलों में 5 साल' किताब में भारतीय जेलों में कैदियों की दर्दनाक स्थिति का बखूबी उल्लेख किया है। भारत में नक्सलबाड़ी सशस्त्र विद्रोह जब 1971 से 1975 के बीच उफान पर था उस समय पूरे देश में 50000 से अधिक युवा अमानवीय अवस्था में जेल में दिन बिता रहे थे। मेरी टायलर जो खुद उस दौर में 5 वर्ष जेल में कैद थीं। देश में वर्ष 2005 में एक हजार तीन सौ सत्तासी कैदियों की मौत हुई भी जबकि 2006 में यह आंकड़ा बढ़कर एक हजार चार सौ चौबीस हो गया। देश में पुलिस या जेल अधिकारियों द्वारा उत्पीड़न और आम भाषा में कहें तो टॉर्चर का सिलसिला रूकने का नाम नहीं ले रहा। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के आंकड़े बता रहे हैं कि पिछले तीन साल में ही पुलिस हिरासत मे ं417 और न्यायिक हिरासत में मौत, व्यक्ति के गायब होने या महिला से बलात्कार होने की दशा में न्यायिक जांच की जाए, लेकिन हिरासत में उत्पीड़न के मामलों पर शायद ही इसका कोई असर पड़ा हो। जेलों में हत्या, आत्महत्या और अस्वाभाविक मौत के सबसे अधिक मामले हिन्दी भाषी राज्यों बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ व राजस्थान आदि में दर्ज किए गए हैं। इनमें अनेक महिला कैदी भी शामिल हैं। यह कड़वी हकीकत है

कि आज भी जेलों में कैदी भेड़ बकरियों की तरह बंद हैं। देश की विभिन्न जेलों में वर्तमान में दो लाख से अधिक विचाराधीन कैदी हैं। एक-एक बैरक में औसतन पचास से, अस्सी कैदी रखे गए हैं। जगह की कमी के कारण वे सो नहीं पाते हैं तथा एक मानव के लिए आवश्यक मौलिक व न्यूनतम सुविधाओं से वे वंचित हैं। विडंबना है कि देश के सबसे सुरक्षित और सुविधायुक्त तिहाड़ जेल में भी निर्धारित क्षमता से अधिक कैदी रखे गए हैं। पिछले साढ़े चार वर्षों के दौरान सरकार ने नवउदारवादी नीतियों को और तेज़ किया है। संघ परिवार सरकार/राजसत्ता की मदद से सांप्रदायिकरण की मुहिम को ज़ोरशोर से चला रही है। हिंदुत्व के झंडे तले ब्राह्मणवादी/मनुवादी आक्रमण तेज़ किया जा रहा है। एक तरफ तो दलित, आदिवासी, महिलाओं समेत तमाम उत्पीड़ित तबकों तथा जम्मू-कश्मीर और उत्तर-पूर्व की उत्पीड़ित जनता के खिलाफ तो दूसरी ओर धार्मिक अल्पसंख्यक, विशेषकर मुसलमानों के खिलाफ हमलों की बाढ़ आ गई है। ये ताक़तें लोगों के खानपान, कपड़े (ड्रेस कोड) आदि पर अपनी इच्छा थोप रही हैं, विभाजनकारी ताक़तों को बढ़ावा मिल रहा है, समाज का अपराधीकरण हो चुका है। शिक्षा, इतिहास तथा तमाम सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रों का भगवाकरण किया जा रहा है। संविधान के सकारात्मक पहलुओं को सुनियोजित रूप से ध्वस्त किया जा रहा है। जनवादी अधिकारों को संकुचित कर दिया गया है। आतंकवाद, माओवाद के खात्मे के नाम पर राजकीय आतंक को बढ़ावा दिया जा रहा है। पुलिस, विशेष सशस्त्र पुलिस, अर्ध-सैनिक बल, फ़ौज तथा गुप्तचर विभाग जैसे दमनकारी ताक़तों के लिए भारी मात्रा में फण्ड तथा ताक़त मुहैया करवाया गया है। प्रगतिशील जनवादी आवाज़ को दमन के ज़रिये हत्या कर दबाया जा रहा है। यहां तक कि कला, साहित्य, फिल्मों आदि पर आर. एस. एस. के मापदंड से इतर (भिन्न) होने के नाम पर बर्बर हमले किए जा रहे हैं। विशेषकर तर्कशील विचारक जैसे गौरी लंकेश, डॉ एम. एम. कलबुर्गी, डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर, गोविन्द पंसारे की सनातन संस्था द्वारा हत्या तथा विश्वविद्यालयों में व्याप्त जातिगत-ब्राह्मणवादी भेदभाव तथा फासीवादी मनोवृत्ति के खिलाफ आवाज़ उठाने वाले रोहित वेमुला की संस्थागत हत्या उल्लेखनीय है। हालिया घटनाक्रम में पुणे मे भीमा कोरेगांव की घटना के बाद संघ के षडयंत्रकारियों को गिरफ्तार ना करके, मानवाधिकार के क्षेत्र में सक्रिय बुद्धिजीवीगण-सुधा भारद्वाज, गौतम नवलखा, वरवराराव, स्टेन स्वामी, अरुण परेरा, वर्नर गोंसाल्वेज़ व अन्य वकीलों, पत्रकारों को शहरी नक्सली का आरोप लगाकर गिरफ्तार किया गया और राजकीय आतंक का शिकार बनाया गया। समग्रता में सभी क्षेत्रों में बाजारीकरण तथा कॉर्पोरेट प्रभुत्व को बढ़ावा देने के लिए तथा इस पर पर्दा डालने के लिए ही अंधाधुंध गिरफ्तारियां, हत्याएं, भीड़ द्वारा हत्या (Moblynching), लव जिहाद, अंध राष्ट्रवाद, जातिगत वैमनस्य, राममंदिर निर्माण के नाम पर सांप्रदायिक उन्माद पैदा कर फासीवादी माहौल बनाया गया है।

राज्य के जेलों में मानवाधिकार की स्थिति बदतर

शायद यह बात अजीब लगे, मगर सच है कि छत्तीसगढ़ की जेलों में सजायाफ्ता कैदियों में से लगभग 90 फीसदी अनुसूचित जाति-जनजाति और अन्य पिछड़े वर्ग के हैं। विचाराधीन बंदियों में यह प्रतिशत 87 है। राज्य की जेलों में 23 सौ विचाराधीन कैदी एक साल से ज्यादा समय से बंद हैं। सजायाफ्ता कैदियों में 29 फीसदी और विचाराधीन कैदियों में 34 फीसदी निरक्षर हैं। वहीं विभिन्न जेलों में 141 मानसिक रोग से पीड़ित कैदी हैं। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो द्वारा देश की जेलों के संबंध में 2011 तक के जो आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं उसके अनुसार प्रदेश की जेलों में क्षमता से लगभग ढाई गुना अधिक कैदी हैं। इस मामले में देश में छत्तीसगढ़ तीसरे स्थान पर है। पहले स्थान पर लक्ष्यद्वीप और दूसरे स्थान पर अंडमान निकोबार है।

छत्तीसगढ़ में अपराध से जुड़े समाजशास्त्र

की परिभाषा बदल रही है। अपराध विज्ञान के दृष्टिकोण से एनसीआरबी का आंकड़ा हैरत में डालने वाला है। राज्य में केंद्रीय और जिला जेलों की कुल संख्या 27 है। इनमें बंद सजायफ्ता कैदियों की कुल संख्या 5630 है, जिनमें से अनूसूचित जाति के 1747, पिछड़े वर्ग के 1950 और अन्य 590 हैं। कुल 8275 विचाराधीन कैदियों में अनुसूचित जाति के 1683, जनजाति के 2953, पिछड़े वर्ग के 2535 और अन्य 1104 हैं।

एक और चीज जो काबिले गौर है वह यह कि जेल में बंद ज्यादातर अपराधी निरक्षर और कम पढ़े लिखे हैं। विचाराधीन कैदियों में 34.20 फीसदी पूरी तरह निरक्षर हैं, जबकि सजायाफ्ता कैदियों में से 29 फीसदी निरक्षर हैं, वहीं 51 फीसदी ने हाईस्कूल तक शिक्षा ग्रहण की है। आंकड़ों के अनुसार छत्तीसगढ़ की जेलों मे विचाराधीन और सजायाफ्ता कैदियों का प्रतिशत हर वर्ष बढ़ रहा है, जबकि बिहार, केरल और मेघालय जैसे राज्यों में इसका प्रतिशत कम हुआ है।

क्षमता से लगभग ढ़ाई गुना कैदीः

राज्य की जेलों मे क्षमता में बहुत अधिक कैदी हैं। जेलों की कुल क्षमता 5430 कैदियों की है, लेकिन 13918 कैदी हैं। यानी क्षमता से लगभग ढ़ाई गुना कैदी जेलों में हैं। इनमें सजायाफ्ता कैदी 40.5 और विचाराधीन कैदी 59.5 फीसदी हैं।

मानसिक रूप से बीमारः

आंकड़े के अनुसार यहां की विभिन्न जेलों में 141 कैदी ऐसे हैं, जो मानसिक रूप से बीमार हैं। पढ़े-लिखों की बात करें तो राज्य में सजा पाने वालों में हाईस्कूल पास 804, स्नातकोत्तर 97 और इंजीनियरिंग डिग्री/डिप्लोमा वाले 30 थे। वहीं विचाराधीन कैदियों में 1153 हाईस्कूल पास, 331 स्नातक, 158 स्नातकोत्तर 101 इंजीनियरिंग डिग्री/डिप्लोमा वाले थे।

पुलिस विभाग के आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2002 में करीब 30000 वर्ष 2005 में 44000 तो वर्ष 2014-15 में अपराधों का आंकड़ा 60000 को पार कर गया। इसमें बड़े पैमाने पर महिलाओं के खिलाफ अपराध हैं। छत्तीसगढ़ में महिलाओं के लिए अलग जेल नहीं है। राज्य में दोष सिद्ध महिला कैदी 383 है। (NCRB 2014).

आदिवासी बहुल राज्य में राजू कारयाम (ताकिलोड़, जिला-नारायणपुर) तथा दो दिनाडा तारेम, नारायणपुर) जैसे सैकड़ों आदिवासी, विभिन्न जेलों में हैं, जिन पर तथाकथित माओवादी वारदातों में शामिल रहने के आरोप लगे हैं। इनमें से अधिकांश लोगों के पास कानूनी लड़ाई लड़ने के लिए पैसे नहीं है और न ही अपनी बेगुनाही साबित करने के लिए पर्याप्त अवसर व समर्थन है। ये आदिवासी पूरी तरह अदालतों और राज्य सरकार के रहमो करम पर हैं कि इन्हें दया आ जाए और ये किसी न किसी तरह छुट जाए। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि ये कैदी गरीब हैं इसीलिए सलाखों के पीछे हैं।

कहानी फांसी कीः

राज्य में वर्ष 2011 के अंत तक विभिन्न जेलों में बंद फांसी की सजा प्राप्त मुजरिमों की कुल संख्या पांच थी। उम्र कैद की सजा काटने वालों कुल संख्या 3960 थी। उम्र कैद की सजा काट रहे लोगों में से 3774 पुरुष और 186 महिलाएं थीं। चौंकाने वाला तथ्य यह है कि सजायाफ्ता लोगों में 70.3 फीसदी उम्र कैद की सजा काट रहे हैं। जबकि अन्य प्रदेशों में यह प्रतिशत कम है।

बच्चों के साथ 36 महिलाएं सजा काट रहीं

छत्तीसगढ़ की जेलों में सजायाफ्ता 33 महिलाएं अपने 36 बच्चों के साथ सजा काट रही हैं। वहीं विचाराधीन 49 महिला कैदियों के 50 बच्चे जेलों में पल-बढ़ रहे हैं।

राज्य में मानवाधिकार कार्यकर्ता डॉ. विनायक सेन को 2007 में देशद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। उन्हें 3 वर्ष बाद जमानत देते समय सर्वोच्च न्यायलय ने कहा था कि माओवादी या नक्सलवादी साहित्य रखना देशद्रोह नहीं है। हालांकि मानवाधिकार उल्लंघन के मामले में भाजपा और कांग्रेस में ज्यादा फर्क नहीं है क्योंकि संगठनों पर

प्रतिबंध लगाने और दमन करने के मामले में दोनों दल एक समान है। इसके अलावा बहुचर्चित मामला आदिवासी शिक्षिका सोनी सोरी का भी है जिस पर माओवादियों को मदद करने का आरोप लगा है। इसी एस्सार घूस कांड में ठेकेदार बी के लाला तथा एस्सार के उच्च्य अधिकारी वर्मा की जमानत बहुत पहले हो गई थी लेकिन पुलिस अभिरक्षा में गंभीर शारीरिक यातना की शिकार सोनी सोरी और उनके रिश्तेदार लिंगाराम कोड़ोपी को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जमानत दी गई। चितंनीय बात यह है कि राजसत्ता ने सोनी सोरी के पति की मृत्यु के बाद भी उन्हें पैरोल पर रिहा करने के लिए प्रबल विरोध किया। छत्तीसगढ़ के बस्तर में आदिवासी महिलाएं, सैन्य बलों के हाथों शारीरिक और यौन उत्पीड़न का शिकार होती हैं। बड़े पैमाने पर आदिवासी महिलाओं को माओवादी कहकर गिरफ्तार किया गया है। मानवाधिकारों के लिए, आवाज़ उठाने वाले जगदलपुर लिगल एड ग्रुप तथा अन्य मानवाधिकार कार्यकर्ताओं को प्रताड़ित किया जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा प्रोत्साहित निर्मम पुलिस अधिकारियों द्वारा बस्तर व सरगुजा में झूठे मुठभेड़, हिरासत में हत्या व बलात्कार लगातार जारी है। बलरामपुर जिले के चांदो थाना क्षेत्र में आदिवासी बाला मीना खलको की पुलिस द्वारा सामूहिक बलात्कार कर झूठे मुठभेड़ में हत्या की घटना बेहद शर्मनाक है। बीजापुर जिले के पेद्दगेलूर, चेन्नागेलूर व अन्य गाँवों में सी.आर.पी.एफ. द्वारा महिलाओं से अनाचार, लूट व तोड़फोड़ की गई। नारायणपुर, बीजापुर, कोंटा, दंतेवाड़ा में सुरक्षा बलों ने झूठे मुठभेड़ में हत्या के साथ-साथ महिलाओं, बुजुर्गों व बच्चों से रोंगटे खड़े करने वाला बर्बर व्यवहार किया।

15 अगस्त 1947 के बाद सात दशक से भी अधिक समय बीतने के बावजूद आज भी भारतीय जेलें सुधार गृह नहीं बन सकीं, अलबत्ता उन्होंने यातना गृह की शक्ल जरूर अपना लिया है। जेलों के अंदरूनी हालात और कैदियों के जीवन-स्तर में सुधार की दिशा में सरकारी प्रयास विफल साबित हुए हैं और यह एक स्याह हकीकत है कि आज भी जेलों यानी काल कोठरी का अंधेरा दूर नहीं हुआ है।

क्या करें,

समाज में मानवाधिकारों के संरक्षण के लिए आवश्यक है कि केन्द्र व राज्य सरकार इसके लिए राजनैतिक इच्छा शक्ति जताएं व मानवाधिकारों के उल्लंघन पर कड़ाई से रोक लगाएं। लेकिन नवउदारवादी और बाजार सभ्यता के इस युग में ऐसा होना संभव नहीं लगता। बहुराष्ट्रीय कंपनियों और बड़े कॉर्पोरेट घरानों की पूंजी की चमक से चकाचौंध शासक वर्ग, हर नए दिन, नए जोश और ऊर्जा से भरकर जल-जंगल-जमीन, तमाम भौतिक व प्राकृतिक संसाधन पर कॉर्पोरेट जगत की लूट को मुकम्मल करने के लिए मजदूरों, किसानों, आदिवासियों, दलितों, अल्पसंख्यकों और तमाम गरीब व उत्पीड़ित वर्गों पर सीधे-सीधे टूट पड़ रहा है। बड़े मुश्किल से हासिल किए गए सभी अधिकारों को पुनः प्राप्त करना तथा इन सब की रक्षा व संवर्धन के लिए संघर्ष करना सभी संघर्षशील प्रगतिशील तथा जनवादी ताक़तों का तात्कालिक कर्तव्य है। ऐसी स्थिति में प्रगतिशील ताकतों और जागृत जनता के जबरदस्त मेलबंधन में ही आशा की किरण दिखती है।

(लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं)

मैं इसलिए नहीं लिख रहा कविता
कि मेरे हाथ काट दिये जाएं
मैं इसलिए लिख रहा हूं
ताकि मेरे हाथ
तुम्हारे हाथों से जुड़कर
उन हाथों को रोकें
जो इन हाथों को
काटना चाहते हैं।

-अच्युतानंद मिश्र

विज्ञान को पूँजीवाद की बेड़ियों से आज़ाद होना ही पड़ेगा

–कविता कृष्णापल्ली

विज्ञान के पैरों में सबसे बड़ी डंडा-बेड़ी पूँजीवादी व्यवस्था होती है। विज्ञान के मुँह में लगाम डालकर उसे मज़बूर किया जाता है कि वह ज्यादा से ज्यादा मुनाफ़ा कमाने में सहायक बने और कच्चे माल की लूट और दुनिया के बाज़ारों के बंटवारे के लिए होने वाले युद्धों और शक्ति-प्रदर्शनों के लिए उन्नत से उन्नत युद्ध-तकनॉलोजी विकसित करे! दुनिया के विभिन्न देशों के अंतरिक्ष कार्यक्रम और संचार-तकनोलोजी के विकास के सारे प्रोजेक्ट भी मूलतः और मुख्यतः पूँजी-संवर्धन और युद्ध तकनॉलोजी के विकास की महापरियोजना के ही विस्तारित अंग होते हैं !

विज्ञान की सारी उपलब्धियाँ वस्तुतः मनुष्यता की उपलब्धियाँ होती हैं । जब इन्हें किसी देश-विशेष के राष्ट्रीय गौरव से जोड़ दिया जाता है तो विज्ञान एक बार फिर पूँजीवाद का हथियार बन जाता है।

पूँजीवादी समाज में विज्ञान की जो भी उपलब्धियाँ जन-समुदाय तक पहुँचती हैं, वे घलुवे की चीज़ होती हैं, मूल प्रक्रिया का बाई-प्रोडक्ट होती हैं ! जो तकनोलोजी युद्ध के लिए या मुनाफ़ा बढाने के लिए मशीनों को उन्नत करने के लिए विकसित होती हैं, उनका इस्तेमाल फिर नागरिकों के लिए भी होता है और नयी उपभोक्ता सामग्रियों का बाज़ार तैयार करके मुनाफ़ा कूटा जाता है ! जो जीवन-रक्षक दवाएँ हम इस्तेमाल करते हैं, उन्हें लागत से पचासों और सैकड़ों गुनी कीमतों पर बाज़ार में उतारा जाता है और उनका आविष्कारक वैज्ञानिक कुछ नहीं कर सकता ! वह दैत्याकार बहुराष्ट्रीय दवा कंपनियों का उजरती बौद्धिक गुलाम मात्र होता है! हर वैज्ञानिक या वैज्ञानिकों की टीम अपने आविष्कारों का पेटेंट विभिन्न प्रतिष्ठानों को बेचने के लिए बाध्य होती हैं। जिन वैज्ञानिकों की जनता और विज्ञान के प्रति थोड़ी भी प्रतिबद्धता होती है, जिनका वास्तव में किसी हद तक साइंटिफिक टेम्पर होता है, वे पूँजीवादी समाज के विज्ञान-प्रतिष्ठानों में तमाम दबावों को झेलते हुए घुट-घुट कर काम करते हैं। चूंकि पूँजीवाद को भी कुछ योग्य लोगों की ज़रूरत होती है, इसलिए वह ऐसे जेनुइन वैज्ञानिकों को एक सीमा तक छूट देने के लिए बाध्य भी होता है । लेकिन विज्ञान के अधिकांश सत्ता-प्रतिष्ठानों में ज़्यादातर ऐसे तिकड़मी नौकरशाह भरे होते हैं जो विज्ञान की दुनिया के पटवारी और क्लर्क होते हैं, या मात्र टेक्नीशियन होते हैं! ज़्यादातर ऐसे लोग सत्ता में बैठे लोगों की जी-हुजूरी करते हैं, गुटबाजी करते हैं, थीसिसों की चोरी करते हैं, मातहतों के शोध-कार्यों का श्रेय लेते हैं, तथा जेनुइन और स्वाभाविक वैज्ञानिकों को इतना सताते हैं कि कभी-कभी अवसाद, पागलपन और आत्महत्या के मुकाम तक पहुँचा देते हैं ! इन दिनों ज़्यादातर ऐसे लोग ही विज्ञान संस्थानों और प्रतिष्ठानों के शीर्ष तक पहुँच पाते हैं ! आप किसी भी सरकारी संस्थान के किसी कनिष्ठ वैज्ञानिक से बात कीजिए, अगर आप उसे विश्वास में ले सकें तो ऐसी सच्चाइयाँ आपको पता चलेंगी कि आँखें फटी रह जायेंगी ! दरअसल इन सभी प्रतिष्ठानों के सत्ता-पोषित वैज्ञानिक नौकरशाह एक माफिया गैंग के समान काम करते हैं ! कई बार इन माफिया गैंगों के आपसी टकराव भी होते हैं जिनमें आम वैज्ञानिक ही खेत रहते हैं।

जब भी कोई वैज्ञानिक राजनेताओं की गणेश-परिक्रमा करता हुआ और गैर-ज़रूरी तौर पर दांत चियार-चियारकर उनकी लल्लो-चप्पो करता हुआ दीखे तो पक्का मानिए, वह एक जेनुइन वैज्ञानिक नहीं, बल्कि एक सांस्थानिक नौकरशाह मात्र है जो सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोगों को खुश करके लगातार ऊँची कुर्सियों पर कूदते रहना चाहता है !

एक ऐसा राजनेता जिसकी साधारण सी डिग्री भी संदिग्ध हो, जो स्टेज पर खड़ा होकर रोज़ झूठ बोलता हो और अवैज्ञानिक बातें करता हो, जो रामसेतु, पुष्पक विमान, गणेशजी की प्लास्टिक सर्जरी आदि-आदि की भयंकर गपोड़ी किस्म की बातें करते हुए विज्ञान की रोज़ ही ऐसी-तैसी करता रहता है, जो हरदम गणित से लेकर इतिहास और अर्थशास्त्र तक का क्रिया-कर्म करने पर आमादा रहता हो, जिसने सभी वैज्ञानिक प्रतिष्ठानों और वैज्ञानिक शिक्षा के बजट में रिकार्ड कटौती कर डाली हो, जो एक ऐसी प्रतिक्रियावादी विचारधारा के प्रति प्रतिबद्ध है जो प्रकृति से ही विज्ञान-विरोधी है, उस राजनेता से किसी वैज्ञानिक को भला क्या प्रेरणा मिलेगी ? ऐसे नेताओं की चिरौरी करते हुए लोग वैज्ञानिकों के नाम पर कलंक ही कहे जा सकते हैं, ऐसे लोग वैज्ञानिक नहीं, कोई तिकड़मी, सत्तासेवी नौकरशाह की श्रेणी में ही आते हैं।

स्वतंत्र चिंतन

प्रगति

–कर्नल इंगरसोल

(गतांक से आगे..)

5

बिना मजहब के मानव-जाति कैसे सुधार सकती है? मजहब की परीक्षा हो चुकी। यह सभी देशों में, सभी जातियों में और हर समय असफल रहा है।

मजहब ने आदमी को कभी दयालु नहीं बनाया।

मजहब का दास-प्रथा पर क्या प्रभाव पड़ा? मजहब सदैव विज्ञान, खोज और विचार का शत्रु रहा है।

मजहब ने आदमी को कभी स्वतंत्र नहीं बनाया।

इसने कभी आदमी को नैतिक नहीं बनाया, संयमी नहीं बनाया, परिश्रमशील नहीं बनाया, ईमानदार नहीं बनाया।

क्या ईसाई लोग असभ्य लोगों की अपेक्षा अधिक संयमी, अधिक नैतिक तथा अधिक ईमानदार हैं? क्या हम यह नहीं देखते कि असभ्य लोगों में जो दुर्गुण देखे जाते हैं, जो निर्दयतापूर्ण कृत्य देखे जाते हैं, वे सब उनके मिथ्या-विश्वासों का परिणाम हैं? जो लोग प्रकृति की एकरूपता में विश्वास करते हैं, उनके लिए मजहब असंभव है।

क्या हम प्रकृति और भिन्न-भिन्न पदार्थों के गुणों में प्रार्थना द्वारा कोई परिवर्तन ला सकते हैं? क्या हम पूजा द्वारा समुद्र की लहरों को समय से पूर्व बुला सकते हैं अथवा उन्हें देर से आने के लिए मजबूर कर सकते हैं? क्या हम बलिदानों द्वारा हवाओं की दिशा बदल सकते हैं? क्या घुटने टेकने से हम धनी हो जाएंगे? क्या नम्रतापूर्वक प्रार्थना करने से हमारा रोग भाग सकता है? क्या हम भिन्न-भिन्न संस्कारों द्वारा अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं? क्या हमें गुण या सम्मान दान में मिल सकते हैं?

क्या मानसिक संसार की बातें भी उतनी ही ठोस और वैसे ही उत्पन्न नहीं होतीं, जैसे भौतिक संसार की बातें? क्या जिसे हम दिमाग कहते हैं, वह वैसा ही प्राकृतिक नहीं है, जैसा कि जिसे हम शरीर कहते हैं?

मजहब का आधार यह विचार है कि प्रकृति का एक स्वामी है। यह स्वामी प्रार्थनाएं सुनता है। यह स्वामी दण्ड देता है और पुरस्कृत करता है। उसे स्तुति और खुशामद अच्छी लगती है। वह बहादुर और स्वतंत्र प्रकृति वालों से घृणा करता है। क्या आदमी को भगवान से भी कोई सहायता मिलती है।

6 यदि हमारा कोई सिद्धांत है, तो उसका कुछ आधार होना चाहिए। हमारे पास चारों कोनों पर रखने के लिए चार पत्थर होने चाहिएं। हमें अनुमानो, कल्पनाओं और उपमाओं को लेकर भवन नहीं खड़ा करना चाहिए। भवन की नींव होनी चाहिए। यदि हमें निर्माण करना है तो वह निराधार नहीं होना चाहिए।

मेरा एक सिद्धांत है और उसके चारों कोनों पर रखने के लिए मेरे पास चार पत्थर हैं। पहला शिलान्यास है कि पदार्थ-रूप नष्ट नहीं हो सकता, अभाव को प्राप्त नहीं हो सकता।

दूसरा शिलान्यास है कि गति (शक्ति) का विनाश नहीं हो सकता, वह अभाव को प्राप्त नहीं हो सकती।

तीसरा शिलान्यास है कि पदार्थ और गति पृथक-पृथक नहीं रह सकती-बिना गति के पदार्थ नहीं और बिना पदार्थ के गति नहीं।

चौथा शिलान्यास है कि जिसका नाश नहीं वह कभी पैदा भी नहीं हुआ होगा, जो अविनाशी है, वह अनुत्पन्न है।

यदि ये चारों बातें यथार्थ हैं, तो उनका यह परिणाम अवश्य निकलता है कि पदार्थ और गति सदा से हैं और सदा रहेंगे। वे न बढ़ सकते हैं और

न घट सकते हैं। इससे यह भी परिणाम निकलता है कि न कोई चीज कभी उत्पन्न हुई है और न उत्पन्न हो सकती है और न कभी कोई रचयिता हुआ है और न हो सकता है।

इससे यह भी परिणाम निकलता है कि पदार्थ और गति के पीछे न कोई योजना हो सकती थी और न कोई बुद्धि। बिना गति के बुद्धि नहीं हो सकती। बिना पदार्थ के गति नहीं हो सकती। इसलिए पदार्थ से पहले किसी भी तरह किसी बुद्धि की, किसी गति की संभावना हो ही नहीं सकती। इससे यह परिणाम निकलता है कि प्रकृति से विपरीत न कुछ है और न हो सकता है। यदि ये चारों शिलान्यास यथार्थ बातें हैं, तो प्रकृति का कोई स्वामी नहीं। यदि पदार्थ और गति अनादि काल से अनन्त-काल तक हैं, तो यह अनिवार्य परिणाम निकलता है कि कोई परमात्मा नहीं है। न किसी परमात्मा ने विश्व को रचा है और न कोई इस पर शासन करता है। ऐसा कोई परमात्मा नहीं है, जो प्रार्थनाएं सुनता हो। दूसरे शब्दों में इससे यह सिद्ध होता है कि आदमी को भगवान से कभी कोई सहायता नहीं मिली, तमाम प्रार्थनाएं अनन्त आकाश में यों ही विलीन हो गईं। मैं जानकार होने का दावा नहीं करता। मैं वही कहता हूं, जो सोचता हूं।

यदि पदार्थ और गति सदा से चली आई है तो इसका यह मतलब है कि जो संभव था, वह हुआ है, जो संभव है वह हो रहा है। जो संभव होगा, वही होगा। विश्व में कोई भी बात यों ही अचानक नहीं होती। हर घटना जनित होती है।

जो नहीं हुआ है, वह हो ही नहीं सकता था। वर्तमान तमाम भूत का अवश्यंभावी परिणाम है और भविष्य का अवश्यभावी कारण।

इस अनन्त श्रृंखला में न कोई टूटी कड़ी है और न हो ही सकती है। हर तारे का स्वरूप और गति, सभी लोगों की जलवायु, तमाम वनस्पति, तमाम पशु-जीवन, तमाम सूझ-समझ और अन्तरात्मा, तमाम स्वीकृतियां अथवा अस्वीकृतियां, तमाम पाप और पुण्य, तमाम विचार और स्वप्न तथा तमाम आशाएं और भय सभी कुछ अवश्यंभावी है। विश्व में इन असंख्य चीजों में कोई एक भी जैसे घटी है, उससे भिन्न नहीं हो सकती थी।

यदि पदार्थ और गति सदा से हैं, तो हम कह सकते हैं कि आदमी कभी कोई चैतन्य रचयिता नहीं हुआ है, आदमी किसी की विशेष रचना नहीं है। यदि हम कुछ जानते हैं तो यह जानते हैं कि उस दैवी कुम्हार ने, उस ब्रह्मा ने कभी मिट्टी और पानी मिलाकर पुरुषों तथा स्त्रियों की रचना नहीं की और उनमें कभी कोई जान नहीं फूंकी।

हम अब जानते हैं कि हमारे प्रथम माता-पिता किसी दूसरे लोक से नहीं आए थे। हम जानते हैं कि वे इसी संसार के प्राणी थे, यहीं उत्पन्न हुए और उनका जीवन किसी देवता की सांस से नहीं फूंका गया था। यदि हम कुछ जानते हैं, तो यह जानते हैं कि विश्व प्राकृतिक है और पुरुषों तथा स्त्रियों की उत्पत्ति प्राकृतिक ढंग से हुई है। अब हम अपने पूर्वजों को जानते हैं, अपनी वंश-परंपरा को। हमारे पास अपनी वंशावली है।

हमारे पास जंजीर की सभी कड़ियां हैं, छब्बीस कड़ियां, आरंभ से आदमी बनने तक। हमें यह जानकारी इलहामी-किताबों से नहीं मिली है। हमारे पास पौधों तथा पशुओं के जड़ीभूत रूप और जीवित संस्थान।

सरलतम प्राणी से, एक अंधी वेदना से, एक संस्थान से, एक धुंधली इच्छा से, एक केन्द्रस्थित पेशी, उससे तरल पदार्थ से भरी एक खोखली गेंद, उससे दो दीवारों वाली एक कटोरी, उससे एक कीड़ा, उससे कुछ चीजें जो सांस लेना आरंभ करती हैं, उससे एक सुशुम्राकाण्ड युक्त संस्थान, उससे एक ऐसी कड़ी जो अमेरुदण्ड और मेरुदण्ड युक्त में संबंध जोड़ती है, उससे खोपड़ी युक्त को-जिसमें दिमाग के लिए घर है-उससे मछली के से हाथों वाले को, उससे और आगे मछली कैसे अगले और पिछले हाथों वाले को, उससे रेंगने वाले स्तन पोशी, उससे थैली वाले जन्तु, उससे लीमरवंशी, वृक्षों पर रहने वाले, उससे वनमानुष, उसे वन-मानुष से भी और आगे की अवस्था और अंत में आदमी।

हम जानते हैं किन रास्ते पर होकर जीवन यहां तक पहुंचा है। हम प्रगति के पदचिन्हों से परिचित हैं। उनका पता लगा लिया गया है। अंतिम कड़ी जान ली गई है। इसके लिए हम और सभी दूसरों की अपेक्षा सबसे बड़े जीव-शास्त्रज्ञ एरनस्ट

7

हैकल के कृतज्ञ हैं। अब हम विश्वास करते हैं कि विश्व प्राकृतिक है और परा-प्राकृतिक के अस्तित्व से इंकार करते हैं।

8

सुधार

हजारों वर्षों से आदमी संसार का सुधार करने के प्रयत्न में लगे हुए हैं। उन्होंने देवता बनाए, शैतान बनाए, स्वर्ग और नरक बनाए, पवित्र धर्म-ग्रंथ लिखे, चमत्कार दिखाए तथा मंदिर और जेलखाने बनाए। उन्होंने राजाओं और रानियों के सिर पर ताज रखे और उतारे। उन्होंने लोगों को यंत्रणाएं दी और जेलों में डालकर रखा। उन्होंने लोगों की चमड़ी उतारी और उन्हें जिंदा जलाया। उन्होंने उपदेश दिए और प्रार्थनाएं की। उन्होंने लालच दिखाए और धमकियां दी। इस प्रकार असंख्य तरीकों से उन्होंने लोगों को ईमानदार, संयमी, परिश्रमशील और सदाचारी बनाने का प्रयत्न किया। उन्होंने अस्पताल और विश्राम-गृह बनाए, विश्वविद्यालय और स्कूल खोले और ऐसा लगता है कि मानवता को श्रेष्ठ और सुखी बनाने का जितना अधिक से अधिक प्रयत्न वे कर सकते थे, उन्होंने किया। यह सब होने पर भी वे सफल नहीं हुए।

ये सुधारक क्यों असफल रहे? मैं इसका कारण बताता हूं।

अज्ञान, दरिद्रता और दुराचार संसार में वृद्धि पर हैं। गंदी-नालियां बच्चों के प्रसूति-गृह हैं। ऐसे लोग जो अपना पालन-पोषण नहीं कर सकते, वे घरों को, झोपड़ियों को और गंदे निवास स्थानों को बच्चों से भर देते हैं। वे भगवान, भाग्य और दान पर निर्भर रहते हैं। उनमें इतनी बुद्धि नहीं है कि वे परिणाम पर विचार कर सकें अथवा अपनी जिम्मेदारी का अनुभव कर सकें। इसके साथ ही वे बच्चों के लिए अभिशाप हैं। बच्चे का स्वागत नहीं है, क्योंकि वह भारस्वरूप है। ये अवांछित बच्चे ही जेल जाते हैं, और फांसी पर लटकते हैं। कुछ दान-दया के कारण बच निकलते हैं, किंतु अधिकांश तो असफल ही रहते हैं। वे दुराचारी और खून-खराबे से जीविका चलाते हैं और अपनी संतान को अपनी विरासत दे जाते हैं। दुराचार की इस बाढ़ के सामने सुधार की शक्तियां असहाय हैं। जान स्वयं दुराचार का पोष्2ाक बन जाता है।

असफलता प्रकृति का लक्षण मालूम देती है। क्यों? प्रकृति की कहीं कोई योजना नहीं, प्रकृति में कोई विचार-सामर्थ्य नहीं। प्रकृति निरुद्देश पैदा करती है, बिना किसी खास मतलब के पालन करती है और बिना किसी विचार के नष्ट कर डालती है। आदमी में कुछ बुद्धि है। उसे उसका उपयोग करना चाहिए। बुद्धि ही एक ऐसा यंत्र है, जो मानवता को ऊपर उठा सकता है। वास्तविक प्रश्न यह है कि क्या हम जो अज्ञानी हैं, जो दरिद्र हैं, जो दुराचारी हैं, उन्हें संसार में अपने बच्चे पैदा करने से रोक सकते हैं? क्या संसार को सदा अंधी कामेच्छा का शिकार रहना पड़ेगा? क्या संसार कभी इतना सभ्य हो जाएगा कि सभी लोग परिणाम की चिंता करना सीख जाएं?

जिन बच्चों का पालन-पोषण नहीं हो सकता, जो बच्चे भार-स्वरूप हैं, जो अभिशाप हैं, उनके माता-पिता उन्हें जन्म ही क्यों देते हैं? आखिर क्यों? क्योंकि उनमें उतनी समझ नहीं है, जितनी कामेच्छा। बुद्धि की अपेक्षा कामाग्नि अधिक है।

आप इन लोगों को पुस्तिकाओं और व्याख्यानों द्वारा नहीं सुधार सकते। आप इन लोगों में उपदेशों द्वारा परिवर्तन नहीं ला सकते। कामाग्नि सदा से बहरी रही है। सुधार के ये हथियार एकदम बेकार हैं। अपराधी, आवारे, भिखमंगे और जीवन में असफल लोग प्रतिदिन वृद्धि पर हैं। मजहब मुंह ताक रहा है। कानून दण्ड दे सकता है, किंतु न वह अपराधियों का सुधार कर सकता है और न अपराधों को रोक सकता है। दुराचार की लहर जोरों पर है। जिस प्रकार जुगनू रात के अंधकार को दूर नहीं कर सकते, उसी प्रकार बुराइयों के विरुद्ध लड़ी जाने वाली वह लड़ाई भी व्यर्थ है।

एक ही आशा है। अज्ञान, दरिद्रता और दुराचार को संसार-वृद्धि के काम से विरत रहता है। यह नैतिक उपदेशों से नहीं हो सकता। यह दूसरों के सामने उदाहरण उपस्थित करने से भी नहीं हो सकता। यह न धर्म से हो सकता है, न कानून से हो सकता। न पुरोहित कर सकता है और न फांसी पर

लटका देने वाला ही कर सकता है। यह जोर लगाने से नहीं हो सकता-भले ही शारीरिक हो, भले ही नैतिक हो। इसका केवल एक ही रास्ता है। विज्ञान स्त्री को अपना स्वामी बना दे, अपने शरीर का मालिक। एकमात्र विज्ञान से ही मानव मुक्ति की आशा लगा सकता है। विज्ञान स्त्री को इस बात का निर्णायक बना दे कि वह माता बनेगी अथवा नहीं? यही सारी समस्या का हल है। यह स्त्री को मुक्त करता है। तब जो भी बच्चे पैदा होंगे, उनका स्वागत होगा। उनको प्रसन्नतापूर्वक दोनों हाथों से छाती से लगाया जाएगा। वे घरों को प्रकाश और आनंद से भर देंगे। ऐसे मर्द और औरतें, जिनका विश्वास है कि स्वतंत्र आदमियों की अपेक्षा गुलाम अधिक पवित्र तथा सच्चे होते हैं, ज्ञान की अपेक्षा भय को अपना मार्गदर्शक बनाना श्रेयस्कर है, जो दूसरों की आज्ञाओं का पालन करते हैं, वे ही एकमात्र अच्छे हैं, अज्ञान की भूमि में ही सदाचार का फूल खिलाता है, लज्जा के मारे दोनों हाथों से अपना मुंह ढंक लेंगे।

ऐसे स्त्री-पुरुष, जो प्रकाश को शील का शत्रु समझते हैं, जिनकी समझ में पवित्रता अंधकार में रहती है, जिनके विचार के अनुसार अपने-आपको तथा प्रकृति की उन बातों को जानना जिन पर उनका कल्याण निर्भर करता है, खतरनाक है। वे यह देखकर डर जाएंगे कि कामेच्छा को बुद्धि के अधीन किया जा रहा है।

लेकिन मैं उस समय की ओर देख रहा हूं, जब परिणामों का विचार कर स्त्री-पुरुष ज्ञान-जनित सदाचार की भावना के कारण रोग और दुख-दर्द की वृद्धि करने से इंकार कर देंगे और संसार को जीवन में असफल होने वाले बच्चों से भरने से बाज आएंगे। जब वह समय आएगा, तो जेलखानों की दीवारें गिर जाएं, कारीगरों की अंधेरी कोठरियों में प्रकाश पहुंच जाएगा और पृथ्वी से फांसी के तख्ते की छाया का अभिशाप उठ जाएगा। दारिद्रय और अपराधी निस्संतान रहेंगे। अभाव भीख के लिए हाथ पसारता हुआ नहीं दिखाई देगा। सारा संसार समझदार, सदाचारी और स्वतंत्र हो जाएगा।

9

मजहब कभी मानवता का सुधार नहीं कर सकता, क्योंकि मजहब ही तो दासता है। स्वतंत्र होना, भय की चार-दीवार से बाहर आना, सीधे खड़े होना और भविष्य की ओर मुस्कराहट के साथ देखना कहीं अच्छा है।

कभी-कभी अपने को लापरवाह बने रहने देना, संसार की अंधी शंकित और लहरों के साथ बहने देना, सोचना और स्वप्न लेते रहना, जीवन के बंधनों और मर्यादाओं को भूल जाना, लक्ष्य और उद्देश्य को भूल जाना, मानसिक चित्रों के कला-भवन में घूमते रहना, अतीत के थपेड़ों और चुंबनों का नए सिरे से अनुभव करना, उनके चेहरों और आकार-आकार को फिर स्मृति की आंखों से देखना, भविष्य के सुंदर-सुंदर चित्र बनाना, तमाम देवताओं को उनसे लगाई गई आशाओं तथा उनकी धमकियों को भूल जाना, अपनी नसों में जीवन के लहलहाते स्रोत का अनुभव करना और अपने भय-मुक्त हृदय के सैनिक वाद्य तथा ताल-सुर युक्त धड़कनों को सुनना बहुत अच्छा है।

तब एक बारगी ही तमाम उपयोगी काम करने के लिए उठ खड़े होना, विचार और कार्य से अपने आदर्श तक पहुंचने का प्रयत्न करना, अपनी कल्पनाओं को साकार बनाने का प्रयत्न करना, सधी हुई आंखों से लगातार यथार्थ बातों की खोज करने का प्रयत्न करना, भूत को वर्तमान से जोड़ने वाले सूक्ष्म धागों का पता लगाना, ज्ञान में वृद्धि करना, निर्बलों के कंधों से उनका भार ले लेना, दिमाग को विकसित करना, सच्चों का पक्ष ग्रहण करना और अपनी अंतरात्मा के लिए एक महल बनाना। यही सच्चा मजहब है। यही सच्ची पूजा है।

(समाप्त)

राजा बोला रात है
रानी बोली रात है
मंत्री बोला रात है
संतरी बोला रात है
ये सुबह-सुबह की
बात है।

-गोरख पांडे

मनोरोग विशेषज्ञ की कलम से..

प्लासिबो एवं नोसिबो

डॉ. बलवंत सिंह

कुछ दिन पूर्व डा. दर्शन पाल ने व्हट्सएप पर एक वीडियो भेजी जिस में एक 55 वर्षीय व्यक्ति की कथा ब्यान की गई है, जिसे अंधविश्वास के कारण वर्ष 1938 में अमेरिका के टेनेसी प्रांत में एक विचित्र प्रकार का रोग हो गया था। यह रोग एक तांत्रिक के 'श्राप' के कारण हो गया था जो कि उसे मृत्यु की ओर धकेल रहा था। उस व्यक्ति का नाम वेन्ज वेंडर्ज था। जब उसको अस्पताल में लाया गया तो उस का रोग समझ से परे था। कुछ ही महीनों में उसका वजन 35 किलो कम हो गया था। उसके सभी टेस्ट ठीक थे, किसी भी टेस्ट में कोई नुक्सान नहीं मिला। इलाज करने वाले डाक्टर द्वारा उसकी पत्नी से पूछने पर पता चला कि तीन महीने पूव एक वुड्डू तांत्रिक ने उसको 'श्राप' दे दिया था कि वह जल्दी ही मर जाएगा तथा कोई भी उसे बचा नहीं सकेगा। उस दिन से वेन्ज की हालत खराब होना शुरू हो गई। उसे इस प्रकार से लगता था कि जैसे कोई अदृश्य शक्ति उसको मृत्यु की ओर धकेल रही हो। डॉक्टर ने बहुत सोच विचार करने के पश्चात् अगले दिन मरीज के परिवार को अपने पास बुलाया और बताया कि उसने तांत्रिक के साथ बात कर ली है तथा पुलिस की धमकी के कारण तांत्रिक ने सच्चाई जाहिर कर दी। तांत्रिक ने बताया कि उसने वेन्ज वेडर्ज पर छिपकली के अण्डे छिड़क दिये थे तथा एक अण्डा शरीर के अन्दर जाने से उसके अंदर एक छिपकली ने जन्म ले लिया है तथा वह छिपकली ही उसके रोग का कारण है। डॉक्टर ने यह बताने के पश्चात् मरीज को उल्टी करवाने वाला एक इंजेक्शन लगा दिया। कुछ समय के पश्चात् वेंज को उल्टी आ गई तो डाक्टर ने चालाकी के साथ उसमें एक छिपकली रख दी तथा वेंज एवं उसके परिवार को कहा कि यह वही छिपकली है जिसके कारण रोग हो गया था। क्योंकि वह छिपकली अब बाहर निकल गई है, इसलिए वेंज ठीक हो जाएगा तथा वह उस तांत्रिक के 'श्राप' से भी मुक्त हो गया हैं सच में वंज का स्वास्थ्य ठीक होना शुरू हो गया तथा कुछ ही समय में वह बिल्कुल स्वस्थ हो गया।

यहां पर यह बात वर्णन योग्य है कि वैज्ञानिक तौर पर 'श्राप' इत्यादि कुछ नहीं होता, न तो डाक्टर ने तांत्रिक के साथ कोई बातचीत की थी और न ही मरीज के पेट में कोई छिपकली थी। वेंज वेनडर्ज को बीमार करने एवं बाद में तंदरुस्त करनले में उसके अपने दिमाग की ही भूमिका थी। इस केस से पूर्व भी डाक्टर देख चुके थे कि कई व्यक्ति 'श्राप' के कारण मर जाते थे। आओ जानें कि यह मामला क्या है?

श्रापः– पुरातन समय में यह साधारणतः प्रचलित था कि किसकी भी तथाकथित साधु, महात्मा, तांत्रिक अथवा किसी विशेष व्यक्ति द्वारा दिए गए 'श्राप' का प्रभाव अवश्य पड़ता है। मनोवैज्ञानिक तौर पर 'श्राप' के वचनों के अनुसार उसी तरह का प्रभाव व्यक्ति पर पड़ जाता था। यदि मृत्यु का 'श्राप' होता तो व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती थी। परंतु आजकल 'श्राप' में कोई विश्वास नहीं करता। इस कारण इस प्रकार की घटनाएं देखने को नहीं मिलती। परंतु आजकल इस प्रकार का बुरा प्रभाव किसी भी डाक्टर अथवा मीडिया के द्वारा किसी बीमारी के बारे में बुरी राय देने से मरीजों पर हो सकता है। वैज्ञानिकों ने इस बुरे प्रभाव के बारे में खोज की है। डाक्टर वाल्टर कैनेडी ने 1961 में इस घटनाक्रम को एक नाम दिया 'नासिबो इफेक्ट' (Nocebo effect) वास्तव में यह शब्द, प्लासीबो शब्द का विरोधी शब्द है। आओ नोसिबो को समझने से पूर्व समझ लें कि प्लासीबो क्या है? (यह पहले समझना जरूरी है) प्लसिबो (Nocebo) अथवा प्रयोगिक औषध प्लसिबो एक लैटिन शब्द है जिसका अर्थ है 'मैं खुशियां दूंगा' (I will please)।

वर्तमान विज्ञान में प्लासिबो एक ऐसी इलाज की दवाई अथवा इलाज की विधि है जिसमें बीमारी को ठीक करने का गुण मौजूद नहीं होता। इसे

प्रयोगिक अथवा निष्क्रिय औषधि भी कहा जा सकता है। प्रयोगों में रोगी को प्लासिबो एक कारगर दवाई बता कर दी जाती है तथा उसका रोग पर प्रभाव को प्लासिबो इफेक्ट कहा जाता है। प्रायः यह देखा गया है कि प्लासिबो रोगी को बेहतर महसूस करवाती है, विशेष तौर पर दर्द इत्यादि के लक्षण कम हो सकते हैं और रोगी बेहतर महसूस करता है। कई रोगी जो अपने लक्षणों को बढ़ा-चढ़ा कर ब्यान करते हैं तथा बार-बार छोटे मोटे दर्द के लक्षण को भी महसूस करते हें, एक प्लासिबो का टीका जैसे कि पानी अथवा ग्लूकोज़ का साधारण टीका (जिस में कोई दर्द निवारक गुण मौजूद नहीं होते) लगाने से दर्द ठीक हुआ अथवा कम हुआ महसूस करते हैं। कई व्यक्ति नींद की दवाई के स्थान पर प्लासिबो देने से नींद में सुधार हुआ महसूस करते हैं। प्लासिबो संबंधी बहुत से अन्वेषकों ने कार्य किया है तथा इन खोजों के आधार पर यह जाहिर हुआ है कि प्लासिबो सबसे अधिक दर्द संबंधी लक्षणों पर प्रभावशील होती है। प्लासिबो क्यों और कैसे प्रभाव डालते हैं, इस विषय पर भिन्न-भिन्न वैज्ञानिकों की भिन्न-भिन्न राय है। एक धारणा यह है कि हम जब भी किसी चीज के के बारे में जिस प्रकार की राय अथवा विश्वास रखते हैं तो हमें उसी भांति ही महसूस होने लग जाता है। इसका कारण यह है कि हमारे शरीर में प्राकृतिक दर्द निवारक तत्व मौजूद होते हैं। (Endogenous Opioids), जो अनेक तरीकों के साथ सक्रिय किये जा सकते हैं, जैसे कि सकारात्मक सोच के द्वारा, व्यायाम अथवा सुझाव आदि के द्वारा। यही कारण है कि यह विश्वास कि प्लासिबो एक कारगर दवाई है, इसे असरदार महसूस करवाती है। यही कारण है कि रोगी को डाक्टर में विश्वास होने से दवाई अधिक कारगर साबित होती है तथा इसी कारण यह मुहावरा प्रचलित है कि फलां डाक्टर के हाथ यश है अथवा हाथ में शफा है। एक अन्य ज़रिया जिस के द्वारा (प्लासिबो असरदार होती हैवह है शरीर के अंदर मौजूद न्यूरो-ट्रांसमीटर डोपामिन (Neuro-transmitter Dopamine) मस्तिष्क के क्रियात्मक अध्ययन (Functional Neuroimaging Studies) के द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि प्लासिबो डोपामिन के द्वारा दिमाग के आनन्द देने वाले भाग पर असर डालते हैं। यह भी पता चला है कि डोपामिन, दिमाग के एक विशेष भाग (Ventral Striatum) पर तथा लिम्बिक प्रणाली के अन्य भागों पर प्रभाव डालकर शरीर के अंदर मौजूद कुदरती ओपियाड (Endogenous Opioid) के सिस्टम को क्रियाशील करती है। यह वह कुदरती सिस्टम है जो शरीर में होने वाले दर्द को नियंत्रित करता है। प्लासिबो का कुछ असर दिमाग की सोच के कारण (Neocartical-Sympa-thetic- immune axis) के द्वारा भी शरीर पर होता है, जिसके कारण से रोग के लक्षण प्रभावित हो सकते हैं। परंतु यहां पर यह बात बहुत ही स्पष्ट है कि प्लासिबो का शरीर पर असर उस पर विश्वास एवं उम्मीद पर अत्यंत निर्भर करता है। प्लासिबो की असलियत का पता चलने पर वह बेअसर हो जाती है।

अब यह प्रश्न उठता है कि फिर चिकित्सा विज्ञान में प्लासिबो का क्या महत्व है? वास्तव में यह विज्ञानियों के हाथ में एक बहुत ही महत्वपूर्ण साधन है अन्वेषण करे के लिए, जिसमें किसी भी दवाई के शरीर पर प्रभाव का सही आंकलन किया जा सकता है। विज्ञानी हमेशा यह जानना चाहते हैं कि किसी भी दवाई का किसी रोग अथवा शरीर पर क्या वास्तविक प्रभाव पड़ता है। यह वास्तविक प्रभाव के परिणाम किसी भी अन्य कारण से प्रभावित नहीं होने चाहिएं। इन प्रयोगों में यह आमतैर पर देखा गया है कि प्रयोग के परिणााम प्रयोग करने वाले वैज्ञानिक एवं रोगी अथवा अन्य कोई व्यक्ति, जिस पर प्रयोग किया जा रहा है, की मनोस्थिति पर बहुत निर्भर करते हैं। उदाहरण के तौर पर यदि विज्ञानी अथवा अन्वेषक किसी भी प्रयोग में प्रयोग में लाई जाने वाली दवाई के अच्छे परिणामों के बारे में बहुत आशावान है तो परिणाम वास्तविकता से अधिक लाभकारी होने का प्रमाण अथवा संकेत देंगे। इसी भांति जो रोगी अथवा जिस व्यक्ति को प्लासिबो दी जा रही है, उसकी आशाओं के कारण परिणाम प्रभावित होते हैं। अर्थात् यदि विज्ञानी रक्तचाप अथवा ब्लड प्रैशर कम करने की दवाई टेस्ट कर रहे हैं तो परिणाम रोगी अथवा अन्य व्यक्ति, जिस पर वह दवाई टेस्ट की जा रही है, की मनोस्थिति के साथ प्रभावित हो सकते हैं। इस लिए ऐसे टैस्टों के

(................................शेष पृष्ठ 37 पर)

पिछले अंक का शेष......

मन की बीमारियां
सम्मोहन

: डा. नरेन्द्र दाभोलकर,

अनुभूति एवं सम्मोहन

व्यक्ति को ईश्वर की आवाज सुनाई देना, उसके दर्शन होना, जैसी खबरें दुनिया में हर दौर में दर्ज हुई हैं। ईश्वर की अनुभूति करने वाले लोग महान साधु-संतों के रूप में मान्यता प्राप्त थे। स्वाभाविक रूप से उनके अनुभवों को ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण माना जाता है। इसके पीछे वास्तविकता क्या है?

श्रेष्ठ संत और साधु-महात्माओं को जो ईश्वर की अनुभूति होती है, वह एक सम्मोह की अवस्था होती है। ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति, उससे मिलने की आंतरिक व्याकुलता, भजन, पूजन, कीर्तन आदि बातों के परिणामस्वरूप संबंधित लोग सम्मोहन की अवस्था में पहुंचते हैं। वे मानने लगते हैं कि साक्षात् ईश्वर से उनकी भेंट हो गई। ये लोग वैरागी और संन्यासी होते हैं जिस कारण लोग इनके अनुभवों पर विश्वास रखते हैं।

इस प्रक्रिया के पीछे कार्यरत मनोविज्ञान को सम्मोहन के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है । सम्मोहन की गहन निद्रावस्था में पहुंचे व्यक्ति को 'अब तुम्हें तुम्हारे कुलदेवता के दर्शन होंगे'-ऐसा सूचित करने पर पीड़ित उस व्यक्ति को उसका कुलदेवता दिखाई देता है। वह बड़ी लगन से उसका दर्शन करता है।उसी अवस्था में उससे प्रश्न पूछने पर वह अपने अनुभवों का सरस वर्णन भर्ती करता है। उस व्यक्ति को 'तुम गोकुल में घुटनों के बल रेंगनेवाले श्रीकृष्ण हो' सूचित करने पर वह व्यक्ति घुटनों के बल रेंगने लगता है। 'यशोदामाता आ रही है, मक्खन और दही चाटो' कहने पर वह होंठों पर जीभ घुमाने लगता है। इन सभी क्रियाओं से साक्षात्कार और मनोविज्ञान के बीच होने वाले सत्य का स्पष्टीकरण अब सभी को हो जाना चाहिए। कुंडलिनी जागृति, सहजयोग साधना, सूक्ष्म अनुभूतियों के प्रयोग भावों से पर ध्यान-धरणा आदि सम्मोहन-स्थिति के अलग-अलग आविष्कार होते हैं। सफर सम्मोहन के लिए यह अनुकूल वातावरण तैयार किया जाता है। प्रसन्न वातावरण, धीमी रोशनी और संगीत, फोटो अथवा मूर्ति को अपलक निहारना, साधना के तौर पर सूचनपाएं देना, अगर व्यक्ति प्रभावित नहीं होता होता अन्य उपायों से उसे प्रभावित करना आदि बातों से सम्मोहन-तंत्र को धार्मिक छत्रच्छाया के नीचे पनाह दिया जा रहा है।

पुनर्जन्म एवं सम्मोहनः

मनुष्य की स्मृति की बुनियाद पूरी तरह से भौतिक होती है। जिन संवेदनाओं की मुहर दिमाग पर होती है, उन्हें दोबारा याद किया जा सकता है। सम्मोहन की अवस्था में व्यक्ति के पूर्वजीवन को स्मृतियों को ताजा किया जा सकता है। लेकिन किसी दुर्घटना या शल्यक्रिया के कारण स्मृतियों को एकत्र करनेवाला दिमाग का हिस्सा नष्ट हो जाता है। मृत्यु के बाद मृत शरीर को जलाया जाता है अथवा जमीन में दफनाया जाता है, जिसके कारण दिमाग नष्ट हो जाता है। इसलिए तथाकथित अगले जन्म में उन स्मृतियों के संक्रमित होने की गंजाइश नहीं होती। किसी बात का अस्तित्व दर्शाने के लिए पंचेंद्रियों के द्वारा उसकी संवेदनाओं का एहसास बहुत जरूरी होता है।

आधुनिक सम्मोहनशास्त्र में पुनर्जन्म की कल्पना की निर्मित साधारण सूचनावर्तित्व केजरिए की गई मानसिक प्रक्रिया मानी जाती है। इस अवस्था में व्यक्ति सम्मोहक की इच्छाएं पूरी करने के लिए अत्याधिक स्वतंत्रता से और कल्पनाविलास में डूबकर पूर्वजीवन की भूमिकाओं के बारे में बताता है। इस अवस्था को 'क्रिप्टोमेंशिया' कहा जाता है।

व्यक्ति विभिन्न माध्यमों से जानकारी हासिल करता है, और कुछ समय वह उसके स्रोतों को भूल जाता है। सम्मोहन की अवस्था में दी हुई ऐसी जानकारी को अपने आप रहस्मय मान लिया जाता है। परम्परागत सम्मोहकों को जानकारी के इन

वैज्ञानिक एवं नैतिक पक्षों का ज्ञान नहीं होता। ऐसे लोग आधे-अधूरे, पूर्वजन्म, आत्मा जैसी काल्पनिक बातों पर विश्वास रखने वाले अज्ञानी होते हैं। पुजर्नन्म के मामलों गलत पद्धति से उठाते हैं और लोग उन पर विश्वास भी करते हैं। जांच-पड़ताल के समय दो-तीन बातों की ऊपरी तौर पर जांच कर, अपनी बात की सत्यता की घोषणा करते हैं। पुनर्जन्म की जांच में लंबे समय तक साक्षात्कार लेना आवश्यक होता है। ऐसी जांच में व्यक्ति के प्रथम साक्षात्कार से लेकर अंतिम साक्षात्कार तक के फोटो लेना आवश्यक होता है। ऐसी जांच-पड़ताल मानसोपचार विशेषज्ञ से कराना जरूरी होता है।

जिस जीवनक्रम के ऐतिहासिक गवाह मौजूद होते हैं अथवा जिसमें शास्त्रज्ञ का सहयोग मिल सकता है, ऐसे सबल मामलों का अध्ययन करने पर उनकी सत्यता की जांच की जा सकती है। ऐसी जांच में विसंगतियों, गलतियों अथवा मनोरंजक बातों को कभी भी जाहिर नहीं किया जाता।

पूरी दुनिया में चर्चित का ऐसे ही मामलें में अर्नाल्ड ब्लॉकसहैम के पुनर्जन्म का दावा शामिल है। वे अनेक व्यक्तियों को सम्मोहन की अवस्था के जरिए उनकी तथाकथित पूर्वजन्म में लेकर गए। सम्मोहित व्यक्ति की जुबान से उनके पूर्वजन्म के बारे में जानकारी ली गई। सम्मोहन से मुक्त होने के बादउन लोगों को पूर्वजन्म की कोई बात याद नहीं आई। यह सारा दृश्य पूरी दुनिया ने बी.बी.सी. पर देखा। सभी को उस पर विश्वास होने लगा। 'पूर्वजन्म के वैज्ञानिक प्रमाण' के रूप में उसको स्वीकार करने की मांग होने लगी। तब मॉरकेट विश्वविद्यालय के अध्यापक इस संदर्भ के अन्य गवाह डॉ. एडवीन झोलिक को सामने ले आए। उन्होंने अनेक लोगों को सम्मोहित किया। उनके पूर्वजन्म की जानकारी लेकर उन्हें फिर जागृतावस्था में लाया। लोगों ने सम्मोहन की अवस्था में बयान की हुई जानकारी के बारे में अपनी अज्ञानता दर्शाई। फिर उन पर सम्मोहन की क्रिया को दोहराकर, वह जानकारी उन्हें पूर्वजीवन में कैसे मिली, इस पर अनुसंधान किया। सम्मोहन में उन्हें उम्र की अलग-अलग अवस्था में पहुंचाकर तत्कालीन स्मृतियों को जाग्रत् करने का प्रयास किया गया। तब सभी को याद आया कि उन्होंने तथाकथित पूर्वजन्म का वर्णन किस सिनेमा में देखा था अथवा किस किताब में पढ़ा था, या किस चर्चा में सुना था; अर्थात् स्मृतियां और उसमें मिली भावनाओं के गहरे रंग के मिश्रण से पूर्वजन्म का निर्माण हुआ था।

फिनलैंड का ओलू (Oolu) विश्वविद्यालय के मानसशास्त्र विभाग के प्रमुख डॉ. कैपमन ने इस विषय पर अनुसंधान किया और डॉ. झोलिक के निष्कर्ष का समर्थन किया। ब्लॉकसहैम के जो मामले टी.वी. पर चर्चित हुए थे, उन लोगों को प्रयोग लिए बुलाया गया। लेकिन उन्होंने और ब्लॉकसहैम ने आने से इनकार कर दिया।

सम्मोहन के आधार पर किए जाने वाले फाजिल दावों का खंडन करना और सम्मोह की मर्यादा को स्पष्ट करना अंनिस अपना परम कर्तव्य समझती है। जैसे-सम्मोह शक्ति के अद्‌भुत गवाह के रूप में दो कुर्सियों पर दो सम्मोहित व्यक्ति को सुला दिया जाता है। केवल दो कुर्सियों के आधार पर वे अपने शरीर का संतुलन रखते थे। इतना ही नहीं, अपने शरीर पर खड़े एक व्यक्ति का बोझ भी वे सह सकते थे। यह सब कुछ सम्मोहन शक्ति के प्रमाण के रूप में दिखाया जा रहा था। जाग्रतावस्था में केवल स्वयंसूचना एवं इच्छाशक्ति के आधार पर कोई भी यह प्रयोग सफल बना सकता है। सम्मोहन-कला के इर्द-गिर्द का रहस्यात्मक घेरा दूर करना, लोगों को एक मानसिक अवस्था के रूप में उसका परिचय करवाना, उनमें से जिज्ञासारत लोगों के कुतूहल को पूरा करना तथा कुल मिलाकर सम्मोह-प्रक्रिया लोगों को समझना या सिखाना-अंनिस अपने आंदोलन का लक्ष्य मानती है।

व्यक्तित्व विकास एवं सम्मोहनः

व्यक्तित्व विकास दो-तीन दिन में सीखने की बात नहीं है; वह आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। आत्मपरीक्षण करना, अपने दोषों को दूर करना और गुणों का विकास करने का एहसास तीव्र होना-ये बातें केवल स्त्रियों तक सीमित नहीं होतीं कि हम उन्हें नज़रअंदाज करें। जीवन में आनेवाले अनेक अनुभवों से व्यक्तित्व विकसित होता है। व्यक्ति की शारीरिक, सामाजिक एवं मानसिक स्थितियों का प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर होता है।

संपन्न व्यक्तित्व के लिए हम कैसे हैं? अथवा 'मैं कैसा/कैसी हूं?' इस बात का एहसास

होना जरूरी होता हैं स्वयं के गुण-दोष, अच्छी-बुरी आदतें, अपनी संवादकुशलता, मानसिकता गठन, भावनाओं का संतुलन, न्यूनता, वैचारिक स्तर, अपनी क्षमता, अपनी सीमाएं आदि बातों का एहसास होने पर हम स्वयं के दोष कम कर सकते हैं।

आत्मविश्वास के अभाव में मनुष्य में न्यूनता की भावना आ जाती है। उसके कारणों की चर्चा कर शारीरिक, मानसिक, आर्थिक क्षमताएवं पात्रता का अनुमान होने पर व्यक्ति आत्मविश्वास को दोबार निर्मित कर सकता है। लेकिन ऐसे विश्लेषण की बजाय सम्मोहन की अवस्था में 'मेरा आत्मविश्वास बढ़ जाएगा' जैसे स्वयंसूचना लेने से कोई लाभ नहीं होता। वस्तुतः कारणों को ढूंढकर उनका इलाज किया जाए तो सम्मोहन की कोई जरूरत महसूस सनहीं होती है। ऐसे समय सूचनाओं को मजबूत करने में सम्मोहन सहायक होता है।

सम्मोहन प्रशिक्षण वर्ग अथवा शिविरों का आयोजन करने वाले अधिकांश विद्वान व्यक्तित्व विकास के लिए लोगों को प्रगल्भता की कल्पना न देते हुए सम्मोहन के जरिए मोटापा कम करना, हकलाने का दोष दूर करना, निद्रानाश, शराब की लत, न्यूनता की भावना को कम करना आदि बातों की सूचनाएं देते हैं। लेकिन तथ्य यह है कि ऐसे मामलों में व्यक्ति सापेक्ष इलाज जरूरी होता है, न कि ऐसे गोलमाल इलाज की, जो निरर्थक ही नहीं अनैतिक भी हैं।

'सम्मोहन से स्मरणीशक्ति बढ़ाइए' जैसे विज्ञापन पढ़ने को मिलते हैं। वास्तव में मनुष्य की बुद्धि सर्वसामान्य और प्रकृति की देन है। उसमें ग्रहणशक्ति, कल्पनाशक्ति, जिज्ञासा एवं लक्ष्यपूर्ति के प्रयासों का समावेश होता रहता है। एकाध विशेष विचार अथवा बात पर ध्यान केंद्रित करना ही मन की तल्लीनता होती है। अगर ऐसा नहीं होता है तो उसके अन्य कारणों का पता लगाना चाहिए, जैसे-शारीरिक बीमारियां, शोरगुल, घुटन, असुरक्षा की भावना एवं अनजाना डर। इन कारणों को नष्ट करने का प्रयास करना चाहिए। कारणों को सोचे बिना, 'मन की लगन बढ़ेगी' की सूचना देकर उसे सफर बनाने की आशा अवैज्ञानिक है।

सम्मोहन से स्मरण शक्ति में बढ़ोतरी करने का छलिया दावा सम्मोह वर्ग से किया जाता है। हालांकि स्मरणशक्ति को ब़ाने की स्वतंत्र तकनीक है एवं उसके निरंतर प्रयोग से उसका विकास होता है।

ऐसी तकनीक का उपयोग किए बिना स्मरणशक्ति बढ़ाने या अध्ययन की गई चीजों को याद करा देने के दावे धोखाधड़ी हैं। सामान्य लोग बहुत शीघ्र इसके शिकार हो जाते हैं। परीक्षा के समय शरीर को सुस्त करने पर मानसिक तनाव कम हो जाता है और कुछ बातें पूरी तरह से याद आने लगती हैं। लेकिन इससे पहले ऐसी बातों का स्मृतिकेंद्र से जुड़ा होना आवश्यक होता है। सम्मोहन-प्रक्रिया के क्रम में कुछ भी घटित नहीं होता और केवल सम्मोहन से स्मरणशक्ति का विकास नहीं हो सकता।

सम्मोहन का आधुनिक रूपः

अभी तक सम्मोह की मानद उपाधि देने की जरूरत किसी विश्वविद्यालय को महसूस नहीं हुई है। कम-से-कम भारत में तो इसकी आवश्यकयता नहीं; अर्थात् व्यक्ति पर प्रयोग के द्वारा ही इसे सीखने की कोशिश होती है।

सम्मोहन को 'पापी पेट का सवाल' बनाने वाले लोग आज देश में बड़ी तादाद में हैं। अपनी व्यावसायिक सफलता के लिए इस प्रक्रिया में वे आधुनिक मनोविज्ञान और भावनाओं के गहरे रंगों को मिला देते हैं। यह प्रवृत्ति अत्यधिक खतरनाक है। थोडे-बहुत अंतर से यह व्यवस्था इस प्रकार होती हैः

इसके विज्ञापन का नमूना इस प्रकार है-'अंतर्मन की अद्‌भुत शक्ति का मालिक बनिए। आत्मसम्मोह एवं स्वयंसूचना की ताकत असीम है। उसके जरिए अपनी निराश और चिंतित मनःस्थिति को दूर कर सकते हैं। न्यूनता पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। निराशा से आशा की ओर, दुख से सुख की ओर, समस्याओं से विकास की ओर आप जा सकते हैं।'

ये लोग केवल विज्ञापन में व्यावसायिक दृष्टिकोण रखते हैं, ऐसा नहीं है बल्कि इनके भाषण, आलेख एवं किताबों में भी ऐसे ही दावे किए जाते हैं।

मूलतः उपर्युक्त प्रत्येक समस्या के इलाज

के लिए उसके अतीत के कारणों की सहृदयता से विश्लेषण करने वाली चर्चा आवश्यक होती है। ऐसा विश्लेष ऐसा विश्लेषण करना प्रशिक्षणकला का एक हिस्सा होता है। केवल सम्मोहन-प्रक्रिया सीखकर उससे इलाज और मार्गदर्शन करना उचित नहीं। यह दगाबाजी भी जो सकती है। 'व्यसन' विषय पर गौर करें। सम्मोहन के द्वारा शराब पीने की लत छूट जाती है, अनेक बुरी आदतों का यह यह इलाज है'-ऐसा निरूपण, उन आदतों के स्वरूप एवं उनके कारणों से वाकिफ न होने का लक्षण है। आज व्यसन एक मानसिक बीमारी मानी जाती है, और उसका इलाज भी उसी दिशा में होता है। पूरी दुनिया के सामने 'व्यसन एक जटिल समस्या है। अमेरिकी शासन द्वारा करोड़ों डॉलर खर्च कर शुरू किया गया व्यसन विरोधी अभियान आज असफल हो गया है। यह वर्तमान इतिहास है। बेचारे अमेरिकी शासन को सम्मोहन जैसा इतना प्रभावी इलाज क्यों नहीं सूझा? व्यसन के इलाज मानसशास्त्रीय किताबों में मिलन जाते हैं लेकिन उसमें सम्मोहन के इलाज का उल्लेख नहीं मिलता।

सम्मोहन को धंधा बनाने वाले लोग उससे व्यक्तित्व विकास के फायदों की लंबी सूची अपने खाते पर जमा करवाते हैं, जैसे-'व्यक्तित्व विकास के लिए सम्मोहनशास्त्र बहुत प्रभावी माध्यम है। पूरी दुनिया में इसके बहुत से मार्ग बताए जाते हैं लेकिन सबसे प्रभावी और भरोसेमंद मार्ग केवल सम्मोहन है। इसके इलाज से व्यक्तित्व के दोष दूर हो जाते हैं, मन अनंदित हो जाता है, उत्साह बढ़ता है, लोगों से संपर्क बढ़ता है, व्यक्तित्व संपूर्ण और प्रभावी बन जाता है, आदि।

इलाज में बुनियादी बात कौन सी होती हैं? अचूक इलाज! जैसे सिरदर्द का इलाज करने के लिए उसके कारणों पर सोचना चाहिए। सिर में दर्द क्यों होता है? ट्यूमर से? जुकाम से? ब्लडप्रेशर से? चश्मे का नंबर बढ़ने से? या फिर मानसिक तनाव से? अचूक इलाज केवल सम्मोहन-प्रक्रिया सीखने से नहीं होता । उसकी जांच पड़ताल के बिना सम्मोहन का प्रयोग एक गंभीर बात है। उससे अल्प समय के लिए सिरदर्द लागू होती हैं इसका कम हो जाएगा लेकिन उससे कोई खतरा भी पैदा हो सकता है। जैसे -उतने समय में अंदर का ट्यूमर बढ़ सकता है या मरीज जान गवां सकता है। अन्य सभी बीमारियों पर भी विचार-पद्धति लागू होती हैं इसका मतलब है, बीमारी का कोई शारीरिक कारण न होने का विश्वास होने पर ही सम्मोहन का इलाज किया जा सकता है, वरना गलत सूचनाओं के प्रयोग से इलाज सफल नहीं होगा, जैसे-ऑफिस से अधिक काम होने का तनाव, घर में मां-बीवी का झगड़ा, बच्चों के कैरियर की चिंता, समाने रहने वाले गंडों की दहशत, पड़ोस के होटल से निरंतर ध्वनि प्रदूषण-इनमें से निश्चत कारण का पता लगाना जरूरी होता हैं यह काम मानसोपचार विशेषज्ञ एवं मनोवैज्ञानिक शास्त्रज्ञ (क्लिनिकल साकॉलॉजिस्ट) का है। सुस्त हो जाने की सूचना से सम्मोहन की सामन्य प्रक्रिया की जा सकती है इसीलिए स्वयं को सम्मोहन विशेषज्ञ कहना और दूसरों का इलाज करने का दावा करना ढकोसला नहीं तो और क्या है? अपवाद से कोई ठीक होता है तो 'वह इलाज-शास्त्रीय है' ऐसा नहीं कह सकते । इसीलिए उपर्युक्त किसी भी बीमारी के इलाज के लिए मौजूद चिकित्साशास्त्र की किताबों में सम्मोह इलाज पद्धति का समर्थन नहीं किया जा सकता। इलाज के संदर्भ में विश्व में जो अनुसंधान जारी है, उसमें भी सम्मोहन का कोई स्थान नहीं है, होगा भी तो अत्यंत गौण ही। ज्यादा से ज्यादा कह सकते हैं कि पूरक इलाज के तौर पर जिन बातों (आहार, व्यवहार, व्यायाम, पर्याप्त नींद, घूमना) का मरीज को सुझाव दिया जाता है, उसमें सम्मोह एक होता है।

सम्मोहन के इलाज से केवल फायदा ही होता हैं बुरे से अच्छा, निराशा से आशा, ऐसी संपन्नता की यात्रा सहज ही शुरू होती है'-सम्मोहन को धंधा बनाने वाले आधुनिक लोग यह दावा करते हैं और सामान्य मनुष्य को आकर्षित करते हैं। इस ढकोसले को वे समाजहित से जोड़ते हैं। उसके अनुसार, सम्मोहन के माध्यम से मनुष्य सुख और आनंद उसके ही दिमाग में निर्मित होता है। सम्मोहन के उपयोग से प्रत्येक व्यक्ति और उसका समाज-अनंदयात्री बन जाता है।

सवाल यह है कि इन दावों का मतलब क्या है? मनुष्य के आनंद का उसके दिमाग से कंडिशनिंग कर सकते हें? कोई भौतिक सुख न मिलने पर उसे

हीन मानना और उसके बिना भी हम सुखी हैं ऐसा माननेवाले नियतिवादी वृत्ति और सामाजिकता की परवाह न करते हुए सारा समाज ही अनंदयात्री बन सकता है। ऐसा दावा करने वाले सम्मोहन वाले अंनिस के लिए खतरनाक साबित हो रहे हैं। निर्मला माता, महेश योगी, प्रजापिता ब्रह्मकुमारी आदि इससे अलग कुछ नहीं बताते। उसके ध्यान-धारणा के मार्ग भी सम्मोहन-प्रक्रिया के इर्द-गिद घूमते हैं। उनका दावा भी मनुष्य को परम आनंद, शांति एवं सुख का महामार्ग दिखाने वाला है। आज के सामाजिक जीवन में कठोर यथार्थ हर क्षण मनुष्य को उद्ध्वस्त करता है। बेरोजगारी, मंहगाई, जानलेवा होड़, सांप्रदायिकता और भ्रष्टाचार को छाया व्यक्ति और समाज पर मंडरा रही है। इस संदर्भ में कोई प्रतिक्रिया न देते हुए सम्मोह के द्वारा जीवन की आनंदयात्रा में शामिल होने का संदेश पलायनवाद और पुरुषार्थहीनता हैं बाल्टीभर पानी के लिए नल पर रोज लड़ाई-झगड़ा करने वाली औौर कोसों दूर भटकनेवाली हमारी बहनों को क्या सम्मोहन स्थिर जीवन का अनंद दे सकेगा? अधिकार को छिनने के कारण निराश और दिशाहीन बने युवाओं को सम्मोहन कितना संतुष्ट बना पाएगा? असुरक्षित आर्थिक हालत में गोता खानेवाले दरिद्र परिवारों को सम्मोहन कौन सा आधार दे पाएगा? हिंसा, क्रूरता, बेपरवाही, अनैतिकता जैसी अनेक बातों का भारी तनाव मन को व्याकुल करता है तब सम्मोहन में जाकर 'मैं जिधर देखूं, खुशी ही खुशी है' का अनुभव अस्थिर मनुष्य के दिमाग को कैसे प्राप्त होगा?

इन लोगों ने इस बात की पहले ही सतर्कता बरती है कि उपर्युक्त आशंकाएं लोगों के मन में उत्पन्न न हों और उत्पन्न होने पर उनका उत्तर देने की जिम्मेदार उनके व्यवसाय को संकट में न डाले। पूछने से पहले सम्मोहन का समर्थन करने वालों की सूची तैयार रखी जाती है। उसमें ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन, अमेरिकन मेडिकल एसोसएशन, सायकियाट्रिक नं. 2, एनसायक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका जैसे प्रतिष्ठित नाम होते हैं। अमेरिकन एवं ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन ने सम्मोहन इलाज-पद्धति को मान्यता देने से पहले स्पष्टता से सूचित किया है कि इलाज करने वाला व्यक्ति चिकित्साशास्त्र का होना चाहिए। उसके पास सम्मोहन-शास्त्र की पूरी जानकारी होनी चाहिए।

'एनसायक्लोपीडिया ब्रिटानिका' में सम्मोह का उल्लेख प्रतिकूल है। उसमें कुछ मुद्दे इस प्रकार हैः

1. सम्मोहन प्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित होता है, फिर भी इसके एक भी सिद्धांत का कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है।

2. सम्मोहन से स्मरणशक्ति बढ़ जाती है' के निष्कर्ष को लेकर अभी विवाद है। वह अभी निर्विवाद साबित नहीं हुआ है।

3. भुजा में सुई चुभोते समय वेदनाओं का एहसास न होना। यह सम्मोह ही शक्ति मानी जाती है। इसका जो गवाह प्रस्तुत होता है, वह गलत है।

4. जाग्रतावस्था की अपेक्षा, सम्मोह की अवस्था में मनुष्य अधिक सहनशील होता है। उसकी शारीरिक क्षमता, ग्रहण क्षमता, सीखने की क्षमता अधिक होता है, यह असंभव है। वह जाग्रतावस्था में जो बातें नहीं कर सकता, वह सम्मोहन की अवस्था में कर सकता है, यह भी असंभव है।

5. सम्मोहन विज्ञान से संलग्न नहीं हो सकता; बल्कि उसे सर्वसामान्य नियमों में कैसे ढाला जाए, यह देखना मानसशास्त्र का काम है।

6. गवाह की ओर से सत्य उगलवाने में सम्मोहन समर्थ नहीं है, ऐसा देखा गया है।

7. स्मरणशक्ति के लिए अथवा किसी बात को याद करने के लिए सम्मोहन का उपयोग नहीं हेता। अन्य मार्ग अपनाकर सम्मोह से अधिक प्रभावी परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखकर उस पर जो सोचेगा, वह सम्मोह की भूल-भुलैया में नहीं फंसेगा। लेकिन जो इसका व्यवसाय करते हैं, उनके पास स्वार्थ साधने की व्यवस्था होती है और सत्य बोलने वाले के पास जनमानस में उस सत्य को पहुंचाने के लिए ऐसी कोई व्यवस्था नहीं होती है।

यही कारण है कि तीन दिन या तीन घंटों के सम्मोह वर्ग की भारी फीस चुकाकर लोग बड़ी आशा और आकांक्षाओं के साथ उसमें शामिल होते हैं। कीमती चीजें अच्छी होती हैं, लोगों की यह मानसिकता भी इसके पीछे होती है। लेकिन उनके पल्ले संपन्न व्यक्तित्व, निराशा, दुख से सुख का मार्ग आदि कुछ नहीं पड़ता। जो है ही नहीं, वह प्राप्त कैसे होगा? इन भोले-भाले लोगों की भविष्य की

शिकायत ग्राह्य मानकर ये चतुर लोग पहले ही उनसे बतियाते हैं, 'इस प्रक्रिया के लाभ, सीखने वाली की वृत्ति, ग्रहणक्षमता तथा उनके द्वारा किए गये कार्य नित्य अभ्यास पर निर्भर होंगे।' किसी को लाभ नहोने पर उत्तर पहले ही तैयार रहता है कि 'मेरे दिए हुए मंत्र का नित्य पठन-पाठन आपने नहीं किया था, आपको मेरे ऊपर श्रद्धा नहीं है।'

अंनिस का कार्य व्यापक आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक परिवर्तन से जुड़ना है, महाराष्ट्र अंनिस इस बात का ध्यान रखती है। इस संदर्भ में बुनियादी कार्य करनेवालों के साथ वह काम करती है। वैज्ञानिक जांच-पड़ताल के द्वारा अंधविश्वास का सत्यस्वरूप वह लोगों के सामने लाती है ।उसका अगला कदम है-लोग विवेक, मूल्य के आधार पर जीना सीखें, निर्भयता से काम करें-इतना आत्मविश्वास उनके मन में पैदा करना। वशीकरण विद्या के रूप में अथवा तथाकथित वैज्ञानिकता का बुरादा डालकर सम्मोहन के मायाजाल के प्रचार का पर्दाफाश करने से यह आंदोलन पीछे नहीं हटेगा। ?

इधर काशी में है पत्थर
इधर काबे में है पत्थर
इधर पत्थर का पूजन है
तो इधर पत्थर को बोसा है
समझ में कुछ नहीं आता
कि आखिर माजरा क्या है ?
इधर पंडित अकड़ते हैं
कि वो काशी में रहता है
और इधर है शेख जी नाजां
कि वो काबे में रहता है
यानी जैसे मस्जिद भीतर अल्लाह बंद
और ईश्वर कैद शिवालन में
स्वर्ग पे कब्जा पंडित जी का
जहन्नत अल्लाह वालन में
भई राम की पड़ गई खींचातानी
राम फंसे जंजालन में
अरे बहुत कठिन है डगर पनघट की ।

-अमीर खुसरो

लघुकथा

पूंजीपति और मंदिर-मस्जिद

पूंजीपति ने बस्ती का कुछ हिस्सा खरीद कर एक होटल बनाया ! होटल अच्छा चलने लगा, लेकिन बस्ती वालो की रौशनी, रास्ता, पानी की निकासी सब रुक गए!

बस्ती वाले सरकार के हर दरवाजे पर गए लेकिन सरकारी कारिंदो की हिम्मत नहीं थी कि पूंजीपति को कुछ कह पाते!

बस्ती वालों ने तरकीब निकाली। हिन्दुओं ने एक पुरानी ईमारत को मंदिर घोषित कर दिया और मुसलमानों ने एक बुर्ज को मस्जिद मान लिया! दोनों ने लाउडस्पीकर टांग दिए, पूरा दिन नमाज और आरती फुल स्पीड में बजने लगे! होटल में रुकने वाले शोर से परेशान होने लगे और होटल की सेल एकाएक गिर गयी!

पूंजीपति के पास अब कोई इलाज ना था, उसने सरकारी कारकुन्नों के पास शिकायत की लेकिन धर्म के खिलाफ भी कौन अफसर उठ जाए!

गरीब और अमीर में अब ठन गयी थी! पूंजीपति के पास लेकिन बहुत सारे अस्त्र होते हैं जिनमे पूँजी का ईंधन भरा जाता है! उसने बस्ती के एक सफेदपोश को खरीद लिया और लड़ाई को अमीर-गरीब की बजाय हिन्दू-मुसलमान की बना दिया! बस्ती के बड़े बुजुर्ग चिल्लाते रहे कि हमारा आपस में कोई झगड़ा नहीं है। तुम आपस में मत लड़ो, तुम्हारी लड़ाई पूंजीपति से है जिसने तुम्हारी जिंदगी रोक दी है! लेकिन जैसे-जैसे पूँजी का दखल बढ़ता वैसे-वैसे बस्ती में तनाव बढ़ जाता!

बहुत समय हुआ, होटल का मालिक मर गया! सफेदपोश भी मर गया! बड़े बुजुर्ग भी मर गए तमाम ! लेकिन उस बस्ती में हिन्दू-मुस्लिम तनाव आज भी जिन्दा है!

-वीरेंदर भाटिया

मानसिक थकान

'चिड़चिड़ापन' एक मानसिक रोग

– ***डा0 दिव्य मंगला***

चिड़चिड़ापन आखिर है क्या ?

कोई विरला ही होगा जो अपने जीवन में चिड़चिड़ेपन का शिकार न हुआ हो। हर इंसान कभी न कभी चिड़चिड़ापन जरूर महसूस करता है, चाहे वह कम हो या ज्यादा। छोटी-छोटी बात पर गुस्सा आना, तमतमाना, खीझकर बोलना, गाली-गलौच या फिर हाथापाई तक का पहुंचना चिड़चिड़ेपन के ही लक्षण हैं। वास्तव में यह एक मनोदशा है, जिसमें व्यक्ति की कुंठा को बर्दाश्त करने की ताकत कमजोर पड़ जाती है। इस स्थिति में व्यक्ति का कोई काम उसके मन मुताबिक न हो तो वह बहुत गुस्से से भर जाता है। यह मनोदशा कई बार इंसान के ऊपर जरूरत से ज्यादा हावी हो भारी नुकसान का कारण भी बन सकती है। चिड़चिड़ेपन का शिकार हुआ उमेश कैसे अपने जीवन को कष्टकारी बना देता है, देखिये-उमेश कुछ महीनों से व्यापार में लगातार नुकसान सउठा रहा हैं दूसरी तरफ घर के खर्चे बढ़ रहे हैं। इस सबके चलते वह मानसिक दबाव महसूस करता है और धीरे-धीरे चिड़चिड़ेपन का शिकार बन जाता हैं वह अपने ग्राहकों वे रिश्तेदारों से चिढ़कर बोलने लगता है। लोग उससे कतराने लगते हैं और ग्राहक भी दुकान पर आना कम कर देते हैं। चिड़चिड़ेपन और बढ़ता है और एक दिन छोटी-सी बात पर वह गुस्से से अपने नौकर को धक्का देकर गिरा देता है जिसके कारण उसकी हाथ की हड्डी टूट जाती है। गाड़ी चलाते वक्त भी उमेश अपने आप पर नियंत्रण नहीं रख पाता और एक स्कूटर चालक को टक्कर मार, उसे भी गंभीर चोट पहुंचा देता हैं इस तरह समस्याओं पर समस्याएं बढ़ती चली जाती हैं। कुछ समय बाद वह मायूसी यानि डिप्रेशन का शिकार हो जाता हैं उमेश की तरह बच्चे व औरतें भी किसी न किसी कारणवश चिड़चिड़ेपन का शिकार होती देखी गई हैं। इस मनोदशा के शिकार व्यक्ति को खुद चिड़चिड़ेपन के असली कारणों का पता नही चला पाता। कई बार छोटे-छोटे मानसिक द्वंद्व जैसे पत्नी से तालमेल की कमी, अपमान, बच्चों से मनमुटाव आदि भी इस मनोदशा का कारण बन सकते हैं।

आमतौर पर इंसान कभी-कभी हो रहे चिड़चिड़ेपन पर आसानी से काबू पा लेता है और यह स्थिति बहुत थोड़े समय के लिए रहती है। परंतु कुछ परिस्थितियों में चिड़चिड़ेपन नियंत्रण से बाहर हो जाता है और लंबे समय तक इंसान को तंग करता हैं मनोचिकित्सक जरूरत से ज्यादा चिड़चिड़ेपन को मानसिक रोग का एक लक्षण मानत मानते हैं

अब जानिए यह मनोदशा किस-किस मानसिक रोग का सूचक हो सकती है।

(हो सकता है आपके चिड़चिड़ेपन के पीछे इन रोगों में से किसी एक का हाथ हो)

◦ मानसिक थकान (न्यूरसथीनिया) : लगातार बृता मानसिक तनाव या काम का बोझ कई बार मानसिक तौर पर थकान पैदा कर देता है जिसे न्यूरसथीनिया नामक बीमारी के रूप में जाना जाता है। चिड़चिड़ेपन के अलावा इस रोग के मुख्य लक्षण हैंः थका-थका महसूस करना, ऊर्जाहीन शरीर व मांसपेशियों में दर्द, सिर-दर्द, नींद की समस्या व चक्कर आना।

◦ डिप्रेशनः यह मनोरोग तेजी से समाज को अपनी गिरफ्त में ले रहा है। इस रोग के मुख्य लक्षण हैंः मन का मायूस रहना, काम में दिल न लगना व थकान। रोने को मन करना, याददाश्त में कमी व चिड़चिड़ापन इसके अन्य लक्षण हैं।

◦ चिंता रोगः घड़कन का बढ़ना, बेचैनी हाथ-पैर ठंडे रहना, नींद आनें दिक्कत, बुरे-बुरे ख्याल दिमाग में आना, चिंतारोग के लक्षण हैं। इस रोग के गंभीर होने पर व्यक्ति चिड़चिड़ेपन का शिकार हो सकता है।

◦ मेनिया (मानसिक उन्माद) : इस रोग में व्यक्ति अपने

आपको औरों से बेहतर समझने लगता है और उसके दिमाग की कार्य करने की शक्ति नियंत्रण से बाहर होने लगती हैं इस रोग के कारण पैदा हुआ चिड़चिड़ापन सबसे ज्यादा गंभीर होता है और कई बार बेहद खतरनाक साबित होता है।

◦ साइकोसिस (सिक्जोफ्रिनिया) : यह एक गंभीर मानसिक रोग है जिसमें इंसान अपने आसपास के लोगों पर बेवजह शक करना शुरू कर देता है। उसे लगता है मानों कोई उसके खिलाफ साजिश रच रहा हैं इसीसोच के चलते वह चिड़चिड़ेपन का शिकार हो जाता है।

◦ व्यक्तित्व विकारः कुछ लोगों का व्यक्तित्व ही मूल रूप से विकार लिए होता हैं अंहकारी, असामाजिक, भावनात्मक रूप से डावांडोल आदि व्यक्तित्व वाले लोगों का स्वभाव चिड़चिड़ा हो सकता हैं इसी प्रकार कई अन्य मासिक परिस्थितियों व रोगों जैसे-नशे की लत, बहम व सनकीपन, जिंदगी में भारी फेर बदलाव, इच्छाओं का पूर्णन होना, नींद कही कमी, ध्यानभंग रोग, मंद बुद्धि आदि में भी चिड़चिड़ापन पैदा हो सकता है। कुछ शारीरिक रोगों में भी यह मनोदशा पैदा होती देखी गई है।

चिड़चिड़ेपन से मुक्ति

ज्यादातर लोगों में चिड़चिड़ापन किसी न किसी मानसिक रोग का लक्षण होता हैं मानसिक रोग का उचित इलाज होने पर चिड़चिड़ापन अपने आप नियंत्रण में आने लगता है। हलके-फुलके चिड़चिड़ेपन के लिए (जोकि व्यक्ति के व्यवहार पर कोई विशेष प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालता) किसी खास उपचार की आवश्यकता नहीं होती।

निम्नलिखित उपाय चिड़चिड़ेपन से मुक्ति दिलाने में मदद कर सकते हैं। जितना जल्द हो इसके लक्षणों को पहचान कर उसके कारणों को ढूंढने की कोशिश करें और उनके दूर करने का प्रयास करें:

◦ हलका व्यायाम व खास किस्म की श्वास क्रियाओं भी चिड़चिड़ेपन को कम कर सकती हैं।

◦मन की बातों को अपने किसी विश्वसनीय मित्र पया रिश्तेदार से कहने की आदत डालें।

◦ मधुर कर्ण प्रिय संगीत सुनना भी लाभदायक हो सकता है।

◦ इस स्थिति में निश्चलता का अभ्यास काफी मददगार साबित हो सकता है। इन्हें हमेशा विशेषज्ञ की देखरेख में सीखें।

◦ इस मनोदशा से छुटकारा पाने के लिए गलती से भी शराब या अन्य दवाओं का सेवन करने की कोशिश न करें।

◦ इसके बावजूद अगर आप चिड़चिड़ेपन को मन से बाहर निकालने में नाकामयाब रहे या फिर यह जरूरत से ज्यादा बन जाए, तब जल्द से जल्द अपने नजदीकी मनोचिकित्सक से मिलना सबसे उचित कदम होगा।

कविता

पहले वे यहूदियों के लिए आये
मैं चुप रहा
क्योंकि मैं यहूदी नहीं था
फिर वो कैथोलिकों के लिए आये
मैं चुप रहा
क्योंकि मैं कैथोलिक नहीं था।
फिर वो ट्रेड यूनियनिस्ट के लिए आये
मैं चुप रहा
क्योंकि मैं ट्रेड यूनियनिस्ट नहीं था।

फिर वो समाजवादियों के लिए आये
मैं चुप रहा
क्योंकि मैं समाजवादी नहीं था।
फिर वो कम्युनिस्टों के लिए आये
मैं फिर भी चुप रहा
क्योंकि मैं कम्युनिस्ट नहीं था

अंत में वे मेरे लिए आये
और फिर वहां
मुझे बचाने को कोई नहीं था।
अगला नम्बर आपका भी हो सकता है।
इसलिए संगठित हो जाओ।

-पास्तर निलोमर,
जर्मन कवि

पूजा के बहाने युवती के साथ अश्लील हरकत, गिरफ्तार।

ग्रह-नक्षत्रों के प्रकोप का हवाला देकर लिया था झांसे में

गुरुग्राम। सेक्टर -43 स्थित मंदिर के पुजारी ने एक युवती से ग्रह-नक्षत्रों के शांति पाठ के बहाने अश्लील हरकत की। युवती का आरोप है कि पूजा के बहाने पुजारी ने उसके कपड़े उतरवाकर अश्लील हरकत की।

पूजा खत्म होने के बाद वह निकली तो पुजारी ने इस पूजा के बारे में किसी को न बताने की बात कहते दोबारा भी आने को कहा। युवती की शिकयत पर महिला थाना (पूर्व) ने राजस्थान के भरतपुर के गांव रसिया निवासी- रमाकांत शर्मा (40) के खिलाफ विभिन्न धाराओं केतहत मामला दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के मुताबिक बुधवार को सेक्टर-43 स्थित हुनुमान मंदिर में 19 वर्षीय युवती पूजा करने गई थी। पुजारी ने उससे नाम, जन्मतिथि, जन्म का समय और कुंडली के बारे में पूछा। कुंडली देखने के बाद बताया कि उसके ग्रह-नक्षत्रों की दशा ठीक नहीं है। इस कारण उसके जीवन में कई तरह की समस्याएं चल रही हैं।।

युवती ने समाधान पूछा तो वह उसे एक कमरे में ले गया जहां पूजा और मंत्रोच्चारण के बहाने उसके कपड़े उतरवा दिए और अश्लील हरकत करने लगा। अकेली होने के कारण युवती कुछ नहीं कर सकी। किसी तरह से पूजा पूरी होने पर वह वहां से निकलने लगी तो पुजारी ने इस गुप्त पूजा के बारे में किसी को बताने से मना किया और दोबारा आने को कहा। इसके बाद युवती ने पुलिस को शिकायत दी। -ब्यूरो।

नाबालिग से दुष्कर्म, दोषी बाबा को 14 साल कैद

हिसार। भभूत खिलाकर नाबालिग के साथ दुष्कर्म करने वाले बाबा को 14 साल की कैद की सजा सुनाई गई है। इसके अलावा 35 हजार रूपये जुर्माना भी लगाया है। यह फैसला एडीजे डॉ.पंकज की अदालत ने बुधवार को सुनाया। जुर्माना न भरने पर दोषी को अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी। इस संबंध में पीड़िता की शिकायत पर हांसी के महिला पुलिस थाने में दिसंबर 2018 को विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया गया था। शिकायत में 15 साल की लड़की ने बताया था कि भिवानी के जीत वाला जोहड़ निवासी बाबा गुलाबनाथ दूर की रिश्ते दारी में पड़ता था। अकसर उनके घर आता-जाता था। एक दिन मौका का फायदा उठा कर दुष्कर्म किया और अश्लील वीडियो बनाई। इसके बाद ब्लैकमेल करने लगा। ब्यूरो।-*अमर उजाला*

अपनी बीमारी से छुटकारा पाने के लिए अपनी ही नन्ही बच्ची को पानी में डुबो कर मार दिया- गिरफ्तार किया गया।

गुवाहाटी।- उत्तर पश्चिमी आसम के बकसा जिले में पुलिस ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है।व्यक्ति एक अज्ञात बीमारी से पीढ़ित था । बीमारी को ठीक करने के लिए उसने अपनी नन्हीं बच्ची को पानी में डुबो कर हत्या कर दी।

लाहापाड़ा गांव में रहने वाले बीरबल बोरो नाम के व्यक्ति को शनिवार को तब गिरफ्तार कर लिया गया जब उसकी पत्नी ने स्थानीय पुलिस चौकी पर एक शिकायत दर्ज करवाई कि आरोपी ने उनकी बेटी को मार दिया है।

स्थानीय लोगों ने बताया कि वह व्यक्ति लगभग पिछले एक महीने से बीमार रहता था। इलाज के लिए वह एक तांत्रिक के पास गया जिसने उसे सुझाव दिया कि यदि वह बीमारी से छुटकारा पाना चाहता है तो वह अपने तीन बच्चों में से एक की बलि दे देवे।-'द हिन्दू'

काला जादू करने की आशंका के कारण आदमी को जलती चिता में फैंक दिया

हैदराबाद। एक आटो रिक्शा वाले के परिवार ने शमीरपेट पोलिस थाने में एक शिकायत दर्ज करवाई है कि एक अधेड़ उम्र की स्त्री जो, गांव के लोगों के मुताबिक उस आटो रिक्शावाले के काले जादू के करने से मर गई है, काला जादू करने वाले रिक्शा वाले को जलती चिता में डाल कर मार दिया गया है। पुलिस ने बताया कि 25 वर्षीय बोयनी अजनेयुलू, जो आदजशपल्ली जो कि यहां से 40 किलोमीटर दूर है, बुधवार रात से लापता है।

बालानगर के डिप्टी पुलिस कमिशनर पी वी पदमाजा के अनुसार मृतक लक्ष्मी, जो पिछले पांच सालों से उसी गांव में मकान बनाने का काम करती है, मंगलवार को मर गई थी जिसका अंतिम संस्कार बुधवार शाम को किया गया था।

'चार बच्चों की मां लक्ष्मी पिछले पांच सालों से खराब स्वास्थ्य से पीड़ित थी, मंगलवार शाम को ओस्मानिया जनरल अस्पताल में मर गई।', कुछ घंटों बाद लक्ष्मी का दाह संस्कार कर दिया गया, जी नरसिंहा, उसका एक संबंधी गांव के सरपंच के पति बी.नरसिंहा से मिला और बताया कि अंजनेलुयू को जलती चिता में फैंक दिया गया है क्योंकि आशंका थी कि उसने काला जादू किया था।

नरसिंहा की सूचना देने पर पुलिस शमशान घाट पर पहुंची जहां 10 बजे रात को उस समय उसके शरीर के कुछ भाग अभी जल रहे थे।

यह जानकर कि अंग अंजनुयूलू के शरीर के हैं, पुलिस ने उन्हें जलती चिता से बाहर निकाल कर उन्हें गांधी अस्पताल में भेज दिया', श्री नरसिंहा ने गांव में 'द हिन्दू' को बताया कि लक्ष्मी का दाह संस्कार शाम 5-30 बजे किया गया था और लगभग तीन घंटों में सारा शरीर जल गया। अंजनूयूलू के जूते चिता के पास ही पाये गये।

'हमने अधजले अवशेष कब्जे में लिये हैं जिन्हें फोरंसिक साईस लैबोरटरी में डीएनए विश्लेषण के लिए भेजा जायेगा।'- श्री पदमाजा ने बताया। साथ ही उन्होंने बताया अंजनुयुलू के भाई गणेश की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया गया है और जांच-पड़ताल शुरू कर दी गई है और साक्ष्य प्राप्त करने के लिए टीम गठित कर दी गई है।

इसके बाद उसने बताया कि लक्ष्मी के परिवार के सदस्यों ने वारदात को स्वीकार किया है कि उन्होंने अंजनुयुलू को 9-00 बजे के आसपास चिता के पास काला जादू करते देखा गया था। उन्होंने उसे पकड लिया और उसे अधजली चिता में फैंकने से पहले उसकी पिटाई भी की। *-द हिंदू (19-9-2019)*

जादू टोने के शक में की इमाम और उसकी पत्नी की हत्या

अमर उजाला ब्यूरो

गन्नौर(सोनीपत) गांव मनिक माजरी में मस्जिद के पीछे बने कमरे में सो रहे इमाम और उनकी पत्नी की हत्या के मामले में पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी गांव मनिक माजरी का रहने वाला सतबीर है। आरोपी को इमाम पर घर में जादू टोना करने का शक था। उसने दोनों को सोते हुए मार डाला। पुलिस आरोपी को मंगलवार को अदालत में पेश करेगी। मूलरूप से पानीपत के गांव मोहाली निवासी इरफान (38) चार वर्षो से मनिक माजरी गांव की मस्जिद में इमाम थे। वह अपनी पत्नी यास्मीन उर्फ मीना (24) के साथ मस्जिद के पीछे बने कमरे में रहते थे। इरफान सुबह अजान पढ़ते थे, लेकिन रविवार की सुबह इरफान ने अजान नहीं पढ़ी थी। इस पर समुदाय के लोग मस्जिद पहुंचे तो वहां इरफान नहीं मिला था। वह उसे देखने इरफान के कमरे में गए तो वहां इरफान व उसकी पत्नी मृत पड़े मिले थे।

मामले में डीएसपी हेडक्वार्टर जितेंद्र के नेतृत्व में कार्रवाई करते हुए गन्नौर एसएचओ दिनोश कुमार, खुबड्डू चौकी प्रभारी संदीप गाहल्याण व सी आई ए की टीम ने 24 घंटे में हत्या से पर्दा उठाते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी ने शुरूआती पूछताछ में बताया है कि उसे इमाम पर उसके घर पर जादू टोना करने का शक था। (दिनांकः 10-9-2019)

धरती पर कई प्रकाश वर्ष दूर है पानी और जीवन

पृथ्वी से दोगुना बड़े ग्रह पर इंसान के रहने योग्य तापमान के साक्ष्य मिले

न्यूयार्क टाइम्स न्यूज सर्विस

लंदन। वैज्ञानिकों ने पहली बार 110 प्रकाश वर्ष दूर एक ऐसे ग्रह का पता लगाया है जहां पानी की बड़ी मात्रा में मौजूदगी है। इस गह पर पानी के साथ साथ इंसान के जीवन जीने के अनुकूल तापमान भी है। वैज्ञानिकों को पृथ्वी से दोगुना आकार के इस ग्रह पर जीवन के पूरे आसार नजर आ रहे हैं। लेकिन चिंता इस बात की है कि यह दूरी इतनी ज्यादा है कि यहां पहुंचकर जीवन की संभावनाओं का पता लगाना बेहद मुश्किल है।

फिलहाल वैज्ञानिकों ने शून्य से 40 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान वाले इस ग्रह को के-2-18बी का नाम दिया है। लंदन के वैज्ञानिकों ने विख्यात विज्ञान पत्रिका 'नेचर' में इस खोज के बारे में लिखा है। वैज्ञानिकों के मुताबिक इसका तापमान और पानी की मौजूदगी यहां पर जीवन की पूरी गुंजाइश बताता है। कनाडा स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ मोंट्रियाल के प्रोफेसर बियर्न ब्रेनके की अगुआई में हुई इस खोज में बताया गया कि अभी इस ग्रह तक धरती के इंसान की पहुंच बहुत ही मुश्किल है लेकिन उम्मीद है कि आने वाले दशक में हम अत्याधुनिक टेलिस्कोप की मदद से इसका भी पता लगा लेंगे। वैज्ञानिकों का कहना है कि अभी तक के-2-18बी हमारे सौर मंडल से बाहर इकलौता ऐसा ग्रह है जहां जीवन की उम्मीद बताई जा सकती है। फिलहाल इसके बारे में बहुत कुछ जानना बाकी है।

शोध में सामने आया लो फैट डाईट का लाभ

-शोध अनुसंधान

हालिया अध्ययन में वैज्ञानिकों ने लो-फैट डाइट यानी कम वसा वाले खानपान का बड़ा लाभ पता लगाया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि कम वसा वाले खानपान के साथ फल, सब्जियों का सेवन करने से स्तन कैंसर से होने वाली मौत का खतरा कम होता है। डायबिटीज और दिल की बीमारियों का खतरा भी कम होता है। वैज्ञानिकों ने बताया कि कई तरह के खानपान हैं, जिनसे तात्कालिक फायदा होता है और वजन कम करने में मदद मिलती है। वहीं कम वसा वाला भोजन करने से शरीर को लंबे समय तक फायदा होता है।

शोध के दौरान करीब 49,000 महिलाओं को शामिल किया गया था। नौ साल तक अध्ययन के बाद वैज्ञानिकों ने पाया कि कम वसा वाले खानपान से स्तन केंसर, डायबिटीज और दिल की बीमारियों के मामले में फायदा होता है। यहां तक कि करीब 20 साल बाद भी ऐसे खानपान का शरीर पर सकारात्मक असर दिखा। -एएनआई।

कीमोथेरेपी में बाल झड़ने से बचाव का तरीका इजाद

वैज्ञानिकों की कीमोथेरपी में बाल झड़ने की रोकथाम करने में बड़ी सफलता मिली है। उन्होंने एक ऐसा तरीका खोज निकाला है, जिससे बालों को बचाया जा सकता है। कैंसर में आमतौर पर कीमोथेरेपी की जाती है। इसका एक प्रमुख दुष्प्रभाव बाल झड़ने के तौर पर सामने आता है। अध्ययन के नतीजों से जाहिर हुआ कि कैंसर के उपचार में काम आने वाली टैक्सनेस दवाओं से हमेशा के लिए बाल झड़ सकता है। इसकी रोकथाम हो सकती है। ईएमबीओ मोलेक्यूलर मेडिसिन जर्नल में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, कैंसर रोधी दवा के तौर पर टैक्सनेस का इस्तेमाल होता है। स्तन से लेकर फेफड़ों के कैंसर तक के उपचार में यह दवा उपयोगी होती है। शोधकर्ताओं ने पाया कि सीडीके 4/6 इंहिबिटर वर्ग की नई दवाएं कोशिकाओं मे विभजन को रोकती है। -एएनआई।

बच्चों का कोना

क्या हमें प्रकाश दिखाई देता है

क्या आप वास्तव में प्रकाश को देखते हैं? यह यह प्रयोग करके देखें और सोचिए।

जरूरी सामानः

★एक लेज़र टॉर्च, बैंडमिंटन के शटल कॉक का डिब्बा, काला कागज़ आदि।

इस तरह से करें :

★शटल कॉक के डिब्बे को भीतर से काला करना है। इसके लिए, काले कागज़ को रोल करके डिब्बे में सरका दें। भीतर देखने के लिए डिब्बे पर एक खिड़की काट लें।

★लेजर टॉर्च की रोशनी, डिब्बे के आरपार छोड़ें और खिड़की से देखें। क्या आपको लेज़र बीम दिाखई दे रही है?

★अब खिड़की से पेंसिल का एक छोर डिब्बे में डालें। खिड़की से देखें, लेजर बीम के पेंसिल छोर को प्रकाशित करती है।

कुछ चर्चाः

★ लेज़र किरणें डिब्बे के भीतर से तो गुज़र रही थी, पर आपकी आंखें में नहीं आ पा रही थी। जब प्रकाश (लेजर बीम) पेंसिल से टकराकर आपकी आंखों में आता है, तब आप पेंसिल का प्रकाशित भी देखते हैं।

★कई दफा छत के छोटे-छोटे छेदों या झरोखों से सूरज की रोशनी भीतर आती है तो हमें धोखा होता है कि हम प्रकाश की किरणें देख रहे हैं। दरअसल हम रोशनी में चमक रहे धूलकणों को देख रहे होते हैं।

वह लड़का जिसने दिया रोशनी बल्ब

कभी सोचा है अगर बल्ब नहीं होता तो क्या होता? रोशनी कैसे फैलती है?

अमेरिका में एक लड़का था। अक्सर उसके शिक्षक उसे मूर्ख कहा करते थे। पर उस लड़के में गज़ब की जिज्ञासा थी। वह अपने शिक्षकों से -कीड़े कैसे उड़ते हैं, जैसे सवाल किया करता था। बाद में वह लड़का बड़ा होकर कई चीजों का आविष्कारक बना। उसके लड़के का नाम था **थॉमस अल्वा एडीसन**।

बिजल का बल्ब उसकी सबसे बड़ी खोज है। जिसके लिए उसे कड़ी मेहनत करनी पड़ी । इसे बनाने में वह 10 हजार बार नाकाम हुआ, लेकिन उसने हौसला नहीं हारा। वह इतनी साकारात्मक सोच वाला था कि अपनी असफलता पर उसने कहा, मैं कभी नाकाम नहीं हुआ बल्कि मैंने 10 हजार बार ऐसी राहें बनाई जो मेरे काम नहीं आई।

पहली बार बल्ब बनाने में 40 हजार डॉलर की लागत आई थी। उसने अधिक प्रतिरोध वाली कार्बन थ्रेड फिलामेंट विकसित की, जो 40 घंटे तक चल सकती थी। 3 हजार लोगों की भीड़ उसके बनाए 40 इलेक्ट्रिक लाइटें बल्ब जलते देखने के लिए जुटीं थी।

एडीसन ने अपनी पहली प्रयोगशाला सिर्फ 10 साल की उम्र में बना ली थी। उसे अपने खर्चे के लिए घर से जो भी पैसे मिलते थे, वह अपने प्रयोगों पर खर्च कर देता था।

लेकिन उसे और पैसों की जरूरत होती जिसके लिए उसने ट्रेन में अखबार और सब्जी बेचना शुरू कर दिया।

एडीसन ने छोटे-बड़े 1093 आविष्कारें किये।

तर्कशील हलचल

गांव ढाणीगारण बरवाला, हिसार में तर्कशील सोसायटी हरियाणा द्वारा ग्रांम युवा जागृति मंच के सौजन्य से जादू एवं जागृति का विशाल समारोह

दिनांक 12-10-2019 को गांव ढाणीगारण बरवाला, हिसार में तर्कशील सोसायटी हरियाणा द्वारा ग्राम युवा जागृति मंच ने योजना एवं जादू एवं जागृति का विशाल समारोह आयोजित किया। जिसमें ग्राम पंचायत ढाणीगारण समस्त ग्राम वासी एवं आसपास के गांव के लोगों ने भाग लिया।

कार्यक्क्रम का आरंभ देशभक्ति के गीतों से हुआ। कुमारी किंजल और रितिका ने मोनो एक्टिंग कर के दर्शकों को कार्यक्रम की ओर आकर्षित किया।

पहली बार किसी महिला ने मंच से बिना घूंघट के भाषण देते हुए बताया कि किस प्रकार अच्छे राष्ट्र के निर्माण के लिए पाखंड का उन्मूलन जरूरी है। महिला का शिक्षित एवं जागृत होना आवश्यक है। मीरा देवी ने तर्कशील सोसायटी हरियाणा का धन्यवाद करते हुए गांव की अन्य महिलाओं से भी पाखंड उन्मूलन की इस मुहिम में आगे आने की अपील की। गांव के सरपंच प्रतिनिधि सतीश कुमार ने भी उपस्थितजनों एवं तर्कशील सोसायटी के सदस्यों को गांव में पहुंचने पर धन्यवाद किया। कार्यक्रम के प्रचारक अध्यक्ष मा. उमेश कुमार, आयोजक अध्यक्ष लेक्चरार रविन्द्र कुमार, प्रबंधक, श्री राम पाल एमपी एच डब्लयू एवं मां. विजय कुमार, डा. अनिल कुमार बीएएमएस, डा. अनिल कुमार फार्मासिस्ट सभी ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते अपील की कि यह कार्यक्रम सदियों से प्रचलित अधंविश्वास से मुक्ति का मार्ग दिखाने वाला है।

ग्राम युवा जागृति मंच के संचालक श्री सूबे सिंह सुबोध ने ग्रामवासियों, मुख्यातिथि एवं अन्य दूर दराज से आए लोगों तथा सोसायटी के सदस्यों का अभिनंदन किया और सोसायटी की स्थापना एवं उद्देश्यों के बारे बताया। मुख्य अतिथि श्री जसवंत सिंह बी एस एच एम, ग्राम सरपंच प्रतिनिधि सतीश तथा तर्कशील सोसायटी के प्रधान फरियाद सिंह ने साथी रामप्रसाद मुगलपुरा, रविंद्र कुमार, रामभगत, राजबीर प्रभुवाला, बलजीत सिंह स्वतंत्र का बैज लगाकर अभिनंदन किया। इस पहले रविन्द्र ने आंखों पर पट्टी बांध कर गांव की गलियों में मोटर साइकिल चलाया। और तत्पश्चात् संबोधित करते तांत्रिक, ओझा, स्याना, साधु, संत आदि को तर्कशीलों की खुली चुनौती, ईनाम राशि तथा शर्तों के बारे विस्तार से बताया।

सोसायटी के प्रधान फरियाद सिंह ने हैरतंगेज जादू के खेल दिखा कर समां बांध दिया। पानी से दिया जलाना, रूमाल गायब करना, मंत्रों से आग जलाना, आग स्नान, इंद्रजाल, अंदर से केला काटना, चाकू से चावल की लुटिया उठाना आदि अनेकों जादू की कलाएं दिखाकर इनके पीछे के वैज्ञानिक रहस्यों को बताकर लोगों को समझाया कि किस तरह तांत्रिक बाबा, ओझा और स्याने भोले-भाले लोगों को ऐसी क्रियाएं बताकर लूटा करते हैं। उन्होंने घोषणा की कि यदि कोई तांत्रिक ओझा बाबा, पुजारी पंडे किसी दिव्य शक्ति होने का दावा करता हैं तो उसे साबित करके वह तर्कशील सोसायटी हरियाणा द्वारा रखे गये 5 लाख रूपये का ईनाम जीत सकता है। उन्होंने अपील करते हुए कहा कि हमें देवालयों से निकलकर विद्यालयों की ओर चलना चाहिए। राष्ट्र का सही निर्माण मंदिर मस्जिदों में नहीं बल्कि विद्यालयों में है। अपनी मेहनत की कमाई का सदुपयोग करें तथा अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलवाएं तथा टोने-टोटकों, भूतप्रेत, देवी देवताओं को भ्रम जाल से बाहर निकलें। यह ब्राह्मणवादी विचारधारा ही है जिसने इस देश की

सामाजिक व अर्थिक व्यवस्था का सर्वनाश किया है व अंधविश्वास की गहरी खाई में धकेल दिया है। यह भी बताया कि ज्योतिष कोई विज्ञान नहीं, बल्कि महज झूठ पर टिका है। फरियाद सिंह ने आगे बताया कि यदि हमें इस अंधविश्वास, पाखंडवाद को मिटाना है तो हमें महापुरुषों और उनके शिक्षाओं का अध्ययन करना होगा। अपने विवेक एवं तर्क को जगाना होगा । हमें शास्त्रों को नहीं संविधान का जानना होगा, समाज में फैली दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, मृत्यु भोज जैसी बुराइयों का बहिष्कार करना होगा जिससे हम धर्म, मज़हब जात-पात ऊंच-नीच छुआछूत से उपर उठकर एक समतापरक समाज की स्थापना कर सकते हैं।

अंधविश्वास पर तथा ब्राह्मणवादी सोच पर बलजीत स्वतंत्र ने संबोधित करते हुए बताया कि ब्राह्मणवाद का मतलब है, जो विचारधारा संविधान को न मानकर ऊंच-नीच, छुआछूत पांखंड में विश्वास करती हो। कार्यक्रम के अंत में अतिथियों व तर्कशील सदस्यों को ग्राम युवा क्लब, जागृति मंच एवं ग्राम पंचायत ढाणी गारण द्वारा प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर पूर्व सरपंच रामपाल, रामेश्वर ठेकेदार, पंच राजबीर सिंह, पंच राजेन्द्र, सूरजभान नंबरदार ग्राम युवा जगृति मंच के अन्य सदस्य सुरजीत शास्त्री, कृष्ण एबीआरसी, राजेश सीआई, बलबीर सिंह, मा.धर्मपाल, रामकिशन वर्मा, राजेश लेक्चरार, जसबीर भेलू, नरेश भारतीय, प्रवीन माड़ी, रामबीर भारती, रमन, सुरेश एएलएम, रेखा, जेबीटी सुदेश मेहता, आदि की विशेष उपस्थिति रही।

जालौर में चमत्कारों का पर्दाफाश कार्यक्रम

पिछले दिनों सेंटपाल स्कूल, जालौर (राजस्थान) में तर्कशील सोसायटी हरियाण के कर्मठ कार्यकर्ता ईश्वर नस्तिक एवं सुभाष अनुराग द्वारा चमत्कारों का पर्दाफाश कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि दोनों तर्कशील कार्यकताओं ने पहले बाबाओं की वेशभूषा धारण की हुई थी। बाबाओं के रूप में ही उन्होंने विभिन्न जादू के ट्रिक, जो कि बाबा लोग भोली-भाली जनता को मूर्ख बनाने के लिए चमत्कारों के तौर पर प्रस्तुत करते हैं, जैसे कि आग खाना, अग्नि से स्नान करना, मंत्रों द्वारा अग्नि प्रज्जवलित कर देना, चावल से भरी हुई लुटिया को चाकू से उठा लेना, कई फुट लम्बी तलवार को अपने मुंह में डाल लेना इत्यादि दिखाए। बाद में उन्होंने अपना बाबाओं वाला लिबास उतार कर, साधारण मानव बनकर इन ट्रिकों की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की तथा विद्यार्थियों को वैज्ञानिक चिन्तन अपनाने के लिए प्रेरित किया। स्कूल के स्टाफ एवं प्रिंसीपल द्वारा तर्कशील साथियों का चमत्कारों का पर्दाफाश जैसा मानवहितैशी कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए धन्यवाद किया।

गांव संगरौली के स्कूल में तर्कशील कार्यक्रम

दिनांक 14-10-2019 को राजकीय उच्च विद्यालय, संगरौली (कैथल) में तर्कशील कार्यकर्त्ताओं मा. राकेश कुमार ढाण्ड द्वारा एक तर्कशील कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम में उन्होंने जादू के विभिन्न ट्रिक दिखा कर उनके रहस्यों के बारे में विद्यार्थियों को समझाया। अपनी बात रखते हुए उन्होंने चमत्कारों के नाम से लोगों को ठगने वाले पाखण्डियों की चालाकियों को वैज्ञानिक चिन्तन अपना कर समझने की अपील की। उन्होंने समझाया कि दुनिया में किसी भी व्यक्ति के पास किसी प्रकार की कोई दिव्य शक्ति नहीं होती। यदि कोई साधु-संत अथवा देवपुरुष सोसायटी के सदस्यों के सामने सोसायटी द्वारा रखी गई चुनौती की शर्तो में से कोई एक भी पूर्ण करके दिखा दे तो वह सोसायटी द्वारा रखे गए लाखों के ईनाम को जीत सकता है।

स्कूल के समस्त स्टाफ व गांव के सरपंच ने ऐसा ज्ञानवर्धक कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए मा. राकेश कुमार का धन्यवाद किया।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की मीटिंग एवं सेमिनार सम्पन्न

दिनांक 15-9-2019 को कुम्हार धर्मशाला उकलाना (हिसार में तर्कशील सासायटी हरियाणा की द्विमासिक की बैठक एवं 'ज्योतिष एक धोखा' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में स्थनीय तर्कशील हितैषियों के साथ-साथ प्रदेशभर के तर्कशील कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। सभा के प्रारम्भ में तर्कशील सोसायटी हरियाण के पूर्व प्रधान राजा राम हंडियाया ने सोसायटी के हरियाणा में गठन एवं शुरूआती दौर में किए गए कार्यो के बारे में अपनी बात रखी। तर्कशील पथ पत्रिका के संपादक मा. बलवन्त सिंह ने सोसायटी द्वारा पूरे विश्व के देवपुरुषों, ओझाओं, तांत्रिकों एवं स्वयंभू दिव्य शक्तियां होने का दावा करने वाले कथित संतों-महंतों के सामने रखी गई करोड़ों रूपये की चुनौती के बारे में जानकारी दी तथा बताया कि आज तक कोई भी देवपुरुष, जिसने चुनौती स्वीकार की हो, वह सोसायटी सदस्यों के सामने हार मानकर गया है।

सेमिनार के प्रमुख विषय 'ज्योतिष एक घोखा' पर ज्योतिष की वैज्ञानिक चीर-फाड़ करने वाले विशेषज्ञ श्री सुरजीत दौधर ने ज्योतिष के अवैज्ञानिक होने का प्रमाण देने वाली बारीकियों के बारे में विस्तार से समझाया। उन्होंने बताया कि ज्योतिष के कथित विद्वान भी ज्योतिष की गणनाओं पर एकमत नहीं हैं। बच्चे के जन्म के समय की गणना करते समय भी भिन्न-भिन्न ज्योतिषियों की राय भिन्न-भिन्न होती है। उन्होंने बताया कि अनेक स्थानों पर उन्होंने ज्योतिष के 'प्रकाण्ड पंडितों' को सामने आकर बहस करने की खुली चुनौती दी है, परंतु कभी भी कोई ज्योतिषी उनके वैज्ञानिक विचारों का सामना करने का साहस नहीं कर पाया ।

सेमिनार के दूसरे सत्र में 'धारा 370' का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य' विषय पर डी.एन.कालेज, हिसार के इतिहास के प्रोफेसर डा. महेन्द्र विवेक ने अपना वक्तव्य रखा। उन्होंने ऐतिहासिक दृष्टांत देते हुए समझाया कि स्वतंत्रा प्राप्ति के अवसर पर भोगौलिक क्षेत्र की आवश्यकता के चलते जम्मू-कश्मीर को भारतवर्ष का एक अभिन्न अंग बनाने के लिए विशेष रियायतों का प्रावधान करना आवश्यक था, जो कि तत्कालीन नेताओं ने किया। यदि ये प्रावधान न किये जाते तो कश्मीर प्रदेश का इतिहास कुछ और रूप भी धारण कर सकता था। वर्तमान दौर में धारा 370 पर बातें करना केवल अपनी राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए ही किया जा रहा है।

कार्यक्रम के दौरान तर्कशील साथी प्रदीप जांगड़ा ने सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग्य करता हुआ एक गीत भी प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में सोसायटी के प्रदेशाध्यक्ष फरियाद सिंह सनियाणा ने साथी सुरजीत दौधर, प्रो. महेन्द्र विवेक सहित कार्यक्रम में शामिल होने वाले सभी तर्कशील कार्यकताओं एवं अन्य गणमान्य नागरिकों का धन्यवाद किया तथा तर्कशील कार्यकर्ताओं से अपील की कि समाज से अंधविश्वास जैसी बुराई को हमेशा के लिए दूर करने के लिए तर्कशील साहित्य का अधिक से अधिक अध्ययन करें तथा समाज सेवा में जुटे रहें। इस कार्यक्रम में मंच का संचालन सोसायटी के महसचिव राजेश पेगा ने बेहतरीन अंदाज में किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में स्थानीय इकाई के सदस्यों सत्यवान मुगलपुरा, रमेश चमारखेड़ा, सूरजभान, राम प्रसाद, रविन्द्र भूना, अजय एडवोकेट, सूरज भान, सुरेश रणवा एवं दयानन्द इत्यादि साथियों ने अपना विशेष योगदान दिया।

जुगनुओं सा मैं जलता रहा रात भर
और अंधेरे मुझे यूं डराते रहे
कोशिशें मैं ने भी न छोड़ी मगर
सपनों में उजाले ही आते रहे।

-अज्ञात

तर्कशील सोसायटी पंजाब द्वारा जम्मू-कशमीर में तर्कशीलता का प्रसार

जिला कठुआ से इस चेतना अभियान की शुरूआत

तर्कशील सोसायटी पंजाब द्वारा जम्मू-कशमीर में तर्कशीलता का प्रसार करने की शुरूआत की गई है।

तर्कशील सोसायटी पंजाब द्वारा पंजाब के साथ ही अन्य राज्यों में भी लोगों को अंधविश्वासों में फंसाने एवं अंधविश्वासों को फैलाने वाले बाबाओं, ज्योतिषियों, तांत्रिकों इत्यादि के जनविरोधी कारनामों के खिलाफ लोक चेतना फैलाने का बीड़ा उठाया है। इस मकसद में लिए तर्कशील सोसायटी के तीन सदस्यीय टीम, जिस में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय विभाग के अध्यक्ष हरचन्द भिंडर, सहायक जसवंत जीरख एवं पटियाला इकाई के आगू राम कुमार शामिल थे। इस टीम ने जम्मू-कशमीर के जिला कठुआ से इस चेतना अभियान की शुरूआत की। यह तर्कशील कार्यक्रम कठुआ में एक कम्युनिटी हाल में पहली सिंतबर को इन तर्कशील प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्तुत किया गया।

इस दौरान तर्कशील आगू जसवन्त जीरख ने पंजाब में चल रही तर्कशील लहर के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि समाज में अंधविश्वास फैलाने के लिए जहां पर भिन्न-भिन्न प्रकार के तथा कथित संत बाबा, जयोतिषी, तांत्रिक जिम्मेवार हैं, वहीं पर कई राजनीतिज्ञ जो सरकारों में भी भागीदार हैं, भी बराबर के उतरदायी हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि इन राजनीतिज्ञों एवं बाबाओं की आपसी मिली भगत से साधारण जनता को गुमराह करके उनकी समस्याओं के वास्तविक कारणों पर पर्दा डालकर, किस्मतवादी बने रहने पर जोर दिया जाता है। उन्होंने अनेक उदाहरण देकर बताया कि कई लोग अपनी घरेलू समस्याओं के कारण मानसिक रोगी बन जाते हैं तथा इन बाबाओं, ज्योतिषियों, तांत्रिकों के चंगूल में फंस कर लाखों रुपये लुटा बैठते हैं। अन्त में थक हार कर जब वे तर्कशील सोसायटी के पास आकर अपनी आप बीत सुनाते हैं, तब सोसायटी उनकेउचित इलाज के लिए सहयोग करने के साथ-साथ उन तांत्रिकों इत्यादि के पास से लोगों से बटोर लाखों रुपये की राशि वापिस करवाने में भी सफल हुई है। उन्होंनें देवी-देवताओं एवं पीरों इत्यादि समेत अन्य अनेकों दिव्य शक्तियो ंको अपने वश में करने के दावेदारों की पोल-पट्टी खोलते हुए अनेक केसों का हवाला दते हुए स्पष्ट किया कि ऐसी कोई भी दैवी शक्ति नहीं है जिसको वश में करके कोई चमत्कार किया जा सके। उन्होंने ऐसे दावे करने वालों के लिए तर्कशील सोसायटी द्वारा रखे गये पांच लाख रुपये का ईनाम जीत लेने की भी चुनौती दी।

इसी भांति तर्कशील आगू राम कुमार पटियाला ने बहुंत जादू के ट्रिक दिखा कर स्पष्ट किया कि कोई भी ऐसी दैवी शक्ति अथवा जादू-मंत्र इत्यादि नहीं होता जिसके द्वारा किसी का कोई बिगड़ा हुआ काम ठीक किया जा सकता हो। इन ट्रिकों के वास्तिविक रहस्यों के बारे में स्पष्टकर के लोगों मे जादू-मंत्र संबंधी पाये जाते बहम-भ्रमों को दूर किया। इस कार्यक्रम में स्थानीय बच्चों मनीषा एवं दीक्षा समेत नौजवान संजय ने क्रम अनुसार 'उठो मजदूरों जागो किसानों, तुम्हारा वेला आया है' तथा 'हम सामज भी बनाएंगे, आदमी को जोड़ते हुए' समेत 'मैं क्या झूठ बोलिया?' इत्यादि गीत अपने ही अंदाज में गाकर क्रांतिकारी समय बांध दिया।

हरचंद भिंडर ने इस प्रोग्राम का प्रबंध करने वाले नवयुवकों की समस्त टीम एवं दर्शकों का विशेष धन्यवाद करते हुए यहां पर तर्कशील विचारों को संगठित होकर प्रचार-प्रसार करने का संदेश दिया और कहा कि केवल पंजाब, हरियाणा में ही नहीं बल्कि भारत के अन्य राज्यों खासतौर पर महाराष्ट्र, 35

आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, केरल,कर्नाटक, उड़ीसा एवं तेलंगाना आदि में भी तर्कशील संगठन अंधविश्वास फैलाने वाली ताकतों को टक्कर देकर लोगों में वैज्ञानिक चेतना पैदा कर रहे हैं। इसके साथ ही उन्होंने जिज्ञासा वाले प्रश्नों के उत्तर भी दिये। प्रगतिशील विचारों के धारक मा. कुलबीर ने मंच संचालन किया। जिला कठुआ के नौजवान प्रबंधकों की टीम में एडवोकेट धीरज, राजू एवं उनकी पत्नी सुल्ताना, गिन्नी, बलबीर, संजय, राजेश आदि ने इस कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करने एवं इसे सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। समस्त लोगों ने इस कार्यक्रम के प्रस्तुतिकरण की भरपूर प्रशंसा की तथा तर्कशील विचारों को अपने क्षेत्र से प्रचार-प्रसार करने के लिए हर प्रकार का सहयोग देने की उत्सुकता दिखई। प्रबंधकों द्वारा शीघ्र ही इसे सांगठनिक रूप देकरआगे बढ़ाने का निर्णय लिया गया।

अंधविश्वास के खिलाफ खड़ा दृढ़ विश्वास

पिछले 50 साल से अंधविश्वास के खिलाफ जागरूकता फैला रहे प्रबीर घोष का दावा, मेरे सामने करें चमत्कार तो दूंगा 50 लाख का इनाम

विशाल श्रेष्ठ, कोलकाता

भारत वह देश है, जहां आज भी लोग ट्रैफिक सिग्नल से ज्यादा बिल्ली देखकर रुक जाते हैं। 12वीं सदी में भी डायन के संदेह में महिलाओं की हत्या, सांप के काटने पर डॉक्टर के पास ले जाने के बजाय ओझाा बाबा के पास ले जाकर झाड़-फूंक कराना, विभन्नि समस्याओं के समाधान के लिए तंत्र-मंत्र और जादू टोना कराना जैसे अंधविश्वास प्रचलित हैं। खासकर ग्रामीण इलाके इसकी बुरी तरह से चपेट में हैं। इन तमाम कुरीतियों के खिलाफ एक शख्स ने पिछले 50 साल से मुहिम छेड़ रखी है और 74 साल की उम्र में भी वह लोगों को अंधविश्वास के खिलाफ जागरूक कर रहे हैं।

इस शख्स का नाम है प्रबीरघोष। दमदम के मोती झील इलाके के रहने वाले प्रबीर को अपने इस अभियान के दौरान तांत्रिक? ओझा व पाखंडी बाबाओं के रोष का भी शिकार होना पड़ा। उन पर कई बार जानलेवा हमले हो चुके हैं, हालांकि इससे उनके इरादे और मजबूत होते चले गए। बंगाल के पुरुलिया जिले के बेहद पिछड़े आद्रा इलाके में बचपन बिताने वाले प्रबीर ने अंधविश्वास व उसमें जकड़े लोगों को बेहद करीब से देखा है। युयवावस्था में उन्होंने इसकी मुखालफत शुरू की। अंधविश्वास के खिलाफ जागरूकता फैलाने को उन्होंने 1985 में भारतीय विज्ञान और युक्तिवादी समिति की स्थापना की। अंधविश्वास दूर करने को उन्होंने अंग्रेजी और बांग्ला भाषाओं में अब तक 50 से अधिक पुस्तकें भी लिख डालीं हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय से एमएससी व एमए करने वाले प्रबीर का दावा है कि अगर कोई व्यक्ति उन्हें उनकी आंखों के सामने कोई भी चमत्कार करके दिखा देगा तो वे उसे 50 लाख रुपये का ईनाम देंगे।

पुरुलिया में डायन के संदेह में महिलाओं की हत्या पर लगाया अंकुशः

यह प्रबीर के अथक परिश्रम का ही नतीजा है कि आाज बंगाल के पुरुलिया जिले में डायन के संदेह में महिलाओं की हत्या की वारदात पूरी तरह थम चुकी है। प्रबीर ने बताया कि एक समय था जब यहां डायन के संदेह में सालाना करीब 100 महिलाओं की हत्या कर दी जाती थी। हमारे संगठन ने वहां घर-घर जाकर लोगों का अंधविश्वास दूर करने को लेकर काफी काम किया है। नतीजतन, पिछले दो वर्षो में वहां ऐसी एक भी वारदात नहीं हुई है।

ऐसे काम कर रहा संगठनः भारतीय विज्ञान और युक्तिवादी समिति की वर्तमान में बंगाल समेत देशभर में 100 से अधिक शाखाएं हैं। बंगाल के सभी जिलों में शाखाएं हैं। इसके अलावा झारखंड, ओडिशा, कर्नाटक, असम त्रिपुरा समेत कई राज्यों में शाखाएं फैली हुई हैं। प्रत्येक शाखा में सात से 10 लोग शामिल हैं। शिक्षक, डॉक्टर, अधिवक्ता, जनप्रतिनिधि जैसे समाज के प्रबुद्ध लोगों को लेकर इन शाखाओं का गठन किया गया है।

किशोर अवस्था में किया पाखंडी बाबा का पर्दाफाशः

प्रबीर के पिता प्रभात चंद्रघोष दक्षिण पूर्व रेलवे के अधिकरी और मां सुहासिनी घोष गृहिणी थीं। प्रबीर ने बताया-'किशोरावस्था में मैं अपने परिवार के साथ खड़गपुर आ गया था। वहां एक समुदाय विशेष के लोग एक पाखण्डी बाबा पर आंखें मूंदकर विश्वास करते थे। एक बार मैं भी उसके पास गया। बाबा हवा में हाथ हिलाकर अपने किसी भक्त को जामुन तो किसी को अंगूर दे रहा था। मुझे समझते देर न लगी कि यह कोई चमत्कार नहीं बल्कि हाथ की सफाई है। मैं उसके पास गया और तरबूज की मांग कर डाली। हाथ की सफाई से इतना बड़ा तरबूज देना संभव नहीं था, सो उसका भांडा फूट गया। '

भूत प्रेत का अस्तित्व नही

डॉ.दिनेश मिश्र

राजनांदगांव जिले के घुमका थाना क्षेत्र के ग्राम खैरा, भटगांव, सहित ग्रामीण अंचल में कुछ दिनों पूर्व कथित रूप से भूत के चीखने चिल्लाने की जो अफवाह फैली थी। इसका पता चलने पर अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डॉ. दिनेश मिश्र और उनकी टीम खैरा, भटगांव, ठेलकडीह पहुंची। ग्रामों का भ्रमण किया, ग्रामीणों से मिले, उनसे चर्चा की और सच्चाई का पता चला।

यह ज्ञात हुआ कि यह आवाजें भूतप्रेतों की न हो कर कुछ लोगों की शरारत थी जो कृत्रिम आवाजें निकाल कर डराते थे। बिना स्वर यंत्र की कोई आवाज नहीं होती, स्वरयंत्र प्रकृतिक रूप सभी मनुष्य और पशु में होता है, वहीं कृत्रिम रूप से मशीनों, लाऊडस्पीकर, माईक, मोबाइल आदि से आवाज प्रसारित की जाती है, जिन्हें तुरंत या रेकॉर्ड कर के भी प्रसारित किया जाता है, रात के अंधेरे व सन्नाटे में लोग अनजान आवाजों से भयभीत हो जाते हैं जो डर का कारण और बाद में वही डर अफवाह का रूप ले लेता है। ग्राम खैरा जिस तरह की आवाज और कथित भूत की जो अफवाहें सामने आई है वह आवाज किसी पशु की भी हो सकती है और किसी की शरारत ।

हमारी टीम सबसे पहले ग्राम खैरा की सरपंच श्रीमती सरस्वती कौशिक से मिलने उनके घर ग्राम भटगांव पहुंची। वहां खैरा गांव में फैली कथित भूत के चीखने की आवाज व अफवाह को लेकर चर्चा की । उन्होंने बताया कि उन्हें व उनके पति को जैसे ही इस तरह की खबर मिली तीन दिनों तक रात में उनके पति स्वयं उक्त कथित आवाज को सुनने गए थे लेकिन उन्हें कोई डरावनी आवाज सुनाई नहीं दी पर उक्त आवाज को लेकर तरह-तरह की बातें बस सुनाई देती रहीं, और अफवाह फैलती गयी। हमारी टीम के सदस्यों अरुण शुक्ल,आशीश शुक्ला, खेमराज देवांगन ने महिला सरपंच से अफवाहों पर ध्यान न देने की अपील

गांव के एक युवक ने बताया कि इस मुद्दे पर किसी अनजान व्यक्तियों से चर्चा करने मनाही है । फिर भी धीरे-धीरे जब चर्चा हुई तब बात-चीत में कई ग्रामीणों ने अफवाह की शुरूवात की बातें बताई कि कुछ लोग रात के वक्त मनोरंजन के लिए खेलते बैठे थे तभी उन्हें चीखने जैसी आवाज खेत की ओर से सुनाई दी। यह आवाज तीन दिनों तक आई उसके बाद पूरे गांव में भूत के चीखने का हल्ला हो गया। गांव के कुछ लोग उक्त आवाज को गांव के दो जवान युवकों की मौत से जोडने लगे तो कोई कुछ और इससे गांव में भ्रम, डर का माहौल निर्मित हो गया। पहले जब बीमारियों व प्राकृतिक आपदाओं के संबंध में जानकारी नहीं थी तब यह विश्वास किया जाता था कि मानव व पशु को होने वाली बीमारियां जादू-टोने से होती है। बुरी नजर लगने से, देखने से लोग बीमार हो जाते हैं तथा इन्हें बचाव के लिए गांव, घर को तंत्र-मंत्र से कथित रूप से बांधा जाता था ।

कोई भी व्यक्ति संक्रमण इंफेक्शन होने से बीमार होता है, जो कि बैक्टीरिया, वायरस फंगस से होते है, कुपोषण, और दुर्घटनाओं से भी व्यक्ति बीमार अशक्त हो जाता है, संक्रमण, कुपोषण, दुर्घटनाओं से ही व्यक्ति को बीमारियां और मृत्यु होती है, किसी भी तन्त्र, मंत्र, श्राप देने से न ही किसी को बीमार किया जा सकता है और न जान से मारा जा सकता है, इन प्रकार के दावे न केवल अवैज्ञानिक है बल्कि अंधविश्वासपूर्ण और हास्यास्पद भी हैं।

अनेक जाति, धर्म के लोग है जिनकी परंपराएं व आस्था भी भिन्न-भिन्न है लेकिन धीरे-धीरे कुछ अंधविश्वासों के रूप में बदल गई हैं, जिनके कारण आम लोगों को न केवल शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना से गुजरना पड़ता है बल्कि ठगी का शिकार होना पड़ता है। कुछ चालाक लोग आम लोगों के मन में बसे अंधविश्वासों, अशिक्षा व आस्था का दोहन कर ठगते हैं। उन अंधविश्वासों व कुरीतियों से लोगों को होने वाली परेशानियों व नुकसान के संबंध में समझा कर ऐसे कुरीतियों का परित्याग किया जा सकता है।

★★★

केस रिपोर्ट

तानाशाही व्यवहार की घुटन के चलते

-बलवंत सिंह, लेक्चरार

गुरदेव सिंह अपने मां-बाप का इकलौता लड़का है। उसके बचपन में ही उसके सिर से पिता का साया उठ गया था। उनकी अपने गांव में 24-25 एकड़ कृषि योग्य भूमि है। पिता के देहान्त के पश्चात् उसकी मां ने सारी जमीन ठेके पर चढ़ा कर घर का कामकाज संभालना शुरू कर दिया था। उपजाऊ होने के कारण उनकी जमीन काफी मंहगे ठेके पर चढ़ जाती थी, जिससे उन के घर की आर्थिक दशा पर्याप्त रूप से सम्पन्न थी। गुरदेव को अपने इलाके के बेहतरीन स्कूल में शिक्षा दिलवाई गई। परंतु अत्यधिक लाडला होने के कारण वह पढ़ाई की ओर पूरा ध्यान नहीं देता था। जैसे कैसे उसने दसवीं फिर बारहवीं बोर्ड की परीक्षाएं उतीर्ण कर ली थी। फिर उसने शहर में एक कालेज में बी. ए. में दाखिला ले लिया। कालेज का खुला माहौल और घर से मिलने वाले जरूरत से ज्यादा रूपये-पैसे के कारण उसकी बहुत बड़ी मित्र मण्डली बन गई। अतः वह कालेज में क्लास अटेंड करने के बजाए घूमने फिरने व मौजमस्ती करने में अधिक ध्यान देने लग गया। कालेज में कई वर्ष बिताने के बावजूद वह बी.ए. उत्तीर्ण नहीं कर सकता। फिर रिश्तेदारों के समझाने पर उसकी मां ने उसकी शादी तय कर दी।

अपना रिश्ता तय करते समय गुरदेव नेइस बात का ध्यान रखा कि लड़की सुंदर होने के साथ-साथ अच्छी पढ़ी लिखी भी हो। गुरदेव के कई रिश्तेदार अमेरिका, कनाडा आदि देशों में बसे हुए थे। अतः उसकी इच्छा थी कि उसकी पत्नी आईलेट्स कर ले, जिस के चलते वे दोनों पति-पत्नी कनाडा में जा सकें। अगर वे दोनों कनाडा में स्थाईतौर पर बस जाएं तो अपनी मां को वहां बुला ले जाना कोई मुश्किल बात नहीं थी। इन सभी गुणों में खरी उतरती उसे गुरविन्द्र कौर ही लगी। अतः गुरविन्द्र कौर के साथ उसका रिश्ता तय हो गया और कुछ महीनों के पश्चात् उनकी शादी भी हो गई।

शादी के बाद कुछ महीनों तक तो उनके घर का माहौल बेहद सौहार्द पूर्ण रहा। कुछ महीने तो दोनों के पासपोर्ट बनवाने व गुरविन्द्र की आइलेटस की तैयारी में बीत गये। पहली बार में गुरविन्द्र कौर आइलेट्स में अधिक अंक नहीं प्राप्त कर सकी। इस दौरान में गुरदेव अपने मन में कनाडा जा कर बस जाने के सपने सजाता रहता था। उसे पूर्ण विश्वास था कि गुरविन्द्र पहली बार में ही सात बैंड प्राप्त कर लेगी। परंतु गुरविन्द्र साढ़े पांच बैण्ड ही प्राप्त कर सकी। कनाडा भेजने के लिए जिस एजेंट के साथ गुरदेव का तालमेल था, उसका कहना था कि कनाडा की फाईल लगाने के लिए कम से कम छह बैण्ड की आवश्यकता है। गुरेदव लगातार भाग दौड ़करता फिर रहा था। इसी दौरान उसकी मुलाकात एक ऐसे ऐजेंट से हो गई जो दावा करता था कि पैसे थोड़ा ज्यादा लगेंगे परंतु इतने ही बैंड में वह दोनों को कनाड़ा में सैटल करवा देगा। उसकी मनमोहक बातों से प्रभावित होकर गुरदेव ने उससे 'सौदा तय' कर लिया। उस एजेंट ने शुरूआती खर्चे के तौर पर चार लाख रूपये की मंग की और शेष राशि उनके कनाडा पहुंचने पर लेने का वादा कर लिया।

अभी जमीन के ठेके के पैसे आने में काफी समय शेष था। इस हालात में एकदम चार लाख रूपये की राशि एकत्र करना उनके लिए मुश्किल था। उसने योजना बनाई कि उसकी पत्नी के पास मायके वाले एवं ससुराल वाले मिला कर सात-आठ लाख रूपये के आभूषण हैं। उनको अगर बैंक में रख कर लोन ले लिया जाए तो आसानी से चार लाख रुपये मिल सकते हैं। उसने अपनी मां व अपनी पत्नी के साथ इस बारे में सलाह की। गुरविन्द्र ने

साफ तौर पर कह दिया कि ससुराल वाले आभूषण तो वह देने के लिए तैयार है परंतु अपने मायके वालों द्वारा दिये गये आभूषण वह नहीं देगी। अब केवल ससुराल वाले आभूषण बैंक में रखने पर चार लाख रूपये की राशि उन्हें मिल नहीं सकती थी। अतः बात को लेकर परिवार में तनाव पैदा होना शुरू हो गया। रिश्तेदारों के समझाने पर गुरविन्द्र ने अपने मायके वाले आभूषण भी अपने पति को सौंप दिये, परंतु फिर भी परिवार में तनाव पूरी तरह से खत्म नहीं हो सका। गुरदेव ने आभूषण बैंक में गिरवी रख कर बैंक से चार लाख रूपये के लेकर एजेंट को दे दिए। एजेंट ने दावा किया कि एक महीने के अंदर-अंदर वह उन दोनों को कनाडा में भिजवा देगा। कुछ दिनों तक तो गुरदेव की उस एजेंट से फोन पर बातचीत होती रही, परंतु महीना पूरा होने से कुछ दिन पूर्व ही ही एजेंट का फोन बन्द आना शुरू हो गया। पेरशान हो कर गुरदेव जब उस एजेंट के दफतर में पता करने गया तो वहां से पता चला कि वह एजेंट गुरदेव जैसे अन्य कई लड़कों के भी पैसे डकार कर भाग गया है और कई दिन से उस का दफ्तर भी बन्द पड़ा है।

यह सुनकर गुरदेव के मन को भारी आघात लगा। जब यह बात उसने घर पर आकर अपनी मां व पत्नी को सुनाई तो सुन कर वे भी बहुत परेशान हो गई। अब परिवार के सदस्यों में तनाव और भी बढ़ने लग गया। गुरदेव को बात-बात पर गुस्सा आने लग गया। वह अपनी मां के समाने तो बोल नहीं पाता था, उसके क्रोध का निशाना आमतौर पर उसकी पत्नी ही बनती थी। गुरविन्द्र द्वारा अपने मायके वाले आभूषण देने से इनकार करने पर उसकी सास उससे उसी समय से ही जलीभुनी फिर रही थी। अब तो जैसे उसे गुरविन्द्र पर मानसिक अत्याचार करने का पूरा प्रमाण-पत्र मिल गया हो। वह गुरविन्द्र को बात-बात पर ताने देने लग गई। उसके अपने बेटे गुरदेव के कान भरने शुरू कर दिये कि 'गुरविन्द्र की नीयत साफ नहीं थी, इसीलिए एजेंट तुम्हें घोखा देकर भाग गया है। यदि इस की नीयत साफ होती तो यह आभूषण देने में आनाकानी न करती।' अपनी मां की ऐसी बातें सुनकर गुरदेव भी बिना सोचे पत्नी को ही अनहोनी का जिम्मेदार मानने लग जाता तथा अपनी पत्नी को मानसिक तौर पर तथा शारीरिक तौर पर पड़ताड़ित करने लग जाता।

रोज-रोज की परेशानी से तंग आ कर एक दिन गुरविन्द्र ने फोन पर अपने मायके वालों को अपने पर होने वाले अत्याचार की सारी व्यथा सुना डाली। यह सुन कर उसके मायके वाले अपने कई रिश्तेदारों को साथ लेकर गुरविन्द्र के ससुराल में पहुंच गये। उनकी पंचायत को देखकर गुरविन्द्र की सासा आग-बबूला हो गई। उसने अपने समधी द्वारा बुलाई पंचायत का स्वागत करने की बजाए उन्हें खरी-खोटी सुनानी शुरू कर दी तथा साथ ही अपने गांव वालों को बुला लिया। गांव वालों के सामने वह नौटंकी करने लग गई कि पहले तो बहु मेरे को परेशान करती रहती थी और अब अपने मायके वालों को बुलवा कर मुझे व मेरे बेटे को यह पिटवाना चाहती है।' उसकी नौटंकी के प्रभाव में आकर गांव वाले किसी पंचायती सुलह-सफाई की बात करने के बजाय, घर में आए हुए मेहमानों से उलझ पड़े। इस दौरान कई तो हाथापाई पर भी उतर आए।

ऐसी हालत में गुरविन्द्र को उसके मां-बाप ने अपने साथ ले जाना मुनासिब समझा। मायके में रह कर गुरविन्द्र और भी पेरशान रहने लग गई। इधर पत्नी के चले जाने के पश्चात् गुरदेव भी मानसिक तौर पर ज्यादा परेशान रहने लग गया। इसी कशमकश में पांच-छह महीने बीत गये। इधर दोनों परिवारों के हमदर्द रिशतेदारों एवं स्नेहियों ने दोनों तरफ के मन मुटाव दूर करने के प्रयत्न तेज कर दिये। हमदर्द रिश्तेदारों के प्रभाव से तथा गुरदेव व गुरविन्द्र की आपसी कशिश के कारण उनके सभी गिले-शिकवे दूर हो गये। गुरदेव और गुरविन्द्र को एक दूसरे से कोई शिकायत नहीं थी। उन दोनों में आपस में अत्यधिक प्रेम था। यह तो हालात की परेशानियों में एवं अपनी मां द्वारा कान भरे जाने के कारण उसका अपनी पत्नी के साथ झगड़ा हो गया

था। अब जब उनका सार मनमुटाव दूर हो गया तो गुरदेव अपनी पत्नी को सम्मान सहित अपने घर में ले आया।

अब उन पति-पत्नी में को कोई गिला-शिकवा शेष नहीं रहा था परंतु गुरविन्द्र की सास का व्यवहार उसके प्रति अभी भी रूखा ही बना हुआ था। बचपन में पिता का साया सिर से उठ जाने के कारण और मां द्वारा गुरदेव का विशेष परिस्थितियों में पालन-पोषण किये जाने के कारण, वह अपनी मां का चाहते हुए भी विरोध नहीं करता पता था। गुरदेव द्वारा अपनी मां की ज्यादतियों का विरोध न कर सकने के कारण उसकी मां का अपनी बहू के प्रति व्यवहार और अधिक कठोर बनता चला गया। अब अपनी सास के यातनापूर्ण व्यवहार से गुरविन्द्र मन ही मन में कुंठित होती चली गई। सास द्वारा गुरविन्द्र पर अनेक प्रकार की पाबंदिया लगा दी गई थीं। सास ने घर में फरमान जारी कर दिया कि यदि गुरविन्द्र अपने मायके में कभी जाना चाहे तो वह अकेली ही जा सकती है, गुरदेव उसके साथ नहीं जाएगा। क्योंकि पहले हुए झगड़े के दौरान गुरविन्द्र के मामा तथा फूफा ने खुलकर गुरविन्द्र का पक्ष लिया था तथा लड़ाई की नौबत को देखते हुए अपनी बंदूक भी निकाल ली थी। इस कारण सास ने गुरविन्द्र को सख्त आदेश कर दिया कि वह अपने मायके में मिलने के लिए तो जा सकती है परंतु अपने मामा तथा फूफा के घर कभी भी मिलने के लिए नहीं जा सकती। गुरदेव भी अपनी मां के इन तानाशाहीपूर्ण आदेशों का विरोध नहीं कर पा रहा था। उसने अपनी मां के तानशाही रवैये के सामने एक प्रकार से आत्मसमर्पण कर दिया था। एक तो गुरविन्द्र अपनी सास के तानाशाही रवैये परेशान रहती थी, ऊपर से अपने पति द्वारा मां के अत्याचारों के सामने मौन धारण करके आत्मसमर्पण कर देने से उसके मन की कुण्ठा और बढ़ती चली जा रही थी।

ऐसी अवस्था में जब गुरविन्द्र के मन का बोझ अत्याधिक बढ़ गया और उसकी मानसिक पीड़ा सहन कर सकने की सभी सीमाएं पार कर गई तो उसे हिस्टीरिया के दौरे पड़ने शुरू हो गये। दौरे से पहले उसको हाथ-पांव कांपने लग जाते, उसकी आवाज बदल जाती और फिर वह बेसुध होकर गिर पड़ती। कभी-कभी उसे अत्याधिक क्रोध आ जाता और वह तोड़-फोड़ करने लग जाती। कभी-कभी वह अजीब सी बातें करना शुरू करदेती कि जैसे उसे कोई अपने साथ ले जाने के लिए बुला रहा हो। कभी-कभी वह अपने पहने हुए वस्त्र ही फाड़ना शुरू कर देती। ऐसी हालत में उसकी सास उसके कमरे में उसके पास बैठ कर गुरुबाणी का पाठ करने लग जाती। सास द्वारा काफी समय तक लगातार गुरुबाणी का पाठ करने के पश्चात गुरविन्द्र सामान्य हालत में आ जाती।

गुरदेव के परिवार वाले किसी संत-बाबा के श्रद्धालु थे तथा गुरविन्द्र का मायका परिवार भी किसी अन्य संत-बाबा का अनुयायी था। पहले तो गुरदेव की मां अपने पुत्र एवं पुत्रवधू को साथ लेकर अपने श्रद्धेय संत-बाबा के डेरे पर लेकर जाती रही। उस संत-बाबा के निर्देश पर उन्होंने गुरविन्द्र को उक्त डेरे के 'पवित्र तालाब' में पांच अमावस्या के स्नान करवाए तथा हजारों रूपये के उपहार उस डेरे में भेंट स्वरूप दान किये, परंतु गुरविन्द्र की हालत और अधिक गिड़ती चली गई।

जब ससुराल वाले संतों की कथित 'अपार शक्तियां' गुरविन्द्र के स्वास्थ्य में सुधार लाने में पूरी तरह से नाकाम साबित हुई तो उसके मायके वालेउसे अपने श्रद्धेय संतों की शरण में ले गये। इन संतों ने गुरविन्द्र एवं उसके पति को सवा महीना तक उनके गुरूद्वारा रूपी डेरे में श्रमदान रूपी सेवा का हुकम सुना दिया। गुरविन्द्र और उसके पति ने सवा महीना तक उस गुरुद्वारा रूपी डेरे में साथ रह कर श्रमदान की सेवा करना सहर्ष स्वीकार कर लिया। उस डेरे में सवा महीना तक सेवा करते रहने के दौरान गुरविन्द्र को किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं हुई। अपने पति के साथ सेवा करते समय वह अत्यन्त प्रसन्न रहती थी। सवा महीना बीत जाने के पश्चात् संतों ने गुरविन्द्र को एक सिमरणा (सिमरन करते समय हाथ से मनकों को फेरने वाली माला) देकर ताकीद की कि वह सुबह और सायंकाल को हाथ में माला के मनके फेरते हुए गुरुवाणी का पाठ किया करे, तो कोई बला उसे कभी तंग नहीं कर सकेगी। संतों का

आशीर्वाद प्राप्त करके वे दोनों खुशी-खुशी अपने घर वापिस आ गये।

घर वापिस आकर तीसरे दिन ही गुरविन्द्र को फिर से दौरे पड़ने शुरू हो गये। उसके पश्चात् भी वे उसे लेकर कई बाबाओ, तांत्रिकों-मांत्रिकों की शरण में गये परंतु कहीं से भी कोई आराम न मिल सका। अंत में उनके एक परिचित ने उन्हें तर्कशील सोसायटी से मामला हल करवाने की सलाह देकर उन्हें मेरे पास मनोरोग परामर्श केंद्र में भेज दिया। मैंने उन दोनों के साथ अलग-अलग विस्तार से बातचीत करके समस्या की गहराई को पहचान लिया। गुरविन्द्र के साथ मनोवैज्ञानिक तौर पर काऊंसलिंग करके उसे अपना मनोबल बढ़ाने के सुझाव दिये। मनोवैज्ञानिक काऊंसलिग के पश्चात् गुरविन्द्र अपने आपको बिल्कुल तनाव रहित एवं बेहद चुस्त-दुरुस्त महसूस सकर रही थी। मैंने गुरविन्द्र को अगले सप्ताह अपनी सास को भी साथ लेकर आने के लिए कह दिया।

अगले सप्ताह मैंने गुरविन्द्र को मनोवैज्ञानिक काऊंसलिंग द्वारा रचनात्मक सुझाव देने के पश्चात् उसकी सास को अपने पास बुला लिया। साथ ही गुरविन्द्र को निर्देश दिया कि वह बाहर खिड़की के पास खड़ी होकर मेरे और उसकी सास के मध्य में हो रही सारी बातचीत को ध्यानपूर्वक सुनती रहे। मैंने तर्कपूर्ण संवाद के द्वारा उसकी सास के मन में बैठे मिथ्या आडंबर को चकनाचूर कर दिया। पहले पहल तो वह मेरे सामने भी अड़ियल रवैया अपना रही थी। परंतु मेरी तर्कपूर्ण दलीलों के सामने उसे झुकना ही पड़ा। अन्त में उसने वचन दिया कि आगे से कह अपनी बहू पर अपने तानाशाही आदेश नहीं लादेगी, उसके साथ मिलजुल कर रहेगी। उसे अपने सभी रिश्तेदारों के पास आने जाने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करेगी। उसे कभी किसी प्रकार की शिकायत का मौका नहीं देगी।

उसके पश्चात् गुरविन्द्र को कभी किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं हुई।

नोटः यह एक सत्य घटना है, परिस्थितिवश पात्रों के नाम बदल दिये गये हैं। ०००

पृष्ठ 15 का शेष.. (पलासिबो...)

लिए जो विधि प्रयोग में लाई जाती है, उसमें दवाई के साथ-साथ प्लासिबो का प्रयोग किया जाता है।

इन प्रयोगों में दवाई के नमूनों के दो सेट तैयार किये जाते हैं, जो कि प्रत्येक पक्ष से देखने में एक जैसे लगते हैं। परंतु वारस्तव में एक सेट में वास्तविक टैस्ट वाली दवाई होती है तथा दूसरे सेट में दवाई न हो कर प्लासिबो होती है। प्रयोग करने वाले विज्ञानी एवं रोगी अथवा अन्य कोई व्यक्ति, जिन पर प्रयोग किया जाना होता है, दोनों को इस के बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं होती। ऐसा करने पर जब परिणाम निकाले जाते हैं तो वास्तविक दवाई द्वारा आने वाले परिणामों का मिलान प्लासिबो के साथ आने वाले परिणामों के साथ किया जाता है, जिनके आधार पर प्लासिबो इफेक्ट को नजरअंदाज करके दवाई के अपने वास्तविक परिणामों पर पहुंचा जा सकता है।

नैतिक पक्ष से देखने पर रोगी को प्लासिबो देना उचित नहीं है, परंतु कई सर्वेक्षणों में यह देखा गया है कि 25-40 प्रतिशत डाक्टर कभी न कभी रोगियों को सीधे अथवा विपरीत तरीके से प्लासिबो देते हैं। सीधे तौर की आम उदाहरण है कि यदि रोगी बिन जरूर के बार-बार दर्दनिवारक अथवा नींद आने की दवाई अथवा टीके की मांग कर के तंग करता है तो कई बार रोगी की तसल्ली के लिए प्लासिबो का सहारा लिया जाता है। कई रोगियों को वैसे ही आदतवश अथवा मनोभ्रम के कारण आवश्यकता से अधिक दवाई मांगने की आदत हो जाती है, ऐसे रोगियों को कई डाक्टर सही दवाई के साथ-साथ कोई विटामिन अथवा कोई और इस प्रकार की दवाई बतौर प्लासिबो दे देते हैं।

प्लासिबो इफैक्ट एवं होम्योपैथीः

बहुत से आिनिक वैज्ञानिकों का मत है कि होम्योपैथी दवाईयां भी प्लासिबो इफेक्ट के कारण ही रोग पर प्रभाव डालती हैं। इस विषय पर बहुत खोज हो चुकी है।

(भूतपूर्व प्रिंसीपल/प्रोफेसर एवं अध्यक्ष-मनोरोग विभाग, नशामुक्ति विभाग, राजिन्द्र अस्पताल, पटियाला)

(हिंदी अनुवादः बलवंत सिंह लेक्चरार)

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस

प्रत्येक साल 10 अक्टूबर को पूरी दुनिया में मनाया जाता है. यह दिवस मानसिक स्वास्थ्य के विषय में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से मनाया जाता है.

व्यक्ति के लिए शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य भी स्वस्थ रखना बहुत जरूरी होता है. कोई भी व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ रहता है तो अपनी क्षमता से अधिक कार्य करने की कोशिश करता है, लेकिन व्यक्ति मानसिक रूप से अस्वस्थ रहेगा तो उसकी कार्यक्षमता पर प्रभाव पड़ता ह।

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस का उद्देश्यः

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस का मुख्य उद्देश्य विश्वभर में मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाना है. विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस मनाने का एक मुख्य कारण यह भी है की विश्व में हर वर्ग के लोगों को इस बीमारी के बारे में पता चले तथा वो उस लिहाज से उसके बचाव हेतु पहले से तैयार रहें.

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस की थीमः

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस 2019 की थीम "आत्महत्या की रोकथाम' (Suicide Prevention)' रखी गई है. इस बार का विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस का थीम 'आत्महत्या की रोकथाम' इसलिए रखा गया है क्योंकि बढ़ती हुई आत्महत्यों के बारे में लोगों को बताना है तथा इस दिवस के बारे में लोगों को जागरूक करना है. लोगों के बीच मानसिक परेशानी की रोकथाम की शुरूआत जागरूकता बढ़ाकर तथा मानसिक रोग के प्रारंभिक चेतावनी संकेतों एवं लक्षणों को समझाकर करनी चाहिए.

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस का इतिहासः

विश्व मानसिक स्वास्थ्य संघ ने साल 1992 में विश्वभर के लोगों के मानसिक स्वास्थ्य देखभाल को वास्तविक रूप देने हेतु विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस की स्थापना की थी. विश्व स्वास्थ्य संगठन छ्वडब्ल्यूएचओ॰ के अनुसार लगभग 450 मिलियन लोग वश्वभर में मानसिक विकार से ग्रस्त हैं.

चार व्यक्तियों में से एक व्यक्ति मानसिक विकार से ग्रस्त

डब्ल्यूएचओ के अनुसार, विश्वभर में चार व्यक्तियों में से एक व्यक्ति मानसिक विकार से ग्रस्त है. इनमें लगभग 10 साल से 19 साल की उम्र के व्यक्तियों की वैश्विक रोग भार में 16 फीसदी हिस्सेदारी है.

मानसिक रोग क्या है ?

;मानसिक रोग बहुत से प्रकार का हो सकता है. इसमें मस्तिष्क से जुड़े प्रत्येक तरह की समस्याओं को शामिल किया जा सकता है. जैसे अल्जाइमर, अ टिज्म, डिप्रेशन, तनाव, चिंता, डिस्लेक्सिया, कमजोर याददाश्त, डर लगना, भूलने की आदत आदि है.

मानसिक रोग के कारण क्या है ?

मानसिक रोग होने के बहुत से कारण हो सकते है. मानसिक रोग होने का अधिक संभावना उन लोगों में होता है जिनके रिश्तेदारों को भी मानसिक बीमारी होती है. न्यूरोट्रांसमीटर स्वाभाविक रूप से वातावरण के प्रभाव में मस्तिष्क के रसायनों को आपके दिमाग तथा शरीर के अन्य भाग में ले जाता है. इनसे जुड़े तंत्रिका तंत्र जब ठीक से काम नहीं करता हैं तो तंत्रिका तंत्र में कुछ परिवर्तन हो जाते हैं और लोगों को डिप्रेशन की समस्या हो जाती है. कभी-कभी शराब या ड्रग्स के पीने से भी मानसिक रोग हो सकते हैं.

मानसिक रोग के लक्षण क्या है ?

मानसिक रोग के कुछ लक्षण इस प्रकार है जैसे की उदास रहना, व्याकुल होना, मन न लगना, डर लगना, बार-बार मन में परिवर्तन होना, थकान, कमजोरी होना तथा नींद में दिक्कतों का सामना करना आदि. दैनिक कार्यो में कभी-कभी असमर्थता तथा भूलने की समस्या होना भी मानसिक रोग के लक्षण है.

मानसिक रोग को दूर करने के उपायः

मानसिक रोग को दूर करने का सबसे बढ़िया उपाय आत्मविश्वास बढ़ाना तथा खुद की एहमियत एवं कीमत को समझना है. अपने परिवार के साथ थोड़ा समय बिताने की कोशिश करना चाहिए. मानसिक रोग को दूर करने के लिए अपने आप को जितना हो सके व्यस्त रखे. इस रोग को दूर भगाने का सबसे मुख्य और आसान तरीका मनोचिकित्सक की सलाह लेना भी है.;

भविष्यवाणी

-डा. हरीश मल्होत्रा ब्रमिंघम
मोः 00447763013424

क्या आपने कभी सोचा है कि आपका एवं आपके परिवार का भविष्य कैसा होगा? क्या यह खुशियों से परिपूर्ण होगा अथवा मुश्किलों से भरा हुआ ? क्या आपकी ज़िंदगी में प्रेम की प्राप्ति होगी अथवा अकेलापन मिलेगा? क्या आप दीर्घायु को प्राप्त होंगे अथवा अल्पायु को? हजारों वर्षों से लोग इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर जानने का प्रयत्न करते आए हैं।

वर्तमान समय में विश्वभर में घटित हो रही घटनाओं के बारे में जानकर एवं विश्लेषण करके माहिर लोग भविष्य के बारे में अनुमान लगाते हैं। भविष्य के बारे में बताई गई उनकी अनेकों बातें सत्य प्रमाणित हुई हैं जबकि अनेक बातें पूर्णतः झूठी साबित हुई हैं। उदाहरण स्वरूप 1912 ई. में बेतार वाले टेलीग्राफ का आविष्कार करने वाले गूल्येलमो मार्कोनी ने भविष्यवाणी की थीः 'बेतार वाली टेक्नॉलॉजी के कारण युद्ध पूरी तरह से समाप्त हो जाएंगे।' परंतु हम जानते हैं कि प्रथम विश्व युद्ध 1914 से 1918 तक चलता रहा तथा द्वितीय विश्वयुद्ध 1939 से 1945 तक चला। इसी प्रकार ही डेका रिकार्ड कम्पनी के एक एजेंट ने 1062 में बीटल्ज नाम के एक ग्रुप को नकार दिया क्योंकि उस को विश्वास था कि गिटार बजाने वाले ग्रुप प्रसिद्ध नहीं हो सकेंगे, परंतु हम सभी को ज्ञात है कि यह बीटल्ज़ ग्रुप अत्याधिक प्रसिद्ध हुआ।

दुनिया के बहुत से लोग भविष्य के बार में में जानने के लिए अलौकिक शक्तियों का सहारा लेते हैं। कुछ लोग ज्योतिषियों से सलाह लेते हैं। बहुत सी पत्रिकाओं एवं अखबारों में राशिफल प्रकाशित होते हैं तथा कुछ ज्योतिषी ये राशिफल टी.वी. एवं रेड़ियो पर भी बताते हैं। कुछ लोग उन व्यक्तियों के पास जाते हैं जास टेरी कार्ड, नंबरों के हिसाब से अथवा माथा देख कर एवं हाथ की रेखाओं को पढ़कर भविष्य बताने का दावा करते हैं।

भविष्य के बारे में जानने के लिए पुरातन समय में कुछ लोग उन पुरुष-महिलाओं के पास जाते थे जो कि पुच्छा देते थे। इस प्रकार का मकड़जाल भारत के गांवों एवं नगरों में साधारणतः देखा जा सकता है। हज़ारों की संख्या में धार्मिक स्थान, बाबा लोग, साधुओं के डेरे भी इस प्रकार का धंधा करते हैं तथा सड़कों के किनारों पर पक्षियों एवं जानवरों द्वारा भी लोगों का भविष्य फल बताया जाता है।

उदाहरण के तौर पर, कहा जाता है कि लिडिया के राज क्रीसस ने डेल्फी यूनान के पुच्छा देने वाले को बहुमूल्य उपहार भेजकर याचना की थी कि वह यह पता लगाये कि यदि वह फारस के राजा खोरूस के साथ युद्ध करे तो इसका क्या परिणाम निकलेगा? पुच्छा देने वाले ने कहा कि यदि क्रीसस खोरूस के विरुद्ध युद्ध करेगा तो एक 'महान साम्राज्य' का नामोनिशान मिट जाएगा। विजय का विश्वास होने के कारण क्रीसस युद्ध के लिए निकल पड़ा, परंतु जिस महान् साम्राज्य का अंत हुआ, वह क्रीसस का अपना साम्राज्य था।

डेल्फी शहर के पुच्छा देने वाले ने कैसे क्रीसस को गुमराह करने वाली जानकारी दी जिस के कारण वह फारस के राजा के हाथों परास्त हो गया। अतः पुच्छा देने वाले द्वारा की गई अस्पष्ट भविष्यवाणी बेकार साबित हुई। गलत जानकारी मिलने के कारण क्रीसस को इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी।

यूनानी इतिहासकार हेरोडोट्स के अनुसार खोरस के सैनिकों ने बाबल नगर के गिर्द बहरी फरात नदी के पानी का मोड़ दिया। खोरस की इस योजना के कारण उसके सैनिक नदी के द्वारा शहर में प्रवेश कर सके। नगर पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् खोरस ने गुला यहूदियों को आजाद कर दिया, साथ ही उन्हें 70 वर्ष पूर्व विनाश किये गए यूरोशलम शहर के पुर्निमाण की अनुमति प्रदान की।

फारस नगर की दीवार में बने हुए दो किवाडों वाले विशाल दरवाजे में से खोरस के सैनिक अंदर प्रवेश कर गये थे, जो कि लापरवाही के कारण खुले रह गये थे। यदि बाबल निवासियों को खोरस की योजना का पता होता, तो वे नदी की ओर वाले दरवाजे बन्द कर सकते थे। परंतु सत्य तो यह था कि अब नगर असुरक्षित था तथा खोरस ने किसी पुच्छा देने वाले से मशविरा नहीं लिया था बल्कि सोची समझी योजना के मुताबिक खतरों को मोल लेकर युद्ध लड़े थे। क्या वर्तमान समय में प्रसिद्ध ढंग-तरीकों के साथ भविष्य जानने वाले लोगों को कोई लाभ हुआ है।

ज्योतिष विद्या अलौकिक शक्तियों की सहायता से भविष्य के बारे में पता लगाने का एक तरीका है जिसमें माना जाता है कि तारे, चंद्रमा एवं अन्य ग्रह मानव के जीवन पर प्रभाव डालते हैं। ज्योतिषी दावा करते हैं कि किसी जन्म के समय पर आकाशीय पिण्ड जिस जगह पर होते हैं, उसका मानव के व्यक्तित्व एवं भविष्य पर प्रभाव पड़ता है।

यद्यपि ज्योतिष विद्या का प्रारम्भ बहुत समय पूर्व बाबल में हुआ था, परंतु यह आज भी प्रसिद्ध है। अमेरिका में 2012 में एक सर्वे किया गया जिस में 33 प्रतिशत लोगों ने कहा कि ज्योतिष विद्या पूरी तरह से विज्ञान पर आधारित है। क्या यह बात सत्य है? नहीं। आओ देखें कि क्यों?

★ ज्योतिषियों के कथन के विपरीत ग्रहों एवं तारों में ऐसी कोई शक्ति नहीं निकलती जिसका व्यक्तियों के व्यक्तित्व एवं भविष्य पर कोई प्रभाव पड़ सकता हो।

★ ज्योतिषियों द्वारा की गई भविष्यवाणियों में बहुत ही साधारण बातें बताई जाती हैं जो किसी पर भी लागू हो सकती हैं ।

★ ज्योतिषी एक अत्यंत प्राचीन विश्वास के आधार पर भविष्य बताते हैं कि ग्रह पृथवी के गिर्द चक्कर लगाते हें, परंतु सत्य तो यह है कि ग्रह सूर्य के गिर्द चक्कर लगाते हैं।

★ भिन्न-भिन्न ज्योतिषी एक ही व्यक्ति का अलग-अलग भविष्य बताते हैं।

★ ज्योतिष विद्या के अनुसार जन्म तिथि के आधार पर लोगों को 12 राशि चिन्हों में से एक चिन्ह दिया जाता है। प्रत्येक राशि चिन्ह के लिए कुछ तिथियां निश्चत की गई हैं। जिस तिथि को सूर्य किसी तारामण्डल में से गुज़रता हुआ दिखाई देता था, उसके आधार पर राशि चिन्ह बनाए गये थे। परंतु अब अंतरिक्ष में पृथ्वी का स्थान बदल जाने के कारण जिन तिथियों के लिए कोई राशि चिन्ह निश्चत किया गया था, वह बदल गया है। इसलिए इन राशि चिन्हों एवं तिथियों का कोई मतलब नहीं।

कहा जाता है कि किसी व्यक्ति के राशि-चिन्ह से उसके स्वभाव के बारे में पता लगता है। परंतु वास्तविकता तो यह है कि एक ही समय पर जन्म लेने वाले व्यक्तियों में एक समान गुण अथवा अवगुण नहीं होते। जन्म की तारीख से किसी व्यक्ति के स्वभाव के बारे में कुछ भी पता नहीं चलता। ज्योतिषी यह नहीं मानते कि प्रत्येक इन्सान का अपना व्यक्तित्व होता है, परंतु वे कुछ धारणाओं के आधार पर बताते हैं कि किसी का स्वभाव किस प्रकार का है। क्या ऐसा करना उचित है? यह हमें ज्ञात है कि प्राचीन समय से ही लोग भविष्य बताने वालों के पास जाते रहे हैं।अनेक भविष्यवेता ऐसी चीजों से भविष्य के के बारे मे ंपता लगाते हैं जैसे कि जानवरों एवं इन्सानों के आंतरिक अंगों से अथावा मुर्गे द्वारा दाना चुगने के तरीकों से। अन्य कई भविष्यवेता चाय की पत्तियों अथवा कॉफी बनने के पश्चात् बचे चूरे के आधार पर भविष्य बताते हैं। आज भी वे टेरो कार्ड, क्रिस्टल बाल, डायस अथवा अन्य ढंग प्रयोग में ला कर भविष्य बताते हैं। क्या ऐसे तथा इस प्रकार के अन्य मिलते जुलते तरीकें द्वारा भविष्य के बारे में जाना जा सकता है? बिल्कुल नहीं; आओ देखें कि क्यों?

आओ, एकसारता के बारे में बात करते हैं। भविष्य बताने के लिए प्रयोग में जाए जाते भिन्न भिन्न ढंगों द्वारा ली जानकार एक समान नहीं होती। यहां तक कि यदि एक समान ढंग भी प्रयोग में लाए जाएं तो भी वे भविष्य के बारे में अलग-अलग बातें बताते हैं। उदाहरण स्वरूप यदि कोई व्यक्ति दो अलग-अलग ज्योतिषियों से भविष्यवाणी करवाता है तथा वे दोनों ज्योतिषी एक ही जन्त्री 'पढ़' कर

भविष्यवाणी करते हैं तो उनका उत्तर एक समान होना चाहिए। परंतु प्रायः ऐसा नहीं होता। उनके द्वारा बताए गए उपाय भी भिन्न भिन्न होते हैं।

अब ज्योतिषियों द्वारा भविष्य बताने के ढंगों पर लोगों का विश्वास कम हो रहा है। आलोचकों का कथन है कि कार्ड अथवा क्रिस्टल बाल तो बस वस्तुएं ही हैं। ज्योतिषी किसी व्यक्ति के हाव-भाव से उसे भविष्य के बारे में पता लगाते हैं, न कि कार्ड अथवा क्रिस्टल बाल से। उदाहरण के लिए एक तजुर्बेकार ज्योतिषी किसी व्यक्ति से साधारण प्रश्न पूछता है तथा उस व्यक्ति द्वारा बताई गई बातों को बहुत ध्यानपूर्वक सुनता है तथा उसके हाव-भावों को बड़े ध्यान से देखता है, जिनसे उस व्यक्ति के बारे में कुछ बातें ज्ञाात हो जाती हैं। ज्योतिषी इन बातों को जानने का सेहरा स्वयं ले लेते हैं जो कि अनजाने में उस व्यक्ति द्वारा ही उसे बताई गई होती हैं। अपने ग्राहकों का विश्वास जीतने के कारण कई ज्योतिषी उनसे मोटी कमाई करने में सफल हो जाते हैं।

सव्यसाची प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार अपने एक लेख 'लाटरी, राशि एवं मक्खी' में लिखते हैं' 'मेरे नौजवान दोस्त, आप यह सब सोच नहीं सकते, आप जीवन भर लाटरी, किस्मत एवं राशिफल के भंवरजाल में फंसे रहते हो तथा फिर भूल जाते हो कि जो 10-15 लाख व्यक्ति लाटरी ही का टिकट खरीदते हें, उनमें से केवल पांच-दस व्यक्तियों की ही जीत होती है, शेष सभी बेचारे तो बार-बार हारते एवं झूठी आशा के चक्कर में फंसे रहते हैं। अच्छा, एक बात बताओ- घनश्याम दास एवं घूरेलाल दोनों की एक ही राशि है, परंतु दोनों की किस्मत एक जैसी कैसे हो सकती है? एक ही राशि वाले हरिदास भूंदड़ा एवं हरखू एक समान सुख-दुख के सांझीदार कैसे हो सकते हैं? जबकि हरिदास भूंदड़ा का हर दिन उसके लिए अधिक खुशियां लेकर आता है, वहां पर हरखू के जीवन को प्रत्येक क्षण कर्ज, गरीबी एवं भुखमरी के ढोझ को बढ़ाता ही रहता है। आप कभी भी नहीं सोचते कि किस्मत, राशिफल एवं लाटरी एक ऐसा साजिश से परिपूर्ण खेल है जिसमें फंस जाने के पश्चात् हमारे बाहर आने का कोई भी रास्ता शेष नहीं रह जाता। क्या आपने मकड़ी देखी है? वह कितनी खूबसूरती के साथ मक्खी को अपने जाल में फंसा लेती है तथा फिर धीरे-धीरे चुस्कियां ले ले कर स्वाद के साथ उसका खून चूसती है। जाल में फंसी हुई मक्खी उस जाल में से निकल नहीं सकती क्योंकि नित्यप्रति मकड़ी उस पर अपनी जकड़न मजबूत करती रहती है। मेरे भाई धोखेबाज लुटेरों ने हम सभी को भी 'धर्म-कर्म' के इसी प्रकार के जाल में फंसा लिया है। नहीं तो करोड़ों लोग कठोर परिश्रम करने के बावजूद भी भूखे-नंगे, मुसीबतों-दुष्वारियों में क्यों घिरे रहते हैं तथा मुट्ठी भर साहूकार-सरमायेदार बगैर तिनका तोड़े केवल छलकपट के बलपर करोड़पति-अरबपति बन कर समस्त प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं खुशियों के मालिक क्यों बनते हैं?'

दुनिया में बहुत से लोग स्वार्थी, धन लोलुप, शेखीखोर, अहंकारी, निंदक, माता-पिता की आज्ञा का पालन न करने वाले, विश्वासघाती, निर्मोही, अहसान-फरामोश, दूसरों को बदनाम करने वाले, संयम न बरतने वाले, निर्दयी, धोखेबाज, जिद्दी एवं नमक हराम इत्यादि भी अनेकों लोग होते हैं। इस प्रकार के लोगों के बारे में कभी किसी ज्योतिषी ने यह नहीं बताया कि यह इस प्रकार का क्यों हैं और इस का क्या इलाज किया जाए।

कुछ अनुमानों के अनुसार, 1914 से भिन्न-भिन्न देशों में होने वाले तथा एक ही देश के अंदर होने वाले युद्धों के कारण 10 करोड़ से भी ज्यादा लोग मृत्यु का ग्रास बन चुके हैं। यह संख्या कई राष्ट्रों की कुल संख्या से भी अधिक है। जरा सोचो कि इस के कारण कितने आंसू बहे होंगे, कितना दुख हुआ होगा। क्या कभी ज्योतिषियों ने इन लड़ाइयों, झगड़ों के बारे में हमें पहले से सचेत किया था तथा बताया था कि इन से कैसे बचा जा सकता था तथा मानवता का दुख दूर किया जा सकता था?

विश्व खाद्य कार्यक्रम एजेंसी का कथन है कि, 'दुनिया भर में इतना अनाज है कि सभी लोग पेट भरकर खा सकते हैं। परंतु 81 करोड़ 50 लाख लोग अर्थात् नौ में से एक व्यक्ति अभी भी प्रतिदिन

रात को भूखे पेट सोता है, साथ ही तीन में से एक व्यक्ति किसी न किसी प्रकार के कुपोषण का शिकार है।' यह अनुमान लगाया जाता है कि प्रति वर्ष लगभग 30 लाख बच्चे भूख से मर जाते हैं। क्या कभी ज्योतिषियों ने हमें इसके बारे में कभी बताया है?

हर साल लगभग 50000 भूकंप आते हैं जिन के झटके महसूस किये जा सकते हें। लगभग 100 भूकम्प इमारतों को नुकसान पहुंचाते हैं तथा लगभग प्रति वर्ष एक बहुत बड़ा भूकम्प आता है। पिछले कुछ वर्षो से तो सुनामी भी आने लग पड़ी हैंएक अनुमान के अनुसार 1975 से लेकर वर्ष 2000 तक आए भूकम्पों के कारण 471000 लोगों की जान गई है। इन ज्योतिषियों ने हमें क्यों न खबर दी कि ऐसा होगा, जिससे समय पर इन लोगों को मौत के मुंह में जाने से बचाया जा सकता था।

प्रतिदिन बलात्कार एवं बच्चों के शोषण की खबरें प्रकाशित होती हें। चोरी-चकारी एवं डकैती भीहर रोज का किस्सा बन चुका है। हेराफेरी, धोखाधड़ी एवं झूठ का भी प्रसार हो चुका है। इन मुसीबतों के बारे में ज्योतिषी हमें पहले से ही क्यों नहीं बता देते ताकि इन पर रोक लागाई जा सके। इसके अतिरिक्त दुनिया भर की सरकारें अपने देशों में सैनिक एवं पुलिस बल रखती हैं। यदि ज्योतिषियों को भविष्य के बारे में सब कुछ ज्ञात है तो इनको संख्या घटाकर खर्चा बचाया जा सकता है। एक ही ज्योतिषी हमें सब कुछ बता सकता है कि अमुक देश दूसरे देश के बारे में क्या करने वाले है तथा देश का कौन सा नागरिक पापी है? फिर सी.आई.डी. के आफिसरों की क्या आवश्यकता है? जजों, वकीलों एवं कोर्ट कचहरियों की भी आवश्यकता नहीं। एक विशेषज्ञ ज्योतिषी से सारा सत्य जाना जा सकता है तथा दोषी को सजा दी जा सकती है। यह सारी धनराशि मानवता के हित के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है। जन हितैषी सरकारों को चाहिए कि इन ज्योतिषियों का पूर्ण तौर पर खत्म कर दिया जाए।

तर्कशील शब्द के विभिन्न रूप

-गुरमीत अंबाला

तर्कशील शब्द अंग्रेजी के रेशनलिस्ट का पँजाबी रूपांतरण है। जब कुछ साथियों के हाथ डाक्टर कव्वुर की Begone god men लगी और इसका पँजाबी अनुवाद हुआ तो रेशनलिस्ट का अर्थ अनुवादक साथियों ने तलाशा, पंजाबी में इसके समतुल्य तर्कशील शब्द ही लगा इस लिए इसे प्रयोग किया गया, लेकिन यह रेशनलिस्ट के व्यापक अर्थ नहीं कर पाता, कुछ लोगो को तर्कशील शब्द से आभास होता है केवल हर बात में तर्क करने वाला। लेकिन पंजाब में एक लोकप्रिय शब्द बन जाने के कारण इसे अब छोड़ना मुशिकल है। इसी प्रकार हिंदी में भी तर्कशील शब्द है इसे हिंदी अनुवाद में हरियाणा में भी प्रयोग किया गया जबकि रेशनलिस्ट के लिए हिंदी में विवेकशील, बुद्धवादी शब्द भी हैं यानि अर्थ बनता है कि बुद्धि से काम लेना, जबकि पंजाबी में तर्क से काम लेना बनता है। अन्य भाषाओं जहां रेशनलिस्ट शब्द आया जैसे केरल में इस शब्द को मलयालम में युक्तिवादी कहा गया। वहां एक बहुत बड़ी रेशनलिस्ट संस्था है जिसका मलयालम नाम 'केरल युक्तिवादी संगम' है जो हमारी तर्कशील पत्रिका की तरह ही मलयालम पत्रिका निकालती है जिसका नाम है--युक्तिरेखा-। इसी प्रकार तेलुगु में जब ये शब्द आया तो इसे तेलुगु में अनुवाद किया गया तो शब्द बना--हेतुवादी-। अब बंगाल बिहार में रेशनलिस्ट शब्द बुद्धिवादी नाम से प्रयोग होता है। नास्तिक शब्द की अलग व्याख्या है। यह शब्द वेदों के अनुसार उस व्यक्ति के लिए ही प्रयोग होता था जो वेदों, शस्त्रों में विश्वास नही करते। जैन व बौद्ध धर्म वेदों को नहीं मानते थे। इसी लिए उनके दर्शन को नास्तिक दर्शन भी कहा गया। बाद में हिंदी में इसे ईश्वर व किसी भी धर्म को न मानने वाला के रूप में प्रयोग किया गया। अंग्रेजी के आने के बाद आए एथिस्ट शब्द को नास्तिक शब्द के रूप में अनुवाद किया गया। इस प्रकार समय पाकर नास्तिक या एथिस्ट शब्द भले ही एक है लेकिन एथिस्ट का अर्थ वैज्ञानिक चिंतन को मानने वाला है जबकि नास्तिक का अर्थ ईश्वर को न मानने वाला बनता है।

करेण्ट बुक डिपो के संस्थापक

कामरेड महादेव खेतान की अंतिम इच्छा

मैं, महादेव खेतान, उम्र लगभग 76 वर्ष, पुत्र स्व० मदनलाल खेतान, अपने पूरे सामान्य होशो-हवास में अपनी अंतिम इच्छा निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त कर रहा हूं।

मैं अपने किशोरावस्था (सन् 1938-39) में ही मार्क्सवादी दर्शन (द्वंद्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद) के मार्गदर्शन में उस समय देश, नगर तथा शिक्षण संस्थाओं में चल रहे ब्रिटिश गुलामी के विरोध में जुल्म और शोषण के विरोध में स्वाधीनता संग्राम, क्रांतिकारी संघर्ष, मजदूर और किसी न किसी संघर्षो से जुड़ गया था। उसी पृष्ठ भूमि में मुझे अध्ययन और आंदोलन को एक साथ समायोजित करते हुए सृष्टि और मानव तथा समाज की प्रक्रिया को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन करने, उसको देखने और समझने का अवसर मिला।

मेरी यह पुष्ट धारणा बनी कि आज प्रकृति के वैज्ञानिक सिद्धांतों और मानव विकास की प्रक्रिया में उसको समझने के प्रयास तथा उससे या उनसे संघर्ष करते हुए उनको अपने लिए अधिक से अधिक उपयोगी बनाने में हजारों बरस के मानव प्रयास ही सृष्टि, मानव और समाज का असली और सही इतिहास है। यहां मैं मानव के ऊपर किसी दिव्य शक्ति या ईश्वर को नहीं मानता हूं। यह प्रक्रिया आगे भी तेजी से चलती जाएगी, चलती जाएगी।

अस्तु, मेरी मृत्यु पर ईश्वर और उसके दर्शन पर आधारित कोई भी, किसी भी प्रकार का, किसी भी रूप में, धार्मिक अनुष्ठान, कर्मकांड, पाठ, यज्ञ ब्राह्मण भोजन अथवा दान आदि, पिंडदान तथा पुत्र का केशदान (सर मुड़ाना या बाल दोनों) आदि-आदि कुछ नहीं होगा तथा दुनिया के सबसे बड़े झूठ (रामनाम) को मेरा शव दिखा कर (सत्य) घोषित और प्रचारित करने का भी कोई प्रयास नहीं होगा। मेरे शव को सर्वहारा के लाल झण्डे में लपेटकर दुनिया के मजदूरों एक हो, कम्युनिस्ट आंदोलन तथा पार्टी विजयी हो, आदि आदि नारों के साथ मेरे जीवन भर के परिश्रम से विकसित करेन्ट बुक डिपो से उठाकर, बड़े चौराहे स्थित मेरे भाई तथा साथी कामरेड राम आसरे की मूर्ति के नीचे ले जाकर मेरे शव को अपने साथी को अंतिम लाल सलाम करने का अवसर प्रदान करें तथा वहीं पर लखनऊ स्थित संजय गांधी पो०ग्रे० इन्स्टीट्यूट ऑफ मै० सा० के अधिकारियों को बुलाकर मेरा शव उनको दे दें ताकि न सिर्फ जरूरतमंद लोगों को मेरे शरीर के अंगों से पुनर्जीवन मिल सके बल्कि आने वाली डाक्टरों की पीढ़ी के अध्ययन को, और अधिक से अधिक उपयोगी बनाने में मेरे शरीर का योगदान हो सके।

इसके बाद समय हो और मित्रों की राय पड़े तो वहीं रामआसरे पार्क में सभा करके अगर मेरे जीवन के प्रेरणादायक हिस्सों को संस्मरण से आगे आने वाली संघर्षशील पीढ़ी को कोई प्रेरणा मिल सके तो उसके ज़िक्र कर लें वरना मित्रों की राय से सबके लिए जो सुविधाजनक समय हो उस समय यहीं राम आसरे पार्क में लोगों को बुलाकर संघर्षशील नयी पीढ़ी को प्रेरणादायक संस्मरण दे कर खत्म कर दें। यही और बस मेरी मृत्यु का आखिरी अनुष्ठान होगा। इसके बाद या भविष्य में भी कभी कोई दसवां, तेरहीं, कोई श्राद्ध, कोई पिंडदान आदि कुछ नहीं होगा, और मैं यह खास तौर पर कहना चाहता हूं कि किसी भी हालत में, किसी भी जगह, और किसी भी बहाने से कोई मेरा मृत्युभोजन (तेरहीं) नहीं होने देगा। अपने परिवार के बुजुर्गों से अनुरोध है कि मेरी मृत्यु पर अपना जीवन दर्शन या आस्थाओं, अंधविश्वासों और अपने जीवन मूल्यों को थोपने की कोशिश न करें, मुझ पर बड़ी कृपा होगी। घर पर लौट कर सामान्य जीवन की तरह सामान्य भेजन बने। 'चूल्हा न जलने' की परम्परा के नाम पर न मेरी ससुराल, न मेरे पुत्र की ससुराल से और न ही किसी अन्य नातेदार, रिश्तेदार की ससुराल से खाना आयेगा।

उसके दूसरे दिन से बिल्कुल सामान्य जीवन और सामान्य दिनचर्या जैसे कभी कुछ हुआ ही न हो घर व दुकान की दिनचर्या बिना किसी अनुष्ठान के शुरू हो जाये तथा मेरी मृत्यु पर मेरी ये अंतिम इच्छा काफी बड़े पैमाने पर छपवा कर न सिर्फ नगर में वृहत तरीके से मय अखबारों के वे सभी तरह के राजनैतिक व सामाजिक कार्यकर्ताओं को बंटवा दें तथा करेण्ट बुक डिपो व मार्क्सवादी आंदोलन व साहित्य से संबंधित सभी लोगों को डाक से भेजें ताकि इससे प्रेरणा लेकर अगर एक प्रतिशत लोगों ने भी इसका अनुसरण करने की कोशिश की तो मैं अपने जीवन को सफल मानूंगा।

मेरे जीवन में होल टाइमरी के बारे सन् 1915 से अभी तक जो कुछ भी मैंने बनाया है वह करेन्ट बुक डिपो है जो किसी भी तरह से कोई भी व्यापारिक संस्थान नहीं है, बल्कि किसी उद्देश्य विशेष मिशन के मातहत एक संस्था के रूप में विकसित करने का प्रयत्न किया था। मेरे पास न एक इंच जमीन है और न कोई बैंक बैलेंस है। मेरे जीवन का एक ही मिशन रहा है कि देश और विदेशों में तमाम शोषित उत्पीड़ित जनसमुदाय जो न सिर्फ अपने जीवन के स्तर को सम्मानजनक बनाने के लिए बल्कि उत्पीड़न और शोषण की शक्तियों के विरोध में उनको नष्ट करने के लिए जीवन मरण के संर्घष करते रहे हैं और कर रहे हैं, करते रहेंगे। उनको हर तरह से तन, मन और धन से जो कुछ भी मेरे पास है उससे मदद करूं, उनको प्रेरणा दूं और अपनी यथा-शक्ति दिशा दूं। इसी उद्देश्य से मैंने करेन्ट बुक डिपो खोला। इसी उद्देश्य के लिए इसे विकसित किया। कहां तक मैं सफल हुआ इसका आंकलन तो इस संघर्षो की परिणति ही बतायेगी। जितना जो कुछ मुझे इस समय आभास है उससे मुझे कोई असंतोष नहीं है।

मेरी मृत्यु के बाद मेरा ये जो कुछ भी है उसके सारे परिसम्मपति (assets) और (Liability) उत्तरदायित्व के साथ इस सबका एकमात्र उत्तराधिकारी मेरा पुत्र अनिल खेतान होगा। मैंने कोशिश की है कि मेरी मृत्यु तक इस दुकान में ऐसी कोई Liability नहीं रहे जिसके लिए मेरे पुत्र अनिल को कोई दिक्कत उठानी पड़े। मेरी यह इच्छा है कि मेरी मृत्यु के बाद मेरा पुत्र अनिल खेतान भी मेरे जीवन के इस मिशन को, जिसके लिये मैंने करेन्ट बुक डिपो खोली व विकसित की है-उसको अपना सब कुछ निछावर करके आगे बढ़ाता रहेगा, उसी तरह से विकसित करता रहेगा और प्रयत्न करेगा कि उसके भी आगे की पीढ़ियां यदि इस संस्थान से जुड़ती हैं तो वे भी इस मिशन को अपनी यथाशक्ति आगे बढ़ाते हुए विकसित करेंगी।

मैं यह आशा करता हूं कि मेरी ही तरह मेरा पुत्र भी किन्हीं भी विपरीत राजनैतिक परिस्थितियों में डिगेगा नहीं और बड़े साहस व आत्मविश्वास के साथ झेल जायेगा और ये नौबत नहीं आने देगा कि पीढ़ियों के लिए प्रेरणा और दिशा स्रोत करेन्ट बुक डिपो बन्द हो जाये।

मैं यह चाहूंगा कि जैसे मैंने अपने पुत्र के जीवन को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विकसित करने का प्रयत्न किया और किसी भी धर्म पर अंधविश्वास, कर्मकांड से दूर रखा उसी प्रकार मेरा पुत्र अपने जीवन को बल्कि आने वाली पीढ़ियों को ईश्वर व धर्म व आधारित दर्शन, अंधविश्वास और कर्मकांडों से दूर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विकसित करेगा तथा जीवन को न्यूनतम् जरूरतों में बांधेगा ताकि अपनी फिजूल की बढ़ी हुई जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने मूल्यों से समझौता न करना पड़े क्योंकि वही फिसलन की शुरूआत है जिसका कोई अन्त नहीं है। दुनिया में रोटी सभी खाते हैं, सोना कोई नहीं खाता है, लेकिन सम्मानजनक रोटी की कमी नहीं है और सोने का कोई सीमा नहीं है और दुनिया के बड़े से बड़े धर्माचार्य विद्वान और बड़े से बड़े धनवान कोई विद्वान नहीं है, उसके लिए कोई बुद्धि की आवश्यकता नहीं है, और मानव की जरूरतों को पूरा करने में हज़ारों वर्षों से असमर्थ रहे हैं और आगे भी मानवता को देने के लिए इनके पास कुछ नहीं है।

दुनिया में सारे तनावों की जड़ केवल दो हैं -एक धन और दूसरा धर्म । यदि आपने को इससे मुक्त कर लें तो न सिर्फ अपना जीवन बल्कि अपने

(शेष पृष्ठ 48 पर

मेरा देश....

–मनमीत

मेरे पास युद्ध विरोधी लियो टालस्टाय की
युद्ध और शांति ही नहीं
युद्ध समर्थक हिटलर
का मेरा संघर्ष भी है
मेरे पास अंहिसावादी गांधी ही नहीं
क्रांतिकारी भगत सिंह का बम का दर्शन भी है
और चे ग्वेरा की मोटरसाइकिल डायरी भी

मेरी लाइब्रेरी में अयोध्या सिंह का फासीवाद
भी है, जो हांफ रहा है
उसके मुंह से निकल रही है
अफसोस और निराशा की चीख

मेरी लाइब्रेरी में धार्मिक ग्रंधों के
बगल में, गपशप करता है खामेर रूज
तमाम विवादों के बावजूद
दोनों पूछते हैं एक दूसरे का हाल

क्या क्या नहीं है मेरे पास
अफ्रीका में गुलामी की कोठरी में बैठा
औपनिवेशिक मानसिकता से
मुक्ति का ताकीद करता
न्गुगी वा थ्योंगो

मेरी लाइब्रेरी से निकल कर
मेरे सामने
हर दिन परेड करता है
वो पत्थरों के देश का
अलेक्स ला गुमा

मेरी लाइब्रेरी के एक कोने में
सुबक रही है मैक्सिम गोर्की की मां
जिसका पावेल अब नहीं सुनता उसकी
आखिर किसके लिखे पत्रों को वो
मजदूर यूनियन तक पहुंचाये

मेरी लाइब्रेरी में गुस्से में
फुफकार रहे है नेहरू और अंबेडकर
क्या 1947 के उस दो राहे में
उन्होंने समाजवाद का गलत रास्ता चुना

आइंस्टीन, डारविन और न्यूटन
अब लाइब्रेरी के शापित किनारों में
बैठकर नहीं करते आपस में बातें
उन्होंने साध ली है एक लंबी चुप्पी

फैज, मंटो, प्रेमचंद, पाश और दुष्यंत
कर रहे हैं साजिश
जैसे किसी इंतजार में हों
इस घुटन भरे वक्त से निकलने को

और हां...
मेरी लाइब्रेरी में सबसे ऊपर है
मेरे देश का संविधान है
जो मुझे ताकत देता है,
उस सबकी जो मैं लिखता हूं
पढ़ता हूं, सुनता हूं, बोलता हूं और
करता हूं।

मुझे परवाह नहीं आपकी देशभक्ति के
खोखले और फर्जी प्रमाणपत्रों की
मुझे मेरी नजरों में
देश भूगोल पर लेटा
एक युद्ध उन्मादी और नफरती राष्ट्र नहीं दिखता है
मुझे मेरा देश समाज का वो चित्रकार लगता है
जिसके हजारों रंगों से बनता है एक महादेश....
जिसकी चित्रकारी में समाजवाद की
सुन्हरी तस्वीर दिखती है

हां सुनो...
बस, मुझसे मेरी लाइब्रेरी मत छीनना
उसमें ही रखें है हजारों चश्में
कई विचारधाराओं के
मतों के, सिद्धांतों और अनुभवों के
जिससे में देश के हर कोनों को
देख पाता हूं, समझ पाता हूं

और फिर भी अगर तुम्हारी 1914
को लिखी गई परिभाषाओं के आधार पर
मैं देशद्रोही हूं, तो तुम्हारा देश तुम्हे मुबारक
मैं अपने में खुश हूँ...

'सच क्या है ?

-आर.पी.गांधी

हमारे दैनिक जीवन की भाषा में कुछ ऐसे वाक्य हैं जिनका प्रायः प्रयोग होता रहता है। उदाहरण के लिए होनी अटल है वह होकर रहती है। भाग्य बलवान है जिसके आगे किसी की नही चलती। हम लाख चाहें जब तक ईश्वर की सहमति नहीं होती कुछ नही हो सकता। गुरू नानक देव जी भी कहते है 'करे करावै आपे आप मानुस के नही कुछ भी हाथ।' हमारा सनातन चिन्तन भी हमें ये बताता है कि हम सब कठपुतलियां है जिसकी डोरियां ऊपर वाले के हाथ में है और जैसा वह चाहे हमें नचाता है और हम उसके सामने विवश है। अगर हम ऊपर कही गई बातों को सच माने लें तो दुनिया की हर अच्छाई व बुराई ऊपर वाले के साथ जुड़ जाती है। अगर किसी के भाग्य में कत्ल होकर मरना था तब कातिल दोषी नही बनता। भाग्य लिखने वाला ही दोषी कहलाएगा। हर रोज कितने ही लोग आपसी झगड़ों, दुर्घटनाओं व बिमारियों में मर जाते है। तब प्रश्न उठता है कि जिसको लोग ईश्वर मानते है क्या वह इन सब बातों के लिए जिम्मेदार है देश के हर ाहर के न्यायालय में प्रतिदिन कितने ही मुकद्मे लड़े जाते हैं। अगर सब कुछ करने वाला वह ऊपर वाला है तब इन अदालतों, जजों और वकीलों की क्या आवश्यकता है। दुनिया में हमारा देश जनसख्या की दृष्टि से दूसरे नम्बर पर है परन्तु ओलम्पिक खेलों में हम छोटे-छोटे देशों से भी फिसड्डी साबित होते है। क्या सरकारी नीतियां या हमारे खिलाड़ियों की कमजोरी कहीं भी जिम्मेवार नहीं है? जीवन के हर मोड़ पर हम पुरातन विचारों से इतने ओत-प्रोत हैं कि हम पुरूष पुरातन विचारों को श्रद्धा के रूप में देखते है और सच जानने का प्रयास नहीं करते। लाखों वर्ष हमने चेचक को भी शीतला मां बना के पूजा है। जबकि यह रोग कुरूपता अन्धापन और मौत का कारण बनता था। परन्तु जब विज्ञापन ने उन्नति की तो पाया कि एक विशेष प्रकार का वायरस इस बिमारी का कारण है। वायरस को नष्ट करने का तरीका ढूंढा गया और इस कष्टदायक बिमारी से मुक्ति मिली। आज गर्भवती मां को ही भिन्न-भिन्न टीके लगा दिए जाते हैं जिससे होने वाले बच्चे को पहले ही कुछ रोगों से सुरक्षा मिल जाती है। अब भी खसरा छोटे-छोटे लाल दानों के रूप में शरीर पर दिखाई देता है। उसे भी हम मां का प्रवेश मान कर पूजा करते है। जबकि कोई भी रोग देवी-शक्ति न होकर रोग होता है। हमें उसके समाधान के लिए वैज्ञानिक रास्ता अपनाना चाहिए न कि पूजा। एक समय था जब प्लेग जैसी बीमारी को भी हम मृत्यु देवी का नाम देकर पूजा करते रहे हैं। पोलियो का रोग जो एक वायरस द्वारा पैदा होता है। इससे बचाव के लिए अब बचपन में ही बच्चे को कुछ बूंदों का सेवन करा दिया जाता है। इससे बच्चा इस रोग से सुरक्षित हो जाता है। जबकि अतीत में अनगिनत लोग अपंग होकर अधूरा जीवन जीने को मजबूर होते रहे हैं। श्रद्धा हमारे जीवन के किसी भी हिस्से में काम नही आती। जबकि विकास की जननी 'क्यों' है। अवैज्ञानिक चिन्तन हमें रूढ़िवादी सोच की ओर धकेलता है जबकि हमारा यह दायित्व बनता है कि हर होने वाली घटना को जानने का प्रयास करें जिससे हमें समाधान मिल सके। धरती का मानव बुद्धिजीवी होने के उपरान्त भी प्राकृतिक घटनाओं के पीछे किसी दैवी-शक्ति का अनुमान लगाकर पूजा, श्रद्धा, और भक्ति द्वारा उसका समाधान ढूढता है। सूर्य पूजा, पेड़-पूजा आदि ज्यादा पुरानी बातें नही है। इन्हीं की पूजा से वह अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढता रहा। मनुष्य के हाथों निर्मित मूर्तिया जिनमे कोई शक्ति नही होती। नही वे हमें कोई लाभ या हानि पहुंचा सकती है। आए दिन ऐसी पूजा के चक्र में कितने ही लोग भगदड़ अथवा दुर्घटना का शिकार हो जाते हैं।

मूलशंकर (दयानन्द) जब 14 वर्ष का था तो इसने शिवरात्रि का व्रत रखा और मन्दिर में जागता रहा। आधी रात के करीब उसने देखा एक

चूहा शिव की मूर्ति पर चढ़ गया। उसने मूर्ति पर पेशाब कर दिया और मूर्ति पर चढ़ाया गया प्रसाद भी खाने लगा। मूलशंकर सोचने लगा कि शिव जो शिव चूहे से अपनी रक्षा न कर सका वह हमारी क्या रक्षा करेगा? तब उसने पुजारी को जगाया और उससे यहीं प्रश्न पूछा कि जो शिव चूहे से अपनी रक्षा नही कर सकता वह हमारी क्या रक्षा करेगा? पुजारी का उतर था अपने पिता से पूछो। जिस पर मूल शंकर ने जवाब दिया 'यहां के पुजारी तुम हो मेरे पिता नही'। जिस पर मूलशंकर ने पुजारी पर दवाब बनाया जिस पर पुजारी ने उतर दिया कि यह केवल मूर्ति है यह सच्चा शिव नही है। तब मूलशंकर ने पुजारी को कहा कि मै तो सच्चे शिव की तलाश में हूं। यहां क्या कर रहा हूं? इतना कह कर वह वापिस अपने घर आ गया और विचलित रहने लगा। घर वालों ने उसे उलझन में देख उसकी शादी करनी चाही परन्तु मूलशंकर घर से भाग गया।इधर-उधर भटकने के बाद वह मथुरा में स्वामी विरजानन्द के पास पहुंचा। इसने जब विरजानन्द का दरवाजा खटखटाया तो स्वामी जी ने पुछा कौन है? जिस पर मूलांकर का उतर था 'यही जानने तो मै आपके पास आया हूं'। इस पर विरजानन्द ने पूछा 'कुछ पढ़े-लिखे हो? मूलशंकर का उतर था 'मेरे पास कुछ किवंदतिया है। जिस पर स्वामी जी ने कहा 'अगर कुछ नया सीखना है तो इनको यमुना में फैंक आओ। अब वह स्वामी दयानन्द बन गया। स्वामी दयानन्द ने जीवन पर मूर्ति पूजा के विरोध में प्रचार किया और पुरातन-पंथियों ने इसे जहर देकर कई बार मारना चाहा मगर वह जहर को उल्टी करके निकाल देता। अन्त में जोधपुर शहर में ही ये मृत्यु को प्राप्त हुए। स्वामी दयानन्द ने सामाजिक सुधार के अनेक कार्य किए। मुख्य रूप से नारी शिक्षा, विधवा विवाह, सती प्रथा का विरोध, बाल-विवाह का विरोध और अछूत उद्धार आदि। स्वतन्त्रता-प्राप्ति में भी आर्य समाज का विर्शेष योगदान रहा।

आज भी हमारे गांवों-शहरों में खेड़ा की पूजा की जाती है जिसमें गुलगुले और लड्डू आदि प्रसाद के रूप में बांट बांटे जाते हैं। जबकि खेड़ा हमें न लाभ पहुंचा सकता है और न हानि। यह हजारों साल पुराना अन्ध-विश्वास है जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता रहता है। जब तक हम वैज्ञानिक सोच नही अपनाते इन पुरानी परम्पराओं से बाहर नहीं आ सकते। दुख तो तब होता है जब हम देखते है कि पढ़े लिखे लोग भी इन बेकार की बातों में ग्रस्त है। सच जानने के लिए तीन बातो की आवश्यकता पड़ती है। तर्क, प्रमाण और परख। जो बात इन तीनों बातों पर खरी उतरती है उसे सच माना जा सकता है। दीर्घ काल से मनुष्य सच की खोज में भटक रहा है। जब जब किसी वैज्ञानिक ने जनता के सामने सच लाने का प्रयास किया है तब तब उसको इसकी कीमत चुकानी पड़ी है। विरोध के अतिरिक्त उसको अनेक परेशानियां झेलनी पड़ीं। कॉपरनिक्स ने जब सच बताया कि पृथ्वी गोल है तो उन्हे जिन्दा जला दिया गया। कॉपरनिक्स पोलैंड़ के निवासी थे। उसकी मृत्यु के 40 वर्ष बाद गैलीलियो जो इटली के निवासी थे ने यह बात कही कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है तो उस समय के शासन ने उसको फांसी की सजा सुना दी। वह जेल की अधेंरी कोठरी में साढ़े 6 वर्ष तक कैद रहा और अन्त में जेल मे ही मर गया। ऐसे ही ब्रूनो ने कॉपरनिक्स के विचारों पर पुस्तक लिखी तो उसे कई तरह के दण्ड़ दिए गए। अन्त में सलीब पर चढ़ा कर इसे जिन्दा जला दिया गया। ऐसी कितनी ही घटनाए है कि जब जब किसी ने सच को उजागर किया तो उसे इस सच को उजागर करने की कीमत चुकानी पड़ी और कई मामलों में तो जीवन से हाथ धोना पड़ा। आज भी धार्मिक कट्टर लोग अन्ध-विश्वास की आलोचना सुनना पसन्द नही करते। अभी हाल में सच के अनुयायी डॉ० नरेन्द्र दाभोलकर जो लोगों में सच का प्रचार कर रहे थे और अंध-विश्वास का विरोध करते थे उनको दो सिरफिरे नवयुवकों की गोली का शिकार होना पड़ा।

पुरातन समय में रड़िढ बृहस्पति जिसके दर्शन का नाम चार्वाक है वह एक भौतिकवादी दार्शनिक था। इसको जिक्र दयानन्द की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में भी मिलता है। इसके शिष्य लोकायत कहलाते थे जिनका साहित्य जला दिया गया और इनको मार दिया जाता था। कारण चावांक दर्शन ईश्वर के असितत्व के विरूद्ध है।

जिसकी बड़ी वजह उस समय की राजशाही थी। जिसकेद्वारा यह प्रचार किया जाता था कि राजा ईश्वर के दूत है जिनको जनता पर राज करने के लिए ईश्वर द्वारा भेजा गया। इससे भाग्यवाद का जन्म होता है जो हर प्रकार की क्रान्ति के लिए रूकावट बनता है। आज भी ईश्वर के नाम पर कई प्रकार की लूट-खसूट की जाती है। यह कहकर सन्तुष्ट किया जाता है कि यह तुम्हारे पिछले कर्मो का फल है जो तुम भुगत रहे हो। जबकि विज्ञान ने आज यह सिद्ध कर दिया है कि आवागमन की कल्पना एक झूठ है। न हमारा पहले कोई जन्म था,न भविष्य में होगा। जो जीवन हम वर्तमान में जी रहे हैं वही सच्चाई है। सभी धर्म श्रद्धा और अकीदत के नाम पर आदमी को अन्ध-विश्वासी बनाते है और क्यो? कैसे? पर पाबन्दी लगा दी जाती है। अध्यात्मवादी सोच में तर्क करने की अनुमति नही है। वे नही चाहते कि पुरातन ग्रन्थों पर किसी प्रकार का तर्क हो तथा जनता रूढिवादी सोच की दास बनी रहे। शहीद-ए-आजम भगत सिंह ने भी अपनी पुस्तक 'नास्तिक' में इस बात को माना है कि मेरा पहले कोई जन्म नहीं था और न ही मृत्यु के बाद कोई जन्म होगा। भगत सिंह अल्पायु में ही एक अच्छे दार्शनिक थे। पिछले दिनों स्टीफन हाकिन्स जो कि शारीरिक रूप में अशक्त थे और दुनिया के माने हुए खगोलविद थे उन्होने अपनी पुस्तक में वर्णन किया है कि इस ब्रहाण्ड़ का कोई रचनाकार नही है। यह सब कुछ विज्ञान में अटल सिद्धान्तों का परिणाम है। यही एक खुली सच्चाई भी है। ब्रहाण्ड़ में हर चीज पदार्थ द्धारा निर्मित है। पदार्थ जिसकी न उत्पति होती है और न ही विनाश होता है जो निरन्तर बना रहता है। जहां तक हमारी दृष्टि नही पहुंचती और नही दूरदर्शी यन्त्र से देखा जा सकता है। वहां भी सिवाय पदार्थ के और कुछ नहीं है।

आध्यात्मवाद अनुमान कल्पना और अन्ध-विश्वास की उपज है। इसलिए आध्यात्मवादी श्रद्धा की बात करते है तर्क की नहीं। परन्तु भौतिक वादी चिन्तन एक वैज्ञानिक सोच है जो 'क्यों' को खुली छुट देता है और न ही उसे 'परख' से इनकार है जिससे यह सिद्ध हो जाता है कि पदार्थ ही एक सच है जो यह मानता है कि सृष्टि स्वंय से है। इसका कोई रचनाकार नहीं। अगर हमने फालतू किस्म के आड़म्बरों से बचना है तो हमें पदार्थवादी सोच को अपनाना होगा। भाग्यवाद जो हमें निष्क्रिय करता है उससे बचना अति आवश्यक है। फिल्म जागृति का एक गीत 'मुट्ठी में है तकदीर' के भावों को आचरण में लाना होगा। अमीरी गरीबी ईश्वरीय देन नहीं है बल्कि यह अर्थ-व्यवस्था और मेहनत का परिणाम है।

पृष्ठ 44 का शेष...(कामरेड महादेव....)

आने वाली पीढ़ियों का पूरा जीवन तनाव रहित सुखी बितायेंगे। इन बातों का अगर थोड़ा भी ख्याल रखा और जीवन को इन पर ढालने की थोड़ी भी कोशिश की तो हमेशा सुखी रहोगे।

इसकी एक बुनियादी गुर की बात और ध्यान रखें कि आप जो जीवन मूल्य, जीवन पद्धति और दर्शन की प्रतिपादित करें और ये आशा करें कि आपके आने वाली पीढ़ी भी उस पर चले तो यह सबसे ज्यादा आवश्यक है कि आपका खुद का आचरण और जीवन आपके द्वारा प्रतिपादित मूल्यों पर आधारित हो, आपका खुद का जीवन एक उदाहरण हो।

अन्त में कुछ शब्द करेन्ट बुक डिपो के बारे में कहना चाहूंगा। जैसा कि मैं पहले बता चुका हूं कि यह एक मिशन विशेष के लिए संस्थापित व संचालित संस्था है जिसमें दिवंगत राम आसरे, मेरे सहयोगी आनन्द माधव त्रिवेदी, मेरी पत्नी रूप कुमारी खेतान, मेरे पुत्र अनिल खेतान, अरविन्द कुमार और सैंकड़ों क्रांतिकारी कार्यकर्ताओं व प्रिय पाठकों का योगदान रहा है। मैं इन सबका ऋणि हूं और आशा करता हूं कि ये सब भविष्य में भी वैसा ही करते रहेंगे। उद्देश्य यह है कि इसके द्वारा प्रकाशित व वितरित साहित्य देश के हजारों पाठकों को मार्क्सवादी दर्शन पर आधारित व प्रेरित श्रेष्ठ सामग्री उपलब्ध होती रहे। इसके संचालन से संबंधित विस्तृत बातें या तकनीकी मुद्दों का निर्णय उपरोक्त व्यक्ति आपस में विचार-विमर्श के जरिए तय करते रहें।

-महादेव खेतान

जिंदादिली की मिसाल थे साथी सुखदेव

हमारे प्रिय तर्कशील साथी सुखदेव अब हमारे बीच नहीं रहे। सभी तर्कशील साथी यह सुनकर तब सदमे में डूब गये जब उन्हें अचानक खबर मिली कि सुखदेव का 16 अक्तूबर, 2019 को असामयिक निधन हो गया है। उनकी आयु महज 42 वर्ष थी। पता चला कि किडनी खराब होने की वजह से उनकी तबीयत अचानक बिगड़ गई और रात 9 बजे उन्होंने अंतिम सांस ली।

साथी सुखदेव गांव खरक पाण्डव, जिला कैथल में एक साधारण किसान परिवार से सबंध रखते थे, एक ऐसा परिवार जो पहले अंधविश्वास जैसी मान्यताओं से गहरा विश्वास रखता था। उनके विचारों में परिवर्तन तब आया जब उनके एक भाई की मृत्यु हो गई। सुखदेव के तब अपनी कोई संतान नहीं थी। शादी के काफी दिनों तक जब सुखदेव की पत्नी के कोई संतान न हुई तो वह बीमार रहने लगी। झाड़फूंक का ईलाज शुरू हुआ। कहा गया कि उसे अपने दिवंगत देवर का भूत सता रहा है। लेकिन जब कोई फायदा न हुआ तो उनके गांव कलायत में एक तर्कशील साथी ने उन्हें हरियाणा तर्कशील संस्था के तत्कालीन प्रधान राजाराम हंडियाया से मिलवाया। जिनके परामर्श से सुखदेव ने अपनी पत्नी का वैज्ञानिक ढंग से डाक्टरी ईलाज करवाया। परिणामस्वरूप सुखदेव के घर पहले लड़की फिर एक लड़का हुआ। तर्कशील विचारों से वे इतने प्रभावाति हुए कि दूसरी संतान होने पर उन्होंने अपने गांव में एक तर्कशील मेले का आयोजन करवाया जिसमें सभी मुख्य तर्कशील साथी शामिल हुए। सुखदेव के विचारों में पूरी तरह से तबदीली आ गई। उन्होंने तर्कशील साहित्य पड़ा और उनके पूरे परिवार के सदस्य अब अपनी छोटी-छोटी समस्याओं के लिए जहां झाड़फूंक करवाया करते थे अब तर्कशील सोसायटी के संपर्क में आने के बाद अपनी समस्याओं का विज्ञान आधारित ईलाज कराते और सुखदेव सक्रिय रूप से तर्कशील कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लेने लगा।

सुखदेव चूंकि एक किसान परिवार से था, वैज्ञानिक विचारों का उस पर गहरा प्रभाव पड़ा था और अब वह अपनी खेती भी वैज्ञानिक रूप से करने लगा जिसके कारण वह अच्छी उपज निकालने लगा। अपने गांव में तर्कशील रूप में उसकी पहचान बन गई। उसकी कार पर भी तर्कशील जिंदाबाद लिखा रहता था।

सुखदेव हरियाणा तर्कशील सोसायटी के एक सक्रिय सदस्य रहे और हर गतिविधि में भाग लेते रहते और इसके कार्यक्रमों में बढ़चढ़ कर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते। सोसायटी की मीटिंगों व सेमिनारों में उनकी कमी हमेशा खलती रहेगी। तर्कशील सोसायटी में दिये गये योगदान को हमेशा याद रखा जायेगा। यही उनके तथा उनके परिवार के लिए सच्चा सम्मान होगा।

- राजाराम हंडियाया, तर्कशील सोसायटी के पूर्व प्रधान द्वारा भेजे आलेख पर आधारित।

वो कोई और चराग़ थे, जो हवाओं से बुझ गये
हमने तो जलने का हुनर भी, तूफानों से सीखा है
-अज्ञात

मौत खामोशी है,
चुप रहने से चुप लग जाएगी
ज़िंदगी आवाज़ है,
बातें करो बातें करो।
-अहमद मुश्ताक़

लेखकों/पाठकों के लिए :

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor @gmail.com अथवा वट्सएप नं. 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतःअव्यवसायिक/ अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

रागणी

धर्म की तिजारत

-रामेश्वर गुप्त

गऊ गंगा और गीता की, झूठी जफ्फी भरता।
नेता जी आज धर्म की, फिरे तिजारत करता।

भूखी फिरती गऊ माता, गलियां म्हं धक्कै खावैं,
दूध दे तो प्यारी लागै, फेर ठाकै लठ भगावैं,
माता आगै माणस पाछै, माता बेबस रोती पावैं,
नेता जी मुंह फेर लें, ना एक बार लखावैं,
देखूं सैंकड़ों गऊ अवारा, कहे बिना न सरता।

गीता सुण कै एक कान तै, दूसरे तै काढ़ देई,
सभी अमीर-गरीब बराबर, बात जड़ तै उखाड़ देई,
कर्म करे बिन फल चाहवैं, गीता भी पछाड़ देई,
गीता राह दिखाणा चाहवै, आंख काढ़ कै ताड़ देई,
अपणे गुण की बात करै, तू नहीं पाप तै डरता।

गंगा नहाए पाप कटै, झूठ के पाले बांध रह्या
दूर तलक गंगा मईया म्हं गंदे नाले बांध रह्या
लोग दिखावा माथा रगड़े, लाल नाले बांध रह्या,
नेता जी बस वोट वास्ते, मढ़ी-शिवाले बांध रह्या
गंगा गेल्या दगा करै फिर, तू कैसे पार उतरता।

ढौंग रचाणे तै अच्छा तो, बात सुणो के कह र्‌या
गीता का उपदेश पुगाओ, ज्ञान गुणों के कह र्‌या
धर्म सिखावै मिल कै रहणा, काम सुणो के कह र्‌या
'रामेश्वर' सब एक बराबर, राम सुणो के कह र्‌या
छोड़ दिखावा काम करो, भई बिना काम न चलता।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील :

हरियाणा के असंध में शीघ्र ही 'तर्कशील केंद्र' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने असंध जिला करनाल में एक भूखण्ड प्रदान किया है। अतः सभी साथियों से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें।

-राज्य कार्यकारिणी

चेतना परीक्षा सम्मान समारोह : 2019

जलियांवाला बाग की शहादत शताब्दी एवं शहीद उधम सिंह को समर्पित तृतीय विद्यार्थी चेतना परख परीक्षा में अग्रणी रहे होनहार विद्यार्थियों का सम्मान समारोह 6 अक्तूबर, 2019 को तर्कशील भवन बरनाला में सम्पन्न हुआ। समारोह में तर्कशील नेताओं, कार्यकताओं, विद्यार्थियों, अभिभावकों के साथ-साथ प्रसिद्ध नाटककार गुरशरण सिंह की विरासत को आगे बढ़ा रहे डा. अरीत (उप निदेशक, स्वास्थ्य विभाग. पंजाब) मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल हुए।

कार्यक्रम का प्रारम्भ मनजीत घनघस के एक एक तर्कशील गीत के साथ हुआ। मनमीत, हरमन, महकदीप एवं दिलबर हुसैन ने अपने-अपने गीतों से संगीत का रंग बिखेरा। बमाल स्कूल के विद्यार्थियों ने सामाजिक कुरीतियों पर चोट करता हुआ एक लघु नाटक प्रस्तुत किया।

चेतना परीक्षा में अग्रणी रहे माध्यमिक विभाग में से गुरिन्द्रसिंह एवं बजलीत कौर ने अपनी भावनाएं साझा कीं। सैकेण्ड्री विभाग में से पुष्पिन्द्र सिंह, अर्किष्ट मदान ने चेतना परीक्षा से प्राप्त रास्ते को प्रेरणादायक बताया।

चेतना परीक्षा के उद्देश्य एवं महत्व के बारे में बात करते हुए तर्कशील मैगजीन के संपादक बलबीर चंद लौंगोवाल ने कहा कि वैज्ञानिक चेतना के प्रसार के लिए विद्यार्थियों के पास साहित्य पहुंचा कर साथ लेकर चलने के लिए प्रयत्न करना एक महत्वपूर्ण कार्य है जिसके भविष्य में सुखद परिणाम देखने को मिलेंगे।

तर्कशील सोसायटी पंजाब के प्रांतीय सांगठिक अध्यक्ष राजिन्द्र भदौड़ ने चेतना परीक्षा की सफलता के लिए तर्कशील कार्यकर्ताओं, आगुओं एवं इकाइयों की ओर से जुटाए गये प्रयत्नों को वैज्ञानिक चिन्तन को प्रत्येक दर तक ले जाने का सराहनीय उद्यम बताया। परीक्षा में बैठे कुल 18,746 विद्यार्थी तर्कशील कार्यकर्ताओं के साझा उद्यम की वर्णनीय प्राप्ति है। उन्होंने बताया कि प्रांतीय स्तर तक 878 विद्यार्थियों को सम्मान पत्र, मैरिट सर्टिफिकेट, दर्जा सर्टिफिकेट, नकद राशि एवं पुस्तकों के सेट देकर सम्मानित किया गया है। जबकि परीक्षा में भाग लेने वाले प्रत्येक विद्यार्थी को प्रशंसा-पत्र दिया गया है। इस अवसर पर परीक्षा में सर्वाधिक विद्यार्थियों को शामिल करवाने वाली पांच इकाइयों-रोपड़, रामपुरा, पटियाला, भदौड़ एवं शाहकोट इकाइयों का राज्य कार्यकारिणी द्वारा सर्टिफिकेट प्रदान कर के सम्मान भी किया गया।

सम्मान समारोह में अपनी बात रखते हुए मुख्यातिथि डा. अरीत ने अपने संबोधन में कहा कि अंधविश्वासों एवं अज्ञानता की बेड़ियों को तर्क एवं ज्ञान रूपी प्रकाश के साथ ही काटा जा सकता है। इस महान कार्य के लिए तर्कशील चेतना ही समाज के रास्ते को प्रकाशमान बनायेगी। उन्होंने होनहार विद्यार्थियों को वैज्ञानिक चेतना के साथ अपने जीवन एवं समाज को सुखमयी बनाने के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। सोसायटी की राज्यकारिणी की तरफ से मुख्यातिथि जी को सम्मान-पत्र भेंट किया गया।

समारोह में सोसायटी के प्रांतीय नेतागण हेमराज स्टेनो, अजीत प्रदेसी, हरचन्द भिंडर, एडवोकेट हरिन्द्र लाली, अजायब जलालाना, तरलोचन समराला एवं रामस्वर्ण लखेवाली के अतिरिक्त जोन प्रधान राम कुमार, राम सिंह निर्माण, सुखदेव धूरी, कुलजीत डंगरखेड़ा, राजपाल सिंह, देविन्द्र सरथली, ज्ञान सिंह, जगदेव रामपुरा, बिट्टू रूपेवाली, प्रिं० मनजीत सिंह, सुरेंद्र पटियाला, मा. परमवेद, दलबीर कटाणी, बलदेव लघूवाला इत्यादि आगू भी उपस्थित रहे।

समारोह का समापन बाल रंगमंच कुलेवाल के बाल कलाकारों के द्वारा प्रस्तुत की गई 'घोड़ी शहीद भगत सिंह' के साथ किया गया। समारोह के दौरान मंच संचालन की जिम्मेवारी मा.तरलोचन सिंह ने बाखूबी निभाई। विद्यार्थियों के सपनों को नई उड़ान देता हुआ एवं नई प्रेरणा देता हुआ यह सम्मान समारोह उनके लिए एक नया उत्साह प्रदान कर गया।

चेतना परीक्षा सम्मान समारोह : 2019

तर्कशील चेतना परख परीक्षा के सेकेंडरी वर्ग के विद्यार्थियों के साथ
राज्य कार्यकारिणी के सदस्यगण

तर्कशील चेतना परख परीक्षा के मिडल वर्ग के विद्यार्थियों
के राज्य स्तरीय सम्मान समारोह की एक झलक

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55

Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

प्रो. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।